R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2021-23

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 21 । अंक : 04
16 से 30 नवम्बर 2022
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

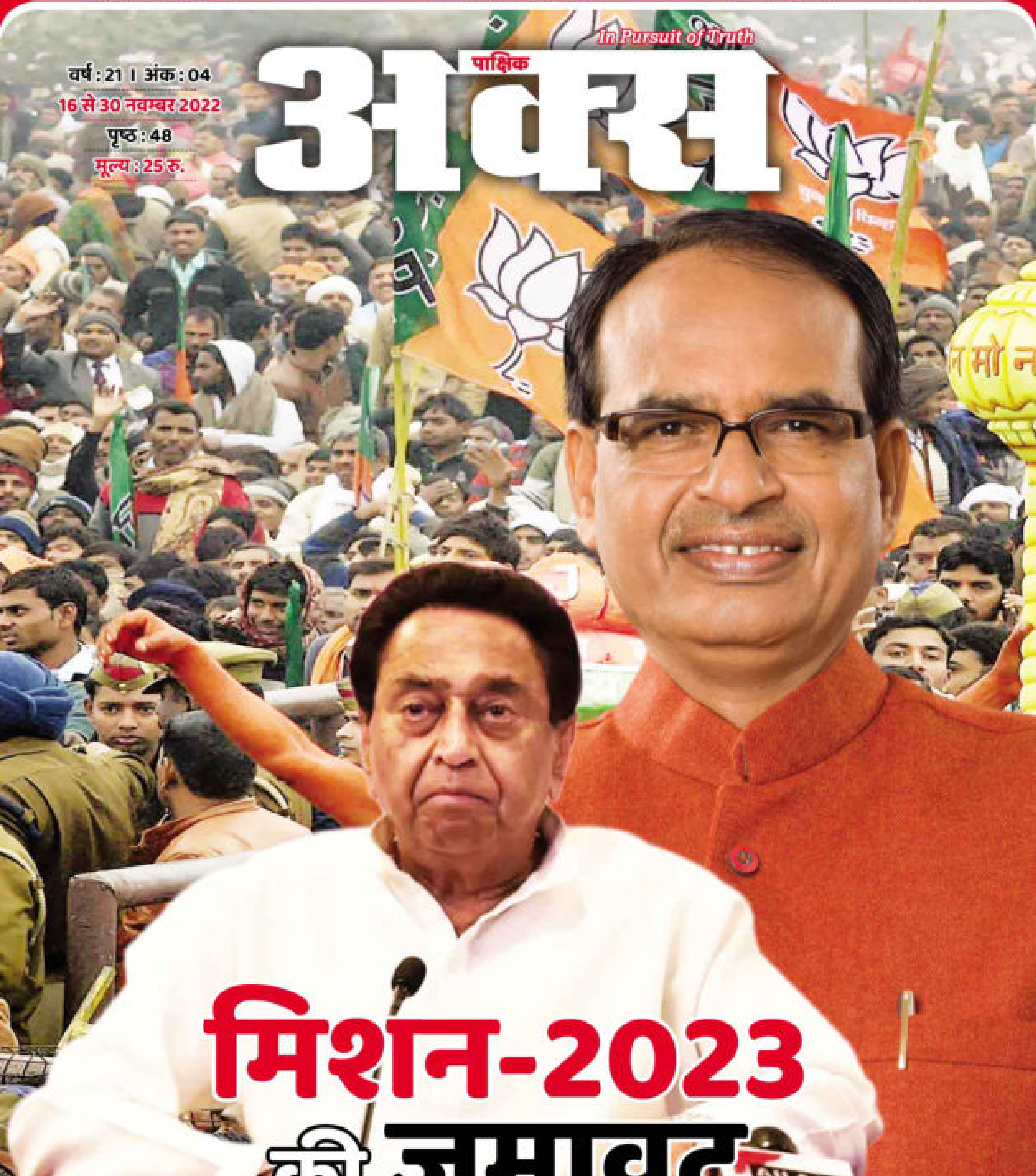

मिशन-2023 की जमावट

सत्ता और संगठन में बढ़ेगी
कर्मठ नेताओं की भागीदारी

तेज तर्रार और विश्वासपात्र
अफसरों की बढ़ेगी जिम्मेदारी

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

आपका राशन, आपका अधिकार

सही मात्रा में राशन प्राप्त करना आपका अधिकार है

उचित मूल्य दुकान से राशन की सही मात्रा प्राप्त होने की पुष्टि कैसे करें

1. PoS मशीन पर अंगूठा लगाते समय मशीन में से आवाज़ आती है कि कितने किलो राशन आपको जारी हुआ है, आवाज़ को ध्यान से सुनें और मिलान करें।
2. PoS मशीन से निकलने वाली पर्ची (रसीद) प्राप्त करें, उसमें अंकित राशन की मात्रा का मिलान करें।
3. अपने मोबाइल नम्बर की PoS मशीन पर सही प्रविष्टि कराएं और प्राप्त राशन की मात्रा का मिलान मोबाइल पर प्राप्त होने वाले SMS से करें।

प्रतिमाह निर्धारित राशन की मात्रा (क़ीमत 1 रुपये प्रति किलो)

प्राथमिकता श्रेणी के परिवार

खाद्यान्न – 5 किलो प्रति सदस्य

नमक – 1 किलो प्रति परिवार

अन्त्योदय परिवार

खाद्यान्न – 35 किलो प्रति परिवार

नमक – 1 किलो प्रति परिवार

शक्कर – 1 किलो प्रति परिवार

इसके साथ-साथ 5 किलो खाद्यान्न प्रति सदस्य प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत नि:शुल्क वितरित किया जा रहा है।

राशन प्राप्त न होने या सही मात्रा में न मिलने की शिकायत सीएम हेल्पलाइन 181 पर दर्ज कराएं

D-19516/22

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

प्रकाशन : मध्यप्रदेश माध्यम/2022

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग, मध्यप्रदेश शासन

इस अंक में

वल्लभगाथा

8 | इकबाल की सेवा वृद्धि के कयास

लगता है नए मुख्य सचिव का आदेश 29 नवंबर को ही आएगा, क्योंकि राज्य सरकार ने अभी तक केंद्र सरकार को अनुराग जैन के आने की हरी झंडी नहीं दी है। वहीं इस माह के अंत में यानी 30 नवंबर को वर्तमान मुख्य...

राजपथ

10-11 | बूथ की मजबूती पर फोकस...

सूबे में एक साल बाद होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा व कांग्रेस का पूरा फोकस अब बूथ पर हो गया है। भाजपा तो पहले ही बूथ मजबूती के लिए कई तरह के कार्यक्रमों का न केवल आयोजन कर चुकी है...

लालफीताशाही

12 | चोरी हो गई मेजरमेंट बुक

एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी की तरह लोक निर्माण विभाग में करोड़ों रुपए के सुरक्षा निधि (सिक्योरिटी डिपॉजिट) घोटाले की स्थिति बन गई है। यानी पहले तो लोक निर्माण विभाग में अधिकारी ठेकेदारों से वर्क ऑर्डर के लिए सुरक्षा निधि जमा...

मप्र भाजपा

18 | एप के रडार पर नेताजी

मिशन 2023 के दौरान भाजपा के हर पदाधिकारी की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। अब भाजपा के नेता बैठकों में खानापूर्ति नहीं कर सकेंगे। क्योंकि संगठन ऐप 2.0 के जरिए बैठकों की निगरानी रखी जा रही है। कौन नेता आज क्या करेगा, क्या-क्या काम किया इसकी ऑनलाइन मॉनीटरिंग...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

मप्र में एक साल पहले ही सत्ता का संग्राम शुरू हो गया है। हर बार की तरह मिशन 2023 में भाजपा और कांग्रेस के बीच जंग है। दोनों पार्टियों का दावा और कोशिश है कि विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल कर सरकार बनाई जाए। इसके लिए भाजपा ने अभी से चुनावी जमावट शुरू कर दी है। चुनावी वर्ष में प्रवेश से पहले भाजपा सत्ता और संगठन में फेर बदल कर कर्मठ नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने की तैयारी कर रही है।

19

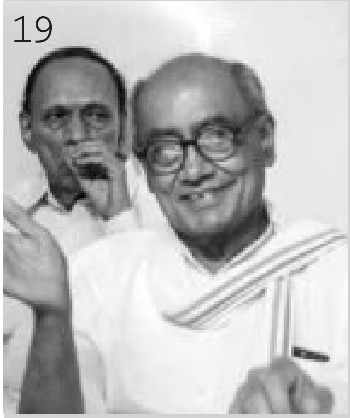

36

44

45

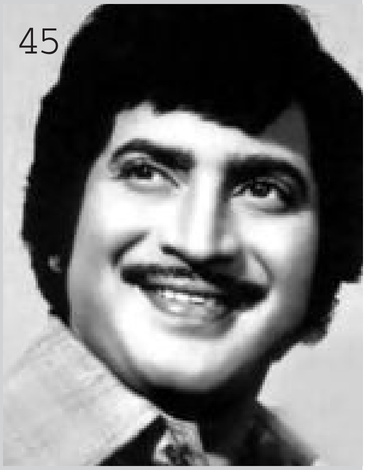

राजनीति

30-31 | नाक का सवाल बन गए चुनाव

चुनाव आयोग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के गृहराज्य गुजरात में मतदान की तिथियों की घोषणा कर दी है। 1 और 5 दिसंबर को गुजरात में दो चरणों में मतदान होगा और 8 दिसंबर को हिमाचल प्रदेश के साथ परिणाम सुनाए जाएंगे। अब जबकि चुनाव आयोग ने अपने...

महाराष्ट्र

34 | बदल रहा राजनीति का ट्रेंड

जैसे-जैसे मुंबई निकाय चुनाव नजदीक आ रहे हैं, महाराष्ट्र की राजनीति में एक नया वोट बैंक भी उभरता नजर आ रहा है। कुछ ही दिन पहले जहां उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना मराठी मुस्लिमों को साधते हुए नजर आ रही थी, अब एक और वोट बैंक निकल आया है। जिन उत्तर...

बिहार

37 | कब आएगी बिहार में बहार ?

ऐसे कई सवाल हैं, जो आज तक अनसुलझे हैं और उन्हें सुलझाने के लिए जो आत्मबल चाहिए, वहां के राजनीतिज्ञों में उसकी घोर कमी है। ये अपनी कुर्सी पाने से पहले जनता को गफलत में रखते हैं और सत्तासीन हो जाने के बाद उनका दुख जानने, उनकी उम्मीदों...

6-7 अंदर की बात
40 विदेश
41 महिला जगत
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

अगर है जुगाड़... तो करोड़ों का व्यापार

किसी शायर ने लिखा है...

यहां तहजीब बिकती है... यहां फरमान बिकते हैं।
जरा तुम दाम तो बोलो... यहां ईमान बिकते हैं।।

ये पंक्तियां इन दिनों मप्र की राजधानी भोपाल में सार्थक हो रही हैं। दरअसल, यहां एक फूल के कारोबारी की कुछ ऐसी जुगाड़ हुई कि आज उसने फूल बेचकर करोड़ों का व्यापार खड़ा कर लिया है। यह कारोबारी भोपाल नगर निगम सहित अन्य शासकीय कार्यालयों में फूलों की सप्लाई करता है। आज यह कारोबारी सत्तारूढ़ पार्टी का सक्रिय कार्यकर्ता बन गया है। बताया जाता है कि जबसे इस व्यवसायी को राजनीति का साथ मिला है, वह मालामाल होने लगा है। इस बात का खुलासा तब हुआ जब आर्थिक तंगी झेल रहे नगर निगम ने एक साल के लिए फूल-मालाएं खरीदने के लिए डेढ़ करोड़ रुपए का टेंडर जारी किया। निगम के पास बिजली और डीजल खरीदने के लिए भी पैसा नहीं है। इसके बावजूद निगम ने फूल-मालाएं खरीदने के लिए डेढ़ करोड़ रुपए का टेंडर जारी कर दिया। हालांकि विवाद बढ़ने पर फिलहाल इसे रोक दिया गया है। बता दें कि नगर निगम की जनसंपर्क शाखा के द्वारा 8 नवंबर 2022 को फूल-माला खरीदने के लिए टेंडर जारी किया गया। इसमें निविदाकर्ता से डेढ़ लाख रुपए धरोहर राशि की मांग की गई है। इसके तहत चयनित ठेकेदार को एक साल तक फूल, माला, बुके, फ्लॉवर पाट और अन्य सजावट के सामान की आपूर्ति करनी होगी। वहीं इसके लिए निविदाकर्ता को साढ़े सात लाख रुपए बैंक गारंटी देनी होगी, बाध्यता ये भी है कि संबंधित फर्म का टर्नओवर 30 लाख रुपए वार्षिक होना जरुरी है। हालांकि कुछ ठेकेदारों का कहना है कि भले ही निगम ने इसके लिए टेंडर जारी किया है, लेकिन ये वर्षों से एक ठेकेदार को दिया जा रहा है। इनका सत्तापक्ष के नेताओं से भी अच्छा संपर्क है। लेकिन यह परंपरा कांग्रेस शासनकाल में भी थी। निगम के जिम्मेदार अधिकारियों का कहना है कि शहर में 67 से अधिक महापुरुषों की प्रतिमाएं हैं। महापौर परिषद का संकल्प है कि महीने में एक बार इनकी साफ-सफाई और धुलाई कर इनमें फूल-मालाएं चढ़ाई जाएं। वहीं इनकी जयंती और पुण्यतिथि पर भी फूल-माला चढ़ाना अनिवार्य है। इसके अलावा होली, दीपावली, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर इनमें फूल-माला चढ़ाई जाती है। केंद्रीय मंत्रियों का शहर में दौरा होने पर भी इन्हें फूलों से सजाया जाता है। वहीं निगम के भी कई कार्यक्रम होते हैं। प्रतिमा में माला चढ़ाने के लिए दस माला की एक माला बनती है। इसलिए ये कोई अधिक खर्च नहीं है। जबकि देखा गया है कि सालभर ये प्रतिमाएं धूल खाती रहती हैं। कोई इनकी देखरेख नहीं करता है। अगर अनुमान लगाया जाए तो इतने पैसों से एक दिन में लगभग 4 हजार से ज्यादा लोग दोनों समय का भर पेट भोजन कर सकते है। सरकार द्वारा संचालित दीनदयाल योजना के तहत जरूरतमंदों को 5 रुपए के हिसाब से पेट भर खाना खिलाया जाता है। लेकिन जिस हिसाब से भोपाल नगर निगम ने हाल ही में टेंडर जारी किया है, फूल-माला और गुलदस्ता के लिए वो पैसा किसी जरूरतमंद के काम आ सकता है। वहीं भोपाल के सौंदर्यीकरण और खस्ताहाल सड़कों को दरकिनार करते हुए निगम ने जी हुजूरी करने के लिए फूल माला के लिए करोड़ों का टेंडर जारी किया है। हालांकि राजनीतिक विरोध के कारण फिलहाल के लिए इसे टाल दिया गया है। अब देखना यह है कि नगर निगम फिजूल खर्ची पर कब तक लगाम लगाए रखता है।

- राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 21, अंक 4, पृष्ठ-48, 16 से 30 नवंबर, 2022

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
W ebsite : www.akshnews.com

RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

ब्यूरो
कोलकाता:- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्कण्डेय तिवारी, **जयपुर:**- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
098934 77156, (गंजबासौदा) ज्योत्सना अनूप यादव
089823 27267, (रतलाम) सुभाष सोमानी
075666 71111, (विदिशा) मोहित बंसल

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान) मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर, फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर, भिलाई, मोबाइल 094241 08015
इंदौर : नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर, मो.-9827227000
देवास : जय सिंह, देवास मो.-7000526104, 9907353976

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

जनसंख्या बनी समस्या

भारत में अधिक जनसंख्या एक बड़ी चुनौती रही है और देश में गरीबी, बेरोजगारी और निरक्षरता जैसी अधिकांश समस्याओं का एक बड़ा कारण है। अपनी प्रजनन क्षमता में गिरावट के बावजूद भारत में अभी भी दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी है।

● **प्रभु दीक्षित,** इंदौर (म.प्र.)

भाजपा की तैयारी

मिशन-2023 की तैयारियों में जुटी भाजपा ने कांग्रेस के कब्जे वाली सभी विधानसभा सीटों को छीनने के लिए पुख्ता तैयारी शुरू कर दी है। भाजपा का इन सीटों पर विशेष फोकस रहेगा। सभी सीटों पर वरिष्ठ भाजपा नेताओं को प्रभारी बनाया गया है, जो निगरानी बनाए रखे हुए हैं।

● **रामेश्वर शर्मा,** भोपाल (म.प्र.)

किसानों की चिंता

मप्र की शिवराज सरकार इन दिनों किसानों को लेकर काफी चिंतित है। प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र किसानों को एक छत के नीचे उचित मूल्य पर उर्वरक, बीज और कीटनाशक जैसी सभी गुणवत्ता वाली कृषि सामग्री मुहैया कराएंगे। सरकार का यह कदम सराहनीय है।

● **अश्विनी मौर्य,** जबलपुर (म.प्र.)

आत्मनिर्भर होगा मप्र

मप्र को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार इंवेस्टर्स समिट का आयोजन करेगी। ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट को सफल बनाने के लिए शासन स्तर पर तैयारियां शुरू हो गई हैं। सरकार की तैयारियों को निवेशकों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। कुछ निवेशक जमीन देखने की प्लानिंग कर रहे हैं, तो कुछ चयन कर चुके हैं। कुछ ने अभी निवेश की रूचि दिखाकर सेक्टर तय किए हैं। इन दिनों प्रदेश में औद्योगिक विकास की तेज रफ्तार हो रहा है। ग्रीन एनर्जी, आर्गेनिक खाद से लेकर लॉजिस्टिक इंडस्ट्री आकार ले रही हैं। इसके तहत लाखों के करार होंगे, जिनके लिए अभी से निवेशक कंपनियां तैयार होने लगी हैं। लगभग 12 कंपनियों ने प्रारंभिक रूप से निवेश की ओर कदम बढ़ाए हैं।

● **कुलदीप सेंगर,** ग्वालियर (म.प्र.)

कमजोर होता जा रहा रुपया

दुनिया के किसी भी क्षेत्र में युद्ध हो, उसका असर भारत पर पड़ता है। भारत सरकार भले ही डॉलर की आड़ में छिपने की कोशिश कर रही हो लेकिन सरकार को इस बात का यकीन भी है कि मजबूत होता डॉलर और कमजोर होता रुपया आखिर में बेतहाशा मंहगाई लाएगा। इसलिए सरकार मंहगाई रोकने के लिए हरसंभव कदम उठा रही है। इसी के तहत खाद्य सामग्री पर जहां निर्यात पर दिसंबर तक रोक लगा दी है और खाद्यान्न के आयात पर आयात शुल्क में भी कमी कर दी है।

● **विक्रम सिंह,** नई दिल्ली

दोहरे संकट में पृथ्वी

इस समय वैश्विक स्तर पर पृथ्वी दोहरे संकट से घिरी है। जलवायु परिवर्तन और जैवविविधता के पतन के एक-दूसरे से जुड़े संकट हमारी गतिविधियों के मुख्य केंद्र हैं। दुनियाभर में आवास क्षेत्र के पतन और क्षति, उपयोग, आक्रामक जीव-जंतुओं की घुसपैठ, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और रोग वन्य जीव-जंतुओं की संख्या में आई इस गिरावट के मुख्य कारण हैं। जलीय जीव-जंतुओं की संख्या में आई 83 की कमी तो किसी भी प्रजाति वर्ग की संख्या में आई सर्वाधिक गिरावट है।

● **शिखा यादव,** सीहोर (म.प्र.)

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

दांव-पेच

राजनीतिक ड्रामेबाजी में नंबर वन

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार बीते लंबे अर्से से विवादों का केंद्र बनी हुई है। खांटी फिल्मी अंदाज में यहां सियासी घमासान भाजपा और झारखंड मुक्ति मोर्चा के मध्य चल रहा है जिसमें केंद्रीय जांच एजेंसियां, राज्यपाल और राज्य के नौकरशाह सहयोगी भूमिका तो मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और भाजपा मुख्य किरदार में नजर आ रही है। जून महीने में केंद्रीय जांच एजेंसियों ने राज्य की खनन सचिव पूजा सिंघल के यहां पहले छापेमारी की फिर उन्हें मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद अगस्त माह में सोरेन के करीबी कहे जाने वाले व्यवसायी प्रेम प्रकाश और पंकज मिश्रा जेल भेजे गए। सोरेन ने इस सबको उनकी सरकार अस्थिर करने की साजिश का हिस्सा बताया तो अगस्त अंत में चुनाव आयोग ने हेमंत सोरेन की विधायकी को लेकर एक रिपोर्ट राज्यपाल के पास भेज दी। इस रिपोर्ट को हालांकि सार्वजनिक नहीं किया गया है लेकिन मीडिया ने सूत्रों के हवाले से खबरें छापी कि इसके आधार पर सोरेन विधायक पद के अयोग्य घोषित किए जाएंगे और उनकी सरकार गिर जाएगी। राज्यपाल लेकिन इस रिपोर्ट को दबाकर बैठ गए हैं। वे ऐसे संकेत लगातार दे रहे हैं जिनसे सोरेन के खिलाफ किसी बड़ी कार्यवाही का इशारा मिलता है।

सुपर सीएम बनते फडणवीस

महाराष्ट्र में शिवसेना (शिंदे गुट) और भाजपा की गठबंधन सरकार में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चलने के समाचार सरकार गठन के बाद से ही सामने आने लगे थे। शिंदे को अपना मंत्रिमंडल गठन करने में पूरे 41 दिन लगे थे। इन मंत्रियों को विभाग बांटने में भी दोनों दलों के मध्य जबरदस्त रस्सा-कशी हुई थी। तब ज्यादातर महत्वपूर्ण मंत्रालय भाजपा के हाथों जाने के बाद ही कयास लगाए जाने लगे थे कि भले ही एकनाथ शिंदे राज्य के मुख्यमंत्री हों, सरकार की नकेल फडणवीस के हाथों में ही रहेगी। गृह, वित्त और आवास जैसे मंत्रालय भाजपा के पास होने से अब यह आशंका सही होती नजर आने लगी है। गत दिनों नौकरशाही में हुए बड़े बदलाव से भी साफ हो चला है कि फडणवीस के करीबी अफसरों को महत्वपूर्ण पदों पर बैठाया गया है तो दूसरी तरफ शिंदे के निकट समझे जाने वाले बाबू साइड लाइन कर दिए गए हैं। मुंबई के सत्ता गलियारों में कानाफूसी जोरों पर है कि मुख्यमंत्री शिंदे धारावी झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास का टेंडर सऊदी अरब के राज परिवार से ताल्लुक रखने वाली एक कंपनी को ही दिए जाने के पक्षधर थे। यह कंपनी 2019 में इस परियोजना का टेंडर जीत चुकी थी लेकिन महाविकास अघाड़ी सरकार की ताजपोशी बाद इस टेंडर को निरस्त कर दिया गया था।

24, अकबर रोड में बढ़ी चहल-पहल

कांग्रेस के राष्ट्रीय मुख्यालय 24, अकबर रोड में इन दिनों खासी चहल-पहल देखने को मिल रही है। पार्टी सूत्रों की मानें तो पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को इसका श्रेय जाता है। खड़गे ने दरअसल निर्णय लिया है कि वे पार्टी कार्यालय में नियमित बैठक करेंगे। अध्यक्ष पद संभालने के साथ ही खड़गे ने 24, अकबर रोड की कायाकल्प करनी शुरू कर दी है। शुरुआत पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यालय से की गई है जो पिछले तीन बरसों से बंद पड़ा था। राहुल गांधी के इस्तीफे के बाद से ही बंद पड़े इस कार्यालय को जब खड़गे की ताजपोशी के उपरांत खोला गया तो वहां मकड़ी के जालों ने नए अध्यक्ष का स्वागत किया। कमरे में मौजूद फर्नीचर भी बदहाल अवस्था में था। तुरंत ही सारी चीजों को दुरुस्त करने की कवायद शुरू की गई। चूंकि खड़गे नियमित इस कार्यालय में बैठ रहे हैं, इसके चलते पार्टी के महासचिवों और अन्य पदाधिकारियों की आवाजाही भी नियमित हो चली है। नए पार्टी अध्यक्ष ने हालांकि अपनी टीम का अभी गठन नहीं किया है लेकिन कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य नासीर हुसैन का जलवा अभी से नजर आने लगा है। जानकारों की मानें तो जिस प्रकार इंदिरा गांधी के समय आरके धवन, सोनिया गांधी के अध्यक्ष रहते अहमद पटेल और टीम राहुल में केसी वेणुगोपाल की भूमिका हुआ करती थी, वर्तमान समय में ठीक इसी प्रकार नासीर हुसैन को स्वयं खड़गे प्रमोट करते नजर आ रहे हैं।

अग्निपरीक्षा

उप्र का उपचुनाव अखिलेश यादव के लिए अग्निपरीक्षा होगा। मैनपुरी में मुलायम सिंह यादव के निधन के कारण ये उपचुनाव होगा। रामपुर में सपा के मोहम्मद आजम खान और खतौली में भाजपा के विक्रम सैनी को अयोग्य घोषित कर दिए जाने से उपचुनाव की नौबत आई है। खतौली की सीट अखिलेश ने सहयोगी राष्ट्रीय लोकदल के लिए छोड़ दी है। रामपुर की लोकसभा सीट उपचुनाव में भाजपा ने सपा से पहले ही झटक ली थी। अब विधानसभा सीट भी छीनना चाहेगी सूबे की सत्तारूढ़ पार्टी। नजर उसने मैनपुरी पर भी गड़ाई है। जहां अखिलेश ने चाचा शिवपाल के सपनों पर पानी फेरते हुए अपनी पत्नी डिंपल यादव को उम्मीदवार बनाया है। रामपुर में उम्मीदवार जाहिर है कि मुसलमान ही होगा और वह भी आजम खान की पसंद का। पर खुद आजम तो लड़ नहीं सकते। बेटा अब्दुल्ला इसी जिले की दूसरी सीट से विधायक है ही। परिवार पर बात आई तो उनकी पत्नी जरूर हो सकती हैं उम्मीदवार, जो पहले भी राज्यसभा सदस्य रह चुकी हैं।

जादूगर पर जादू

अशोक गहलोत के खिलाफ बगावत करके अभी तक तो सचिन पायलट घाटे में ही दिख रहे हैं। उपमुख्यमंत्री का पद भी चला गया था और पार्टी की सूबेदारी से भी हाथ धोना पड़ा था। ऊपर से अशोक गहलोत पहले से ज्यादा आक्रामक होते गए। सचिन को संतोष भी करना पड़ा और मुख्यमंत्री के तंज भी सहने को मजबूर हुए। लेकिन, पिछले दिनों की घटना ने कांग्रेस के इस युवा नेता को आक्रामक मुद्रा अपनाने का अवसर दे दिया। उस दिन राजस्थान के जनजाति बहुल बांसवाड़ा जिले के मानगढ़ में एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अशोक गहलोत ने मंच साझा किया था। इसी अवसर पर प्रधानमंत्री ने गहलोत की तारीफ की। मोदी ने कहा कि मानगढ़ पहले वीरान जगह थी, लेकिन गहलोत ने इसे हरा-भरा बना दिया। मोदी इतने तक ही सीमित नहीं रहे। अतीत के झरोखे में जा पहुंचे। फरमाया कि वे जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो पड़ोसी राज्य राजस्थान के मुख्यमंत्री गहलोत के साथ उनका अच्छा तालमेल था।

अफसर मामा पर भी भारी

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों एक आईएएस अधिकारी का तबादला चर्चा में बना हुआ है। कहा जा रहा है कि साहब जाने या अनजाने सरकार के मुखिया यानी मामा पर ही भारी पड़ गए थे। शायद यही वजह है कि उन्हें विभाग से हटाना पड़ा। दरअसल, जिस अधिकारी की यहां बात हो रही है, वे 1998 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। साहब के पास पूर्व में एक महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी थी। साहब विभाग में बेहतर काम कर रहे थे और सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन तेजी से करवा रहे थे। प्रशासनिक वीथिका में साहब की खूब बड़ाई हो रही थी, लेकिन साहब को न जाने क्या सूझा कि उन्होंने केंद्र सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना का क्रियान्वयन सरकार के मुखिया के विधानसभा क्षेत्र में ही रोक दिया। यह वह योजना है जिससे क्षेत्रीय विकास में नया इतिहास जुड़ता। लेकिन साहब ने अपने मन से या न जाने किसकी सलाह से उस महत्वपूर्ण योजना का क्रियान्वयन कुछ इस तरह करवाया कि वे आंख की किरकिरी बन गए। प्रशासनिक वीथिका में तो यहां तक कहा जाने लगा कि साहब मामा पर भारी पड़ गए। जबकि एक पुराने भ्रष्टाचार के मामले में लोकायुक्त से रातोंरात वर्तमान केंद्रीय मंत्री के कहने पर अभयदान मिला था। शायद यही वजह है कि विभाग में बेहतर काम करने के बाद भी साहब को हटा दिया गया। सूत्रों का कहना है कि साहब पर अति विश्वास भारी पड़ा। उन्होंने प्रदेश में कुछ नया कर दिखाने के चक्कर में सीधे सरकार से लोहा ले लिया।

महिला सब पर भारी

प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में एक महिला अधिकारी काफी चर्चा में हैं। आलम यह है कि उक्त महिला अधिकारी अपने विभाग में बड़े-बड़े अफसरों पर भारी पड़ रही हैं। कहा तो यहां तक जा रहा है कि मैडम पूरे विभाग को पानी पिला-पिलाकर परेशान कर रही हैं। दरअसल, जिस महिला अधिकारी की बात हो रही है, उन पर उनके विभाग के मंत्री और प्रमुख सचिव का हाथ है। सूत्रों का कहना है कि विभाग की डिप्टी डायरेक्टर की कुर्सी पर बैठी मैडम का मंत्री से ऐसा दोस्ताना हो गया है कि मंत्रीजी जब भी चाहते हैं, मैडम उनके साथ प्रवास पर चली जाती हैं। प्रशासनिक वीथिका में तो दोनों की यारी चर्चा में है ही, साथ ही यहां तक कहा जा रहा है कि आदिवासी बहुल जिले से आने वाले मंत्रीजी भले ही अपने विभाग में प्रभावहीन हों,

लेकिन मैडम का जलवा दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। आलम यह है कि मंत्री और प्रमुख सचिव की खास इस महिला अधिकारी से विभाग के सभी अधिकारी-कर्मचारी परेशान हैं। इसका वजह यह है कि मैडम मनमाने तरीके से सबसे काम कराती हैं। मंत्री और प्रमुख सचिव के डर से विभाग के अधिकारी-कर्मचारी भी मैडम के आगे पानी भरते नजर आते हैं।

एडवांस भी डूबा... काम भी रुका

प्रदेश में तबादलों की अवधि खत्म होने के बाद भी कई अधिकारी-कर्मचारी मंत्रियों के मार्फत तबादला कराने में लगे रहे। इससे कईयों का तबादला हो गया तो कईयों की मंशा पर पानी फिर गया। ऐसे ही एक अफसर का एडवांस भी डूब गया और तबादला भी नहीं हुआ। दरअसल, प्रदेश के सबसे बुजुर्ग मंत्री के माध्यम से विंध्य क्षेत्र के एक फूड अफसर ने महाकाल की नगरी में तबादला करवाने की कोशिश की। सूत्रों का कहना है कि उक्त अधिकारी का तबादला कराने के लिए 15 लाख रुपए में बात तय हुई थी और उन्होंने मंत्रीजी के लोगों के पास 5 लाख रुपए एडवांस भी जमा करवा दिया था। मंत्रीजी ने भी विभाग के प्रमुख सचिव को उक्त अधिकारी का तबादला करने का निर्देश दिया था। बताया जाता है कि मंत्रीजी के आदेश को सरआंखों पर रखते हुए प्रमुख सचिव ने उक्त अधिकारी की मंशानुसार तबादला आदेश भी जारी कर दिया। लेकिन उन्होंने उसमें ऐसा पेंच फंसा दिया कि उक्त अधिकारी न घर के रहे न घाट के। यानी साहब ने उनका तबादला करते हुए उन्हें दो दिन के अंदर महाकाल की नगरी में जाकर ज्वाइन करने का आदेश दिया था। साथ ही कहा था कि अगर वे रिलीव होकर ज्वाइनिंग नहीं करते हैं तो उन्होंने सस्पेंड कर दिया जाए। आदेश मिलने के बाद रीवा से उज्जैन आकर दो दिन में नौकरी ज्वाइन करना उक्त अधिकारी के लिए मुनासिब नहीं था। इसलिए वे तबादला होने के बाद भी रिलीव नहीं हुए। उनका एडवांस भी डूब गया और काम भी नहीं हुआ।

भाव प्रकट नहीं कर पाए

मां के दूध पर बयान देकर फंसे प्रदेश के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी इस कदर असमंजस में फंसे हुए हैं कि वे चाहकर भी अपनी बात लोगों के सामने नहीं रख पा रहे हैं। गौरतलब है कि 1990 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी ने लड़कियों को लेकर मां के दूध पिलाने का बयान दिया था, जिस पर प्रदेश की राजनीतिक वीथिका में जमकर विरोध हुआ। सत्तापक्ष के साथ ही विपक्ष के नेता भी उन पर पिल पड़े। दरअसल, साहब के कथन का जो भाव निकाला गया, साहब की मंशा वह नहीं थी। बताया जा रहा है कि साहब ने मां के पहले दूध के संदर्भ में अपना बयान दिया था, लेकिन वे उसे ठीक से बयां नहीं कर पाए। इसको लेकर साहब को हटाने से लेकर माफी मांगने तक की बात कही गई। जबकि बताया जाता है कि साहब का कहना था कि मां अपने पहले दूध से बच्चों को वंचित रखती है, क्योंकि उसमें कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जो बच्चों के लिए हानिकारक होते हैं। साहब के कथन का भले ही कुछ भी भाव निकाला जाए, लेकिन साहब की मंशा ऐसी नहीं थी, जैसा बताया जा रहा है। अभी भी साहब अपने भाव प्रकट नहीं कर पा रहे हैं।

बात ऊपर तक पहुंची

बिजली विभाग में किस तरह भर्राशाही चल रही है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एडवांस जमा होने के बाद भी बिजली कंपनी ने कई क्षेत्रों की स्ट्रीट लाइट काट दी थी। गौरतलब है कि बिजली विभाग की भर्राशाही से आम जनता तो पहले से ही परेशान है। कभी बिना रीडिंग के बिल तो कभी भारी भरकम बिल देकर कंपनी लोगों को परेशान करती ही है। अब वह शासकीय विभागों को भी नहीं छोड़ रही है। ताजा मामला राजधानी का है। यहां पिछले दिनों एक चौथाई क्षेत्र के स्ट्रीट लाइट की बिजली काट दी गई थी। स्थिति इतनी गंभीर हो गई थी कि प्रभारी मंत्री को हस्तक्षेप करना पड़ा। जबकि हकीकत यह है कि बिजली विभाग को 2 करोड़ रुपए एडवांस जमा किए जाने के बाद भी बिजली काटी गई थी। इस मामले में कंपनी के सीएमडी और चीफ इंजीनियर को तलब किया गया। यही नहीं बिजली कंपनी के अफसरों की लालफीताशाही की खबर ऊपर तक पहुंच गई है। अब देखना यह है कि सरकार अफसरों की इस मनमानी पर क्या कदम उठाती है।

इकबाल की सेवा वृद्धि के कयास

लगता है नए मुख्य सचिव का आदेश 29 नवंबर को ही आएगा, क्योंकि राज्य सरकार ने अभी तक केंद्र सरकार को अनुराग जैन के आने की हरी झंडी नहीं दी है। वहीं इस माह के अंत में यानी 30 नवंबर को वर्तमान मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस सेवानिवृत्त होने वाले हैं। सरकार जिस तरह शांत बैठी है, उससे नए मुख्य सचिव को लेकर उहापोह की स्थिति बनी हुई है। जानकारों का मानना है कि यह इस बात का संकेत है कि सरकार इकबाल सिंह बैंस को एक्सटेंशन दे सकती है।

मप्र में अगले साल विधानसभा का चुनाव होना है। इसलिए प्रदेश में मुख्य सचिव की भूमिका महत्वपूर्ण होने वाली है। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि सरकार अपने सबसे विश्वसनीय अधिकारी को मुख्य सचिव बनाएगी। अगले मुख्य सचिव के लिए कई नामों पर चर्चा हो रही है। लेकिन अभी तक सरकार की तरफ से कोई ऐसा संकेत नहीं मिला है कि अगला मुख्य सचिव कौन होगा। ऐसे में माना जा रहा है कि वर्तमान प्रशासनिक मुखिया इकबाल सिंह बैंस को सरकार एक्सटेंशन दे सकती है। खुद गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने सिफारिश की है कि बैंस को सेवावृद्धि दी जाए।

फिलहाल इसके लिए जहां केंद्र सरकार में सचिव उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1989 बैच के अधिकारी अनुराग जैन और इसी बैच के अधिकारी स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव मोहम्मद सुलेमान का नाम बेहद चर्चा में बना हुआ है। वहीं इस बीच माना जा रहा है कि फिलहाल बैंस की सेवावृद्धि की जा सकती है। इसकी

अपनी वजह है। दरअसल परंपरा के अनुसार नए मुख्य सचिव का नाम पहले ही तय कर लिया जाता था और उन्हें बतौर ओएसडी सीएस कार्यालय में पदस्थ कर दिया जाता था, लेकिन इस बार ऐसा अब तक नहीं हुआ है। यह बात अलग है कि अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बैंस की सेवावृद्धि की संभावना कम ही बताई जा रही है। ऐसे में पहला नाम अनुराग जैन का ही माना जा रहा है। वे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सचिव रहे हैं, इस कारण मुख्यमंत्री की पहली पसंद हैं, लेकिन केंद्र सरकार ने अनुराग जैन की वापसी पर अभी तक अपनी सहमति नहीं दी है। ऐसी स्थिति में बैंस को एक्सटेंशन दिया जा सकता है।

● कुमार विनोद

गेम ऑफ चांस को रोकने कानून

प्रदेश में सरकार इंटरनेट पर गेम ऑफ चांस को रोकने के लिए कानून बनाने की तैयारी कर रही है। तमिलनाडु में यह कानून बनाया जा चुका है। इसके अलावा हुक्का बार पर नकेल कसने के लिए भी कोकता कानून बनेगा। गौरतलब है कि प्रदेश में इंटरनेट पर गेम खेलकर लोग बड़ी संख्या में राशि गंवा रहे हैं। इस कारण कुछ लोग आत्महत्या भी कर चुके हैं। इसको देखते हुए सरकार गेम ऑफ चांस पर नकेल कसने की कोशिश में जुट गई है। वहीं महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात की तरह प्रदेश में कोकता एक्ट लागू करने पर भी विचार हो रहा है। संभावना जताई जा रही है कि सरकार जल्द ही इनका प्रावधान तैयार कर इन्हें अमली जामा पहनाएगी।

शांति एवं विवाद निवारण समिति का होगा गठन

प्रदेश में कानून व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए सरकार शांति एवं विवाद निवारण समिति का गठन करेगी। ग्राम सभा द्वारा ग्राम सभा के सदस्यों में से कम से कम 5 व अधिकतम 7 सदस्यों का चयन कर समिति का गठन किया जाएगा। उक्त समिति में ग्राम में निवासरत अनुसूचित जनजातियों को जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया जाएगा, तथा इस समिति में कम से कम एक तिहाई प्रतिनिधित्व महिलाओं को दिया जाएगा। इसके लिए शासन स्तर पर तकरीबन 11 बैठकें हो चुकी हैं। ग्राम सभा के सचिव द्वारा समिति के गठन की जानकारी पुलिस को दी जाएगी।

मामा के खजाने में फिर चोरी

मप्र में एक तरफ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति पर जोर दे रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ सरकारी खजाने से सरकारी अधिकारी ही चोरी करने में लगे हुए हैं। ताजा मामला अनूपपुर जिले में सामने आया है। बताया जाता है कि यहां जिले के दो प्रशासनिक अधिकारियों की अनुभवहीनता के कारण भ्रष्टाचार का बड़ा मामला दबता दिख रहा है। दरअसल, जिले में 12 करोड़ रुपए का एक भ्रष्टाचार हुआ है। इस भ्रष्टाचार को लेकर जिले के 2 वरिष्ठ अधिकारी आपस में इस कदर उलझ गए कि उनमें से एक को वहां से हटाकर राजधानी में पदस्थ कर दिया गया है।सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अनूपपुर जिले की प्रशासनिक मुखिया के पिताजी केरल में सीएस हैं और वे प्रदेश के सीएस के बैचमैट हैं। इसलिए वे पुलिस के मुखिया पर भारी पड़ी हैं। बताया जाता है कि जिले में हुए 12 करोड़ के भ्रष्टाचार की शिकायत एसपी को मिली तो उन्होंने सीएमओ की शिकायत दो बार कलेक्टर से की। कलेक्टर ने जब उनकी नहीं सुनी तो उन्होंने नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के प्रमुख सचिव के पास शिकायत दर्ज करा दी।यह बात जिले के अधिकारियों-कर्मचारियों को नागवार गुजरी और उन्होंने एकजुट होकर संभागायुक्त के पास एसपी की शिकायत कर दी। संभागायुक्त ने सरकार से अनुशंसा की और एसपी साहब को वहां से चलता कर दिया गया। दरअसल, जिले के दोनों वरिष्ठ अधिकारी नए हैं। कलेक्टर 2013 बैच की आईएएस, तो एसपी 2014 बैच के आईपीएस हैं। इन दोनों की नासमझी के कारण यह घटनाक्रम हो गया। अब सवाल उठने लगा है कि जिले से एसपी को तो हटा दिया गया है, अब इस घोटाले की भरपाई कैसे होगी। सूत्र बताते हैं कि 12 करोड़ के घोटाले के मामले में तत्कालीन सीएमओ को हटा दिया गया, वहीं वर्तमान समय में जो महिला अधिकारी सीएमओ बनी हैं, उन्हें छुट्टी पर भेज दिया गया है।उनसे कहा गया है कि वे मुंह नहीं खोलें।अब देखना यह है कि अनूपपुर जिले में हुए इस भ्रष्टाचार पर से पर्दा कब हटता है।यह तो महज एक उदाहरण है, प्रदेश के कई जिलों में इस तरह के भ्रष्टाचार होते रहते हैं और अफसर आपसी सामंजस्य से भ्रष्टाचार को दबा देते हैं।

आंगनबाड़ियों को नहीं मिल रही माननीयों की गोद

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की मंशानुरूप प्रदेश में एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी कार्यक्रम चल रहा है। इस कार्यक्रम के तहत माननीयों (सांसद-मंत्रियों-विधायकों), जनप्रतिनिधियों, अफसरों को आंगनबाड़ियों को गोद लेना है। लेकिन विडम्बना यह है कि प्रदेश में 230 विधायकों में से मात्र 4 ने ही अभी तक आंगनबाड़ियों को गोद लिया है। इस कारण प्रदेश में एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी कार्यक्रम अधर में लटका हुआ है।

एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी कार्यक्रम का उद्देश्य जनसहयोग से आंगनबाड़ियों को विकसित करना है। इसके तहत गोद लेने वाला व्यक्ति या संस्था बच्चों के लिए खिलौने, शिक्षण सामग्री, अलग से पोषण आहार जैसे फल, ड्राय फ्रूट्स, रंगाई पुताई और फर्नीचर आदि दे सकते हैं। इसके अलावा भूमिहीन आंगनबाड़ियों के लिए जमीन दान कर सकता है या नया आंगनबाड़ी भवन निर्माण करा सकते हैं। गोद लेने के लिए संबंधित व्यक्ति महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारिक पोर्टल पर जाकर एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी में पंजीयन कर सकते हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के सभी सांसदों और विधायकों से एक-एक आंगनबाड़ी गोद लेने को कहा है।

प्रदेश में एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी अभियान में एक भी विधायक ने सहयोग नहीं किया है। जबकि मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष सहित दो मंत्री तथा चार सांसदों ने ही कदम आगे बढ़ाए हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक आंगनबाड़ी बुधनी विधानसभा के माथार को गोद लिया है। मुख्यमंत्री ने इसी दिन कैबिनेट बैठक में मंत्रियों से कहा था कि वे अपने प्रभार के जिलों में जाकर ज्यादा से ज्यादा लोगों को आंगनबाड़ी केंद्र गोद लेने के लिए प्रेरित करें। मुख्यमंत्री ने सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधियों सहित सामाजिक संस्थाओं और उद्योगपतियों के लिए भी आव्हान किया था। बावजूद विधायकों और मंत्रियों ने आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने में दिलचस्पी नहीं दिखाई है।

एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी अभियान को सफल बनाने में माननीयों से आगे प्रदेश के अफसर हैं। जनप्रतिनिधियों में 17 हजार ने सहयोग करने में दिलचस्पी दिखाई है। इनके मुकाबले 26 हजार से अधिक कर्मचारी और अधिकारियों ने आंगनबाड़ी केंद्रों को सहयोग दिया है। अब तक 1 लाख 9 हजार से ज्यादा लोगों के माध्यम से 26 करोड़ से अधिक की राशि जुटाई जाने का दावा किया गया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने साल के शुरुआत में प्रदेश की आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने के लिए एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी अभियान चलाने का निर्णय लिया था। 24 मई को वे स्वयं खिलौने जुटाने के लिए भोपाल की सड़कों में आए थे। पहले दिन एक करोड़ से अधिक का सहयोग मिला था। मुख्यमंत्री ने सीएम कॉन्क्लेव में लिए गए निर्णयों की समीक्षा की थी। इसके अनुसार जानकारी सामने आई है कि समाज के विभिन्न वर्गों के कुल 1,08,691 लोगों द्वारा अब तक कुल राशि 26,72,37,671 रुपए का सहयोग प्रदान किया गया है। वहीं विभाग की जानकारी है कि कुल 23.41 करोड़ की सहायता मिली है। सहयोग करने वालों में सबसे आगे नार्दर्न कोलफील्ड्स है जिसने 3.5 करोड़ में 25 आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण कराने का भरोसा दिया है। इसके बाद एनपीआईसीएल जबलपुर 35.70 लाख की सहायता की।

संचालक महिला एवं बाल विकास डॉ. आरआर भोसले का कहना है कि आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने के लिए विभागीय अधिकारियों के माध्यम से संस्थाओं और अन्य प्रमुख लोगों से संपर्क जारी है। उपलब्ध राशि के उपयोग करने का प्लान तैयार है। सभी 97,135 आंगनबाड़ी केंद्रों को आदर्श केंद्र में बदलने के लिए एनएसएस के छात्रों का सहयोग लिया जाएगा। एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी कार्यक्रम का उद्देश्य जनसहयोग से आंगनबाड़ियों को विकसित करना है। गोद लेने के लिए संबंधित व्यक्ति महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारिक पोर्टल पर जाकर एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी में पंजीयन कर सकते हैं। इसके अलावा 8989622333 पर मिस्ड कॉल भी दे सकते हैं। बच्चों के पोषण आहार के व्यवस्थित वितरण और कुपोषण को दूर करने के लिए आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लें। इसके बाद जिले के सेवाभावियों, एनजीओ, अधिकारियों और पंच-सरपंच तक ने आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेना शुरू कर दिया। कुछ लोगों ने पहले चरण में आंगनबाड़ी गोद लेकर वहां बच्चों के लिए कुर्सियां, खिलौने तथा कपड़े भी वितरित कर दिए। लेकिन बच्चों की दशा सुधारने के लिए मुख्यमंत्री की अपील के बावजूद जिले की पांचों विधानसभाओं के किसी भी विधायक ने अभी तक किसी भी आंगनबाड़ी केंद्र को गोद लेने में रूचि नहीं दिखाई है।

● **लोकेंद्र शर्मा**

कुर्सियां, फर्श और बच्चों को कपड़े दिए

करीब एक हजार लोगों ने अभी तक आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लिया है। इनमें कलेक्टर के अलावा, एसडीएम, तहसीलदार, शासकीय विभागों के प्रमुखों के अलावा अन्य अधिकारी शामिल हैं। विधायकों में नंदिनी मरावी ने एक केंद्र को लिया है। जनप्रतिनिधि, बड़े व्यापारी, उद्योगपति भी इस दिशा में कदम उठा रहे हैं। अब विभाग अन्य लोगों से भी संपर्क में जुटा है ताकि वे भी इन केंद्रों के विकास में अपनी भागीदारी कर सके। एडॉप्ट एन आंगनबाड़ी केंद्र योजना के तहत अब तक एक हजार से ज्यादा केंद्रों को गोद लिया जा चुका है। हम प्रयास कर रहे हैं कि लगभग सभी केंद्रों को इस योजना का लाभ मिले। इसके लिए लोगों से संपर्क किया जा रहा है। आंगनबाड़ी केंद्रों को तीन कैटेगिरी ए, बी और सी में विभावित किया है। एक कैटेगिरी की आंगनबाड़ियों 369 आंगनबाड़ियां, जिनमें स्वयं का भवन, किचिन गार्डन, बच्चों के लिए खेल सामग्री, शुद्ध पेयजल आदि की व्यवस्था है। वहीं बी कैटेगिरी की 1156 आंगनबाड़ियों में कहीं भवन है तो कहीं किराए के कमरों में संचालित हो रही हैं जिनमें पर्याप्त जगह, यहां बुनियादी सुविधाओं की जरूरत है। सी कैटेगिरी की आंगनबाड़ियों के पास न तो जमीन है न स्वयं का भवन है। बच्चों की एक्टिविटी कराने के लिए कोई इंतजाम नहीं हैं। इसलिए विभाग का भी फोकस है कि सी कैटेगिरी की आंगनबाड़ियों को गोद लिया जाए ताकि उनमें सुविधाएं बढ़ सकें। जिले के 219 शासकीय कर्मचारियों, 778 आंगनबाड़ियों को समाजेवियों, व्यापारियों, एनजीओ द्वारा गोद लिया जा सका है।

मप्र विधानसभा चुनाव में भले ही अभी एक साल का समय बाकी है, लेकिन भाजपा और कांग्रेस मिशन 2023 की तैयारियों में जोरदार तरीके से जुट गई है। दोनों पार्टियों का एक ही फोकस है कि किसी तरह प्रदेश में सरकार बनाई जाए। इसके लिए लगातार रणनीति बनाकर काम किया जा रहा है। हालांकि मैदानी जमावट और चुनावी रणनीति में भाजपा कांग्रेस से काफी आगे है। कांग्रेस को उम्मीद है कि 2018 की तरह वह इस बार भी बड़ा उलटफेर कर सकती है। वहीं भाजपा अपने विकास कार्यों के भरोसे सत्ता में वापसी की उम्मीद लगा हुए है।

बूथ की मजबूती पर फोकस...

सूबे में एक साल बाद होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा व कांग्रेस का पूरा फोकस अब बूथ पर हो गया है। भाजपा तो पहले ही बूथ मजबूती के लिए कई तरह के कार्यक्रमों का न केवल आयोजन कर चुकी है, बल्कि उसके छोटे-बड़े सभी तरह के नेता भी मैदानी स्तर पर उतरकर इस अभियान में शामिल हो चुके हैं।

इसके इतर कांग्रेस द्वारा इसके लिए चलाए गए अभियान में अभी तक महज 40 फीसदी ही बूथों तक पहुंच सकी है। खास बात यह है कि इस बार बूथ का जिम्मा दोनों ही दलों द्वारा अपने युवा कार्यकर्ताओं को दिया जा रहा है। इसके तहत भाजयुमो कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें आदिवासी युवाओं को साधने के गुर सिखा रहे हैं तो वहीं युवा कांग्रेस हर बूथ पर युवाओं की टीम बनाने की तैयारी में है। दरअसल सत्ता प्राप्ती में युवाओं की अहम भूमिका हमेशा से ही रही है। इसलिए दोनों ही दलों द्वारा अधिक से अधिक युवाओं को इस काम में लगाया जा रहा है। प्रदेश युवा कांग्रेस का बूथ जोड़ो यूथ जोड़ो अभियान अभी तक प्रदेश के सभी बूथों पर नहीं पहुंच सका है। अब तीन माह में उसे शेष 60 फीसदी बूथों पर इस अभियान को ले जाना होगा। इस मामले में लापरवाह बने हुए जिला अध्यक्षों को राष्ट्रीय बीवी श्रीनिवास ने अल्टीमेटम तक दे दिया है। उधर, युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीवी श्रीनिवास ने भोपाल प्रवास के दौरान 107 विधानसभा क्षेत्रों पर फोकस करते हुए युवा कार्यकर्ताओं को बूथ जोड़ो यूथ जोड़ो अभियान चलाने के गुर भी सिखाए। इससे पहले वे 125 विधानसभा क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को इस तरह का प्रशिक्षण दे चुके हैं। इसके साथ ही उन्होंने इस अभियान की समीक्षा की। समीक्षा बैठक में पता चला कि वे इन 125 विधानसभा पहुंच सकती है। महज 40 प्रतिशत बूथों तक ही यह अभियान चल रहा है। अब तीन महीने के भीतर इस अभियान को लेकर काम करना होगा, नहीं करने वालों पर गाज गिरना तय माना जा रहा है। श्रीनिवास का कहना है कि जो अच्छा काम करेगा, उसे विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी भी बनाया जा सकता है। उनका कहना है कि अगले माह के पहले यह तय कर लेंगे कि मप्र में कितने युवा नेताओं का काम अच्छा है और उन्हें विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए आगे किया जाए। गुजरात और हिमाचल में भी **युवाओं को टिकट** दिया गया है। जो मेहनत करेगा उसे टिकट दिया जाएगा। कमलनाथ और पार्टी सभी जिला अध्यक्षों, युवाओं को अधिक से अधिक टिकट दिए जाने के पक्ष में हैं।

पार्टी सूत्रों ने बताया कि सिवनी का चयन भाजयुमो ने प्रशिक्षण वर्ग के लिए इसलिए किया था क्योंकि यहां प्रशिक्षण कर पार्टी आदिवासी युवाओं को चुनावी दृष्टि से जिला प्रभारी, जिला साधने का जतन करना चाहती है। सिवनी से लगे जिले छिंदवाड़ा, बालाघाट, मंडला आदिवासी बाहुल्य हैं। इसके अलावा बैतूल, डिंडोरी भी अधिक दूर नहीं है। इसलिए सिवनी में प्रशिक्षण कराकर पार्टी द्वारा एक माहौल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यही नहीं बल्कि सिवनी भाजयुमो के प्रदेश अध्यक्ष वैभव पवार का गृह जिला भी है। इसलिए भी आयोजन

मुरली की रणनीति पर चुनावी मैदान में उतरेगी भाजपा

2018 की हार से सबक लेते हुए भाजपा मिशन 2023 के लिए हर स्तर पर रणनीति बनाकर काम कर रही है। पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों से लेकर कार्यकर्ता मिशन फतह की तैयारी में जुटे हुए हैं। पार्टी ने इस बार 200 सीटें जीतने का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को पाने के लिए प्रदेश भाजपा प्रभारी मुरलीधर राव ने रणनीति बनाने के लिए कंटेंट एक्सपर्ट्स की टीम बनाने की कवायद शुरू कर दी है। यह टीम चुनावी मैदान में भाजपा की ब्रांडिंग और विपक्ष की खामियां गिनाने के लिए कंटेंट तैयार करेगी। मिशन 2023 के लिए भाजपा ने सत्ता और संगठन स्तर पर तैयारियां तेज कर दी है। संगठन स्तर पर बैठकें आदि शुरू हो गई हैं तो सरकार की ओर से योजनाओं के क्रियान्वयन की मॉनीटरिंग बढ़ा दी गई है। वहीं प्रदेश भाजपा के प्रभारी मुरलीधर राव एक अलग कंटेंट एक्सपर्ट्स की बड़ी टीम तैयार कर रहे हैं। इसको लेकर गत दिनों प्रदेशभर से चुनिंदा लोगों के साथ प्रारंभिक चर्चा भी की गई। यानि विधानसभा चुनाव के दौरान अब प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव की अपनी टीम भी काम करेगी।

काम नहीं कर रहे पदाधिकारी

मजेदार बात यह है कि कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव हो गया, लेकिन मप्र में ब्लॉक और जिला कांग्रेस अध्यक्षों के नामों का ऐलान नहीं हो पाया, जबकि चुनाव के निर्धारित शेड्यूल के अनुसार प्रदेश में चुनाव की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होना था। अब कहा जा रहा है कि भारत जोड़ो यात्रा के मप्र से गुजरने के बाद ब्लॉक व जिला अध्यक्षों की घोषणा होगी। कांग्रेस के नए ब्लॉक व जिलाध्यक्षों के नामों की घोषणा नहीं होने से जिलों में संगठन का कामकाज प्रभावित हो रहा है। जिला कांग्रेस कमेटियां कोई निर्णय नहीं ले पा रही हैं। आए दिन जिला कांग्रेस कमेटियों को चुनाव की तैयारियों के संबंध में नए-नए दिशा-निर्देश जारी किए जा रहे हैं, चूंकि जिला अध्यक्ष पद पर बने रहने या नहीं बने रहने को लेकर असमंजस की स्थिति में हैं, यही वजह है कि वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशों का पूरे मन से पालन नहीं कर रहे हैं। पदाधिकारी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ संगठन को मजबूत करने के लिए मंडलम, सेक्टर व पोलिंग बूथ के गठन पर सबसे ज्यादा जोर दे रहे हैं, लेकिन जिलाध्यक्षों द्वारा संगठन के काम में रुचि नहीं लेने से यह काम भी ठीक से नहीं हो रहा है। गौरतलब है कि कांग्रेस के संगठन चुनाव की प्रक्रिया अप्रैल से शुरू हुई थी। प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष एवं संगठन प्रभारी चंद्रप्रभाष शेखर का कहना है कि ब्लॉक व जिला कांग्रेस अध्यक्षों की नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी हो गई है। सिर्फ नामों की घोषणा होना बाकी है। चूंकि सभी जिला कांग्रेस कमेटियां भारत जोड़ो यात्रा समेत चुनाव की तैयारियों में लगी हैं, इसलिए संभवतः यात्रा के मप्र से गुजरने के बाद ब्लॉक व जिला अध्यक्षों के नामों की घोषणा की जाएगी।

को भी यहां से जोड़ा जा रहा है।

पिछले माह प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने भाजयुमो के पौधरोपण कार्यक्रम में कहा था कि प्रदेश में पंचायत स्तर पर युवा मोर्चा की टीम का गठन किया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गठित टीम की रिपोर्ट पेश की जाएगी। इस टीम में 7 से 10 युवाओं को पंचायत स्तर पर शामिल किया गया है। इसके साथ ही युवा मोर्चा के आगामी कार्यक्रम भी इसमें वरिष्ठ नेताओं की सहमति के आधार पर तय होंगे, जिसमें केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं को फोकस में रखा जाएगा। गांवों में पार्टी से यूथ को जोड़ने के लिए मोर्चा की अहम भूमिका है। इसलिए जिन मंडलों और जिलों में यूथ का परफार्मेंस कमजोर है, वहां इसे मजबूत करने पर जोर दिया जाएगा।

विधानसभा चुनाव को देखते हुए कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ संगठन को मजबूत करने की कवायद में जुटे हुए हैं। लेकिन राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के कारण ब्लॉक और जिला अध्यक्षों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है। बताया जाता है कि पार्टी की कोशिश है कि पहले राहुल गांधी की यात्रा को सफल बनाया जाए, उसके बाद संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया जाए। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि नवंबर के अंतिम दिनों या फिर दिसंबर में ब्लॉक और जिला अध्यक्षों की नियुक्ति की जा सकती है।

गौरतलब है कि प्रदेश में कांग्रेस का संगठन भाजपा की अपेक्षा कमजोर है। ऐसे में कमलनाथ का पूरा फोकस संगठन को मजबूत करने पर है। इसके लिए कांग्रेस ने पहली बार 28 प्रकोष्ठ गठित किए हैं। ये सभी प्रकोष्ठ पीसीसी चीफ कमलनाथ और उनकी कोर टीम से चर्चा कर तहसील और गांवों तक पैठ बना रहे हैं ताकि आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनाव के हिसाब से संगठन को मजबूत बनाया जा सके। इसी तरह प्रदेश अध्यक्ष चाहते हैं कि ब्लॉक और जिलाध्यक्षों को भी सक्रिय किया जाए।

प्रदेश में विधानसभा चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं और कांग्रेस के नए ब्लॉक और जिला अध्यक्षों के नामों की घोषणा लगातार टलती जा रही है। फिलहाल इनके नामों की घोषणा दिसंबर तक होने के आसार नहीं हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के मप्र से गुजरने के बाद ब्लॉक और जिलाध्यक्षों की घोषणा की जाएगी। भारत जोड़ो यात्रा नवंबर के आखिर में मप्र में प्रवेश करेगी और दिसंबर के शुरुआती दिनों में मप्र से होते हुए राजस्थान पहुंचेगी। इस तरह करीब दो महीने बाद कांग्रेस के ब्लॉक व जिला अध्यक्षों के नामों की घोषणा होने की संभावना है। पहले कहा गया था कि पंचायत व नगरीय निकाय चुनाव के बाद ब्लॉक व जिला अध्यक्षों के नाम की घोषणा होगी। फिर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के बाद ब्लॉक व जिला अध्यक्ष के नामों की घोषणा होने की बात कही गई।

मप्र कांग्रेस में व्यापक बदलाव की तैयारी की जा रही है। प्रदेशाध्यक्ष कमलनाथ ने इसके संकेत दे दिए हैं। सभी 52 जिलों के संगठन प्रभारी बदलने के बाद कमलनाथ अब जिलों के अध्यक्षों को बदलने के मूड में दिखाई दे रहे हैं। पार्टी सूत्रों के अनुसार जिन पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों की परफॉर्मेंस संतोषजनक नहीं है उन्हें बदला जा सकता है। बताया जाता है कि करीब 25 से 30 जिलाध्यक्ष प्रदेश अध्यक्ष के निशाने पर हैं। इनकी जगह पार्टी परिणाम देने वाले और मेहनती कार्यकर्ताओं को मौका देगी। पीसीसी के सूत्रों के अनुसार आधे जिलों के कांग्रेस अध्यक्षों को बदला जा सकता है। इनमें निष्क्रिय जिलाध्यक्षों के साथ ही ऐसे जिलाध्यक्ष भी शामिल हैं जिन्होंने निकाय चुनाव में पार्टी के साथ गड़बड़ी की। ऐसे कांग्रेस नेताओं की छुट्टी तय है।

दरअसल प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर कांग्रेस सक्रिय हो चुकी है। मप्र कांग्रेस ने संगठन को मजबूती देने की कवायद शुरू कर दी है। हाल ही में नगरीय निकाय चुनाव में 5 नगर निगमों में कांग्रेस को मिली कामयाबी से कार्यकर्ताओं के हौंसले भी बुलंद हुए हैं। इसके बाद कमलनाथ ने प्रदेश में कांग्रेस को जमीनी स्तर पर खड़ा करने की पूरी जिम्मेदारी खुद ले ली है। वे विधायकों से जिलाध्यक्षों का प्रभार भी वापस ले रहे हैं। उनके स्थान पर पार्टी के फुल टाइम वर्कर को कांग्रेस जिलाध्यक्ष बनाया जा रहा है। कांग्रेस के निष्क्रिय **जिलाध्यक्षों की छुट्टी होगी।** पीसीसी सूत्रों के मुताबिक करीब 25 से 30 जिलों के अध्यक्षों को बदला जा सकता है। इनमें निकाय चुनाव में गड़बड़ी करने वाले जिलाध्यक्ष भी शामिल हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ 22 विधायकों द्वारा भाजपा का दामन थाम लेने के बाद कांग्रेस में संगठन की कमान विचारधारा पर अडिग रहने वाले कार्यकर्ताओं के हाथ में देने की तैयारी है। विधानसभा चुनाव को देखते हुए बूथ से लेकर ब्लॉक और जिलास्तर के संगठन की कमान जिला प्रभारियों तथा सह प्रभारियों के हाथ में दी जाएगी। पीसीसी ने भाजपा के साथ गलबहियां डाल रहे कांग्रेस नेताओं की जानकारी भी मंगाई है। ऐसे नेताओं पर लगाम लगाई जाएगी।

● कुमार राजेन्द्र

चोरी हो गई मेजरमेंट बुक

एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी की तरह लोक निर्माण विभाग में करोड़ों रुपए के सुरक्षा निधि (सिक्योरिटी डिपॉजिट) घोटाले की स्थिति बन गई है। यानी पहले तो लोक निर्माण विभाग में अधिकारी ठेकेदारों से वर्क ऑर्डर के लिए सुरक्षा निधि जमा करवाते थे और उसे वर्क आर्डर के साथ ही लौटा देते थे। विभाग में हुए इस घोटाले की जांच ईओडब्ल्यू को सौंपी गई है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि जांच शुरू होने से पहले ही करोड़ों रुपए के सिक्योरिटी डिपॉजिट घोटाले से जुड़ी करीब 200 मेजरमेंट बुक की 12 दफ्तर स्थित पीडब्ल्यूडी (ईएंडएम) ऑफिस से चोरी हो गई है।

जिस तरह चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया है उससे यह चोरी भी सुनियोजित षड्यंत्र लग रही है। तथाकथित चोर लाखों रुपए के सामान के बजाय अलमारी से छांटकर सिर्फ घोटाले से जुड़ी मेजरमेंट बुक ही ले गए। खास बात यह है कि घोटाले का खुलासा होने के बाद आगे की कार्रवाई का जिम्मा ईओडब्ल्यू को सौंपा जा चुका है। इसी घोटाले से जुड़ी 200 मेजरमेंट बुकों की रहस्यमयी चोरी हो गई है। ईओडब्ल्यू के डीजी अजय शर्मा का कहना है कि पीडब्ल्यूडी में सिक्योरिटी डिपॉजिट घोटाले संबंधी विभागीय जांच सहित फाइल आई है, जिसका परीक्षण करने के बाद एफआईआर दर्ज होगी। कब से शुरू हुआ, कौन-कौन शामिल हैं आदि की जांच होगी।

बीते दिनों दर्जनभर ठेकेदारों की करीब ढाई करोड़ रुपए की **सिक्योरिटी डिपॉजिट** इंजीनियर और बाबुओं ने अपने रिश्तेदार चार ठेकेदारों के खातों में ट्रांसफर कर दी। इसकी भनक नवंबर 2021 में लगने के बाद ठेकेदारों ने शिकायत की, जिसके बाद शुरू हुई जांच में एक करोड़ रुपए से ज्यादा हड़पने का खुलासा हो चुका है। इसके बाद यह मामला प्रमुख सचिव पीडब्ल्यूडी नीरज मंडलोई ने ईओडब्ल्यू को सौंप दिया गया है। वहीं इसी मामले से जुड़ी करीब 200 मेजरमेंट बुक की तथाकथित चोरी की सूचना कार्यपालन यंत्री अरविंद चौहान ने टीटी नगर थाने में बीते सोमवार को दी, जिसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर जांच की। हालांकि इस मामले में टीटीनगर थाना प्रभारी चैन सिंह रघुवंशी का कहना है कि मौका मुआयना में चोरी होने की पुष्टि नहीं हुई है। दरवाजे, खिड़की सलामत हैं। ज्ञात हो कि टेंडर मंजूरी के बाद ठेकेदार से सिक्योरिटी डिपॉजिट विभाग जमा करवाता है। यह राशि ठेका कार्य पूर्ण होने के एक साल बाद ठेकेदार के आवेदन की जांच करके भुगतान आदेश जारी होता है। इस राशि को वास्तविक ठेकेदारों के बजाय सिर्फ चार चहेते ठेकेदारों के खाते में ट्रांसफर की गई, जिनमें सोनी इलेक्ट्रिकल्स, सागर एसोसिएट्स, विश्वकर्मा इंफ्राटेक और पलाश इलेक्ट्रिकल्स हैं।

नाराज ठेकेदारों का खुलासा

इस मामले का खुलासा भी विभाग से नाराज चल रहे ठेकेदारों द्वारा ही किया गया है। दरअसल विभाग में कुछ ठेकेदारों की अफसरों से मिलकर मॉनोपाली चलाई जा रही है, जिसकी वजह से दूसरे ठेकेदारों को काम ही नहीं मिल पाता है। यही नहीं, चहेते ठेकेदारों को छोड़ दिया जाए तो अन्य को काम मिल भी जाता है, तो उन्हें तरह-तरह से इतना प्रताड़ित किया जाता है कि वे बीच में ही काम छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं या फिर उनका भुगतान अटका दिया जाता है। इससे परेशान होकर कुछ ठेकेदारों द्वारा विगत कुछ समय पहले इंजीनियर और बाबुओं द्वारा लेनदेन कर कुछ ठेकेदारों की एफडी वापस कर देने की शिकायतें लोकायुक्त और ईओडब्ल्यू के अलावा मंत्री और ईएनसी ऑफिस में भी की गई थी। इन्हीं शिकायतों के आधार पर अब जांच शुरू कर दी गई है। खास बात यह है कि शुरुआती जांच में यह शिकायतें सही पाई गई हैं। इन शिकायतों में सोनी इलेक्ट्रिकल्स, सागर एसोसिएट, विश्वकर्मा इन्फ्रास्ट्रक्चर और पलाश इलेक्ट्रिकल्स फर्म की एफडी वापस किए जाने के तथ्य सामने आए हैं।

इसकी विभागीय जांच के बाद तत्कालीन प्रभारी कार्यपालन यंत्री वीके मनवानी, संभागीय लेखाधिकारी एके पाठक, वरिष्ठ लेखा लिपिक उल्लास मजूमदार, कम्प्यूटर ऑपरेटर गगन रजक को दोषी माना गया है।

पीडब्ल्यूडी का शायद ही ऐसा कोई बड़ा प्रोजेक्ट हो जो कमियों, खामियों और भ्रष्टाचार की वजह से चर्चा में नहीं रहता हो, फिर भी विभाग के अफसर अपनी कार्यप्रणाली सुधारने की जगह खेला करने के नए-नए तरीके खोजने में पीछे नहीं रह रहे हैं। इसी तरह के भ्रष्टाचार का यह नया मामला सामने आया है, जिसमें विभाग के अफसर, बाबू और ठेकेदार मिलकर बड़ा खेल कर रहे थे। इस तरह का खेल भोपाल संभाग क्रमांक-1 के ऑफिस में कई सालों से किया जा रहा है। इस दफ्तर में पूरा खेल इंजीनियर, बाबू और ठेकेदारों द्वारा मिलकर करोड़ों की सुरक्षा गारंटी राशि उन्हें वर्क ऑर्डर के बाद वापस करने के रूप में किया जा रहा है। संदेह तो यह भी जताया जा रहा है कि इस तरह का खेल प्रदेश में अन्य विभाग के दफ्तरों में भी किया जा रहा होगा। दरअसल, लोक निर्माण विभाग में निर्माण व बिजली जैसे काम कराने के लिए ठेकों में ठेकेदार से 5 फीसदी राशि धरोहर राशि के रूप में जमा कराई जाने का नियम है। यह राशि वर्क ऑर्डर की राशि की 5 फीसदी होती है। इसके पीछे की वजह यह है कि अगर ठेकेदार द्वारा काम में गड़बड़ी की जाती है या फिर वह काम आधा अधूरा छोड़ देता है, तो इस राशि को जप्त कर काम को पूरा कराया जा सके। यह राशि काम पूरा होने के बाद भी गारंटी अवधि तक विभाग के पास जमा रहती है। लेकिन भोपाल संभाग क्रमांक-1 में वर्क ऑर्डर के साथ ही यह राशि ठेकेदार को लौटाने का खेल किया जा रहा है। पीडब्ल्यूडी के ईएनसी नरेंद्र कुमार का कहना है कि सिक्योरिटी डिपॉजिट में गड़बड़ी की पुष्टि के बाद मामला ईओडब्ल्यू को दिया गया है। अब चोरी की सत्यता के बारे में जांच करवाएंगे। इस मामले से जुड़े सारे इंजीनियर और स्टाफ को भी हटाया जाएगा।

● जितेंद्र तिवारी

करीब 17 साल पहले सूचना अधिकार अधिनियम 2005 को लागू किया गया था। इसका उद्देश्य है कि आमजन सरकारी योजनाओं-परियोजनाओं के बारे में कोई भी जानकारी पा सकते हैं। लेकिन देखा यह जा रहा है कि सरकार द्वारा जनता को दिए गए इस अधिकार का अधिकारी उल्लंघन करने लगे हैं। आलम यह है कि देशभर में आरटीआई एक्ट का उल्लंघन किया जा रहा है। आरटीआई एक्ट के उल्लंघन के मामले में कर्नाटक पहले स्थान पर है, वहीं मप्र दूसरे स्थान पर। आलम यह है कि मप्र में औसतन रोजाना एक अधिकारी दंडित किया जा रहा है। अफसरों पर पेनॉल्टी लगाने के मामले में कर्नाटक देशभर में अव्वल है। कर्नाटक ने 1265 अफसरों पर 1.04 करोड़ की पेनॉल्टी एक साल में लगाई है। हरियाणा 161 अफसरों पर 38.81 लाख के साथ मप्र के बाद तीसरे स्थान पर है।

सूचना का अधिकार आजादी की लड़ाई का कानून है, देश में आदर्श लोकतंत्र की स्थापना का कानून है, यह कानून आम जनता का मजबूत हथियार है। इस कानून के माध्यम से आमजन बड़े से बड़े कार्यालय में आवेदन देकर सूचना मांग सकते हैं। सूचना की मांग करने वाले आरटीआई का अर्थ सूचना प्राप्त करने का राइट टू इनफॉर्मेशन समझते हैं जबकि सूचना देने वाला तबका इसका मतलब राइट टू इग्नोर समझता है, जो सरासर गलत है। बीते एक साल में आरटीआई एक्ट के उल्लंघन पर मप्र के 222 अफसरों पर 47.50 लाख रुपए की पेनॉल्टी राज्य सूचना आयोग ने लगाई है।

आरटीआई एक्ट यानी सूचना का अधिकार अधिनियम के उल्लंघन के मामले में मप्र के अधिकारी भारत में दूसरे नंबर पर आ गए हैं। यहां जानकारियों को छुपाने का काम किया जाता है। नागरिकों के सूचना के अधिकार का हनन किया जा रहा है। इसका खुलासा सरकारी रिकॉर्ड से हुआ है। नंबर वन पर कर्नाटक है। दूसरे नंबर पर मप्र जहां राज्य सूचना आयोग द्वारा 222 अधिकारियों को जानकारी छुपाने के अपराध में दंडित किया गया। राज्य सूचना आयोग द्वारा यह कार्रवाई 1 जुलाई 2021 से 30 जून 2022 के बीच की गई। यानी साल में हर रोज (प्रति कार्य दिवस) एक से ज्यादा अधिकारी को दंडित किया गया। सरकारी तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए काम करने वाली संस्था सतर्क नागरिक संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले एक साल में मप्र में आरटीआई में जानकारी नहीं दिए जाने की 9005 शिकायतें और अपीलों का निराकरण किया गया हैं। वहीं इस अवधि में 8413 नई सेकंड अपीलें भी दायर हुई हैं। वर्तमान में आरटीआई की 5929 सेकंड अपीलें राज्य सूचना आयोग में लंबित हैं।

मप्र में राज्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा की जाती है। राज्य सूचना आयोग में सूचना आयुक्त के कुल 10 पद हैं। वर्तमान में मुख्य सूचना आयुक्त एके शुक्ला के अलावा तीन सूचना आयुक्त विजय मनोहर तिवारी, अरुण कुमार पांडेय और राहुल सिंह कार्यरत हैं। यानी 7 पद खाली हैं। यह सरकारी स्कूलों में शिक्षक के पद नहीं हैं जहां विद्यार्थियों की संख्या घटती जा रही है बल्कि राज्य सूचना आयोग है, जहां 30 लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। नवंबर 2021 में सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिए आवेदन बुलाए थे। 121 दावेदारों ने आवेदन किए। इनमें रिटायर्ड आईएएस, आईपीएस, कई रिटायर्ड जज से लेकर पत्रकार भी शामिल हैं। लेकिन आवेदन जमा होने के पूरे एक साल बाद भी कोई नई नियुक्ति नहीं हो सकी है। राज्य सूचना आयोग के अवर सचिव कृष्णकांत खरे का कहना है कि नियुक्ति प्रक्रिया पूरी तरह से जीएडी के अधीन हैं। इसमें आयोग का कोई दखल नहीं हैं। वर्तमान में मुख्य सूचना आयुक्त एके शुक्ला के अलावा तीन सूचना आयुक्त विजय मनोहर तिवारी, अरुण कुमार पांडेय और राहुल सिंह कार्यरत हैं। सतर्क नागरिक संगठन के मुताबिक मप्र में अपीलों के निराकरण की रफ्तार को देखा जाए, तो मौजूदा अपीलों के निपटारे में अभी 8 महीने का वक्त लगेगा। नई अपीलों की सुनवाई का नंबर इनके बाद ही आ सकेगा।

भोपाल के एक मामले में लोक सूचना अधिकारी ने जानकारी की फोटोकॉपी के खर्च के नाम पर आवेदक से 40 हजार जमा करा लिए। सूचना आयुक्त ने अफसर पर 25 हजार रुपए जुर्माना ठोंका और 40 हजार रुपए भी वापस करवाए। उत्तराखंड में विद्युत विभाग ने सूचना देने में 30 दिन की जगह 4 महीने लगा दिए। इस पर संबंधित अफसर का तर्क था कि कार्यालय में रंग रोगन होने के कारण आवेदन इधर-उधर रख दिया गया। उन पर 5 हजार रुपए जुर्माना लगा।

● विकास दुबे

आरटीआई एक्ट के उल्लंघन में मप्र दूसरे नंबर पर

सूचना देने से मना करने के केस निपटाने में 24 साल तक लग रहे

देश में हर साल तकरीबन 40 से 60 लाख आरटीआई दाखिल हो रही हैं यानी हर मिनट लगभग 11 आवेदन। मगर चौंकाने वाली बात ये है कि सूचना देने से इनकार करने के मामले निपटाने में कई-कई साल लग रहे हैं। मसलन, पश्चिम बंगाल में अगर 1 जुलाई 2022 को ऐसी शिकायत की जाए, तो उस पर फैसला आने में 24 साल 3 महीने लगेंगे। जबकि, महज एक साल पहले तक यह अवधि 4 साल 7 महीने ही थी। सतर्क नागरिक संगठन द्वारा सूचना आयुक्तों के प्रदर्शन को लेकर जारी ताजा रिपोर्ट में ये आंकड़े सामने आए हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह ये है कि पर्याप्त स्टाफ नहीं होने से शिकायतों का अंबार बढ़ता जा रहा है। मप्र और राजस्थान में स्थिति कुछ बेहतर है, फिर भी 8-9 महीने इंतजार करना पड़ेगा। आरटीआई के तहत हर राज्य सूचना आयोग में एक मुख्य सूचना आयुक्त व 10 तक सूचना आयुक्त होने चाहिए। महाराष्ट्र में मुख्य सूचना आयुक्त समेत 5 का स्टाफ है। केंद्रीय सूचना आयोग में दिसंबर 2019 में 4 पद खाली थे। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से 3 महीने में भरने को कहा था, लेकिन अब तक अमल नहीं हुआ। आरटीआई में सूचना न देने की जितनी शिकायतें लंबित हैं और जिस रफ्तार से निपटाई जा रही हैं, उस हिसाब से 1 जुलाई 2022 की शिकायत निपटाने में पश्चिम बंगाल में 24 साल, 3 माह लगेंगे।

> मप्र में 2005 से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि को लाभकारी बनाने के लिए प्रयास शुरू किए। इसके तहत उनका सबसे अधिक फोकस सिंचाई व्यवस्था के विस्तार पर रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि आज प्रदेश के लगभग हर क्षेत्र में नहरों का जाल बिछा हुआ है। लेकिन अफसरों की भर्राशाही के कारण कई क्षेत्रों में पानी नहीं पहुंच रहा है।

नहीं मिला सिंचाई का पानी

किसान की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी

सिंचाई क्षमता में तेजी से बढ़ोत्तरी होने पर राज्य सरकार को दोहरा फायदा है। एक ओर इससे सिंचाई बढ़ने पर किसान की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी, दूसरी ओर नर्मदा जल के वर्ष-2034 तक उपयोग करने के डेडलाइन में भी फायदा होगा। सरकार इस सिंचाई क्षमता उपयोग के डाटा को नर्मदा ट्रिब्यूनल में भी पेश कर पाएगी। इस कारण इस पर और तेजी से काम हो रहा है। वर्तमान में करीब 9 हजार करोड़ की सिंचाई परियोजनाएं शुरू की गई हैं। इनमें 7 हजार करोड़ की परियोजनाएं तो वर्ष-2021 के दौरान ही शुरू की गई हैं। इसके अलावा आगामी सालों में करीब 8 हजार करोड़ की परियोजनाएं और शुरू होंगी। करीब 3 हजार करोड़ की परियोजनाओं में विभिन्न स्तर पर शिकायतें हैं। इनमें अधिकतर मध्यम परियोजनाएं शामिल हैं। सरकार ने आगे और परियोजनाओं के लिए केंद्रीय मदद की भी तैयारी की है। इसके लिए जल्द ही अफसरों का एक दल बजट की मांग को लेकर केंद्रीय मंत्रालय जाएगा।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मप्र को पूर्णत: सिंचित बनाना चाहते हैं। इसके लिए प्रदेशभर में सिंचाई परियोजनाओं को तेजी से आकार दिया जा रहा है। लेकिन रबी मौसम में इंजीनियरों की लापरवाही के कारण किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। जानकारी के अनुसार प्रदेश में रबी मौसम के दौरान 31.70 लाख हेक्टेयर में ही किसानों को सिंचाई के लिए पानी मिल सका। जबकि करीब 65 हजार हेक्टेयर में टेल तक पानी नहीं पहुंचने से किसानों को परेशानी उठानी पड़ी। इसे देखते हुए जल संसाधन विभाग ने इंजीनियरों की खिंचाई करते हुए रिपोर्ट तलब की है। सबसे ज्यादा 22,314 हेक्टेयर में सिंचाई इंदौर ताप्ती कछार में नहीं हो सकी।

जानकारी के अनुसार मप्र में जल संसाधन विभाग द्वारा वर्ष 2021-22 तक 35.83 लाख हेक्टेयर में सिंचाई क्षमता विकसित की गई है। इसके तहत किसानों को खरीफ फसलों के लिए 2.78 लाख हेक्टेयर तथा रबी फसलों के लिए 31.70 लाख हेक्टेयर में ही सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराया जा सका। इसके अलावा ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए 89 हजार हेक्टेयर में मूंग की फसल के लिए पानी दिया गया है। रबी फसलों में 65 हजार हेक्टेयर में टेल तक पानी नहीं पहुंचने से एसीएस जल संसाधन ने अफसरों की खिंचाई की है। बताया जाता है कि मार्च 2022 तक जल संसाधन के डैम, तालाब, बैराज आदि से 33.66 हेक्टेयर में ही सिंचाई हो सकी है। प्रदेश में कई क्षेत्र ऐसे हैं जहां सिंचाई के लिए पानी नहीं मिल पा रहा है। रायसेन के ग्राम हरसिली के किसान अजब सिंह का कहना है कि मेरा खेत अन्य खेतों से नीचे है और वहां तक नहर नहीं पहुंची है। आसपास के खेतों में नहर से सिंचाई का पानी मिल रहा है, लेकिन हमारे खेत तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। इस संबंध में कई बार सिंचाई विभाग में शिकायत की, लेकिन कोई निराकरण नहीं होने पर खेत में ही नलकूप खुदवाना पड़ा। वहीं शमशाबाद के किसान इरफान जाफरी का कहना है कि मेरे ही खेत नहीं, बल्कि आसपास के किसानों के खेत गांव के किनारे आखिरी में होने की वजह से टेल तक नहरों से पानी नहीं मिल पाता है। कई बार तो मोटर लगाकर पानी लेना पड़ता है। इस बारे में कई बार इंजीनियरों से शिकायत की गई, मगर समस्या हल नहीं हुई। जल संसाधन विभाग के अपर सचिव वीएस टेकाम का कहना है कि प्रदेश के विभिन्न कछारों में 2022 में रबी फसलों के दौरान 65 हजार हेक्टेयर में कम सिंचाई होने के मामले की रिपोर्ट चीफ इंजीनियरों से तलब की गई है।

मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार राज्य सरकार ने वर्ष-2023, 2025 और 2027 तक का तीन चरण का सिंचाई प्लान तैयार किया है। इसमें 31 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता को बढ़ाकर 53 लाख हेक्टेयर तक किया जाएगा। इससे प्रदेश लगभग पूरी तरह सिंचित क्षेत्र बन जाएगा। 2023 तक आठ लाख हेक्टेयर क्षमता विकसित की जाएगी। इसके लिए 9000 करोड़ की परियोजनाओं को शुरू कर दिया गया है, ताकि दिसंबर 2023 तक आते-आते तय सिंचाई क्षमता पाई जा सके। जानकारी के अनुसार आत्मनिर्भर मप्र के लिए मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को टारगेट बेस काम दिया है।

प्रदेश में जब से भाजपा की सरकार बनी है सिंचाई क्षमता साल दर साल बढ़ती जा रही है। इस कारण सरकार ने प्रदेश में सिंचाई क्षमता को चुनाव कैम्पेन में भी रखना तय किया है, क्योंकि कांग्रेस शासन से इसकी तुलना में बेहद ज्यादा वृद्धि हुई है। वर्ष 2003 में प्रदेश में महज 6.20 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता थी, जो अब बढ़कर 31.70 लाख हेक्टेयर तक हो गई है। इसमें दोगुना वृद्धि के लिए आगे प्लान है। इस कारण सिंचाई क्षमता को सरकार बड़ी उपलब्धि मानती है। प्रदेश में 2007-08 में 7.85 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता थी जो 21-22 में 31.70 लाख हेक्टेयर हो गई है। वहीं दिसंबर 2027 में 53 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता करने का लक्ष्य तय किया है।

● **राजेश बोरकर**

बिजली कंपनियों को रोजाना लग रही 35 करोड़ की चपत

मप्र देश में सबसे अधिक बिजली उत्पादन करने वाले राज्यों में शामिल है। वहीं प्रदेश में बिजली चोरी भी रिकॉर्ड स्तर पर हो रही है। प्रदेश के बिजली कंपनियों ने बिजली चोरी रोकने के लिए कई कार्ययोजनाएं बनाई हैं और तमाम तरह के दावे किए हैं, लेकिन बिजली चोरी रोक नहीं पा रही हैं। इस कारण प्रदेश की बिजली कंपनियों को रोजाना तकरीबन 35 करोड़ रुपए की चपत लग रही है।

मप्र में राजधानी भोपाल हो या फिर प्रदेश का दूर दराज का इलाका, बिजली चोरी निर्वाध रूप से हो रही है। इसका प्रभाव यह पड़ा है कि मप्र की तीनों बिजली वितरण कंपनियां बिजली चोरी रोकने और बिलों की वसूली में उप्र, बिहार, छत्तीसगढ़ से भी बहुत पीछे हैं। इस कारण प्रदेश की इन कंपनियों को सालभर में रोजाना करीब 35 करोड़ का नुकसान हो रहा है। इसका असर हमारे बिजली बिलों पर भी पड़ता है। मप्र में बिजली की लागत और वसूली का अंतर 1.23 रुपए है। यह 27 बड़े और छोटे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुकाबले बहुत ज्यादा है। हालत यह है कि लागत और वसूली का मप्र में यह अंतरराष्ट्रीय औसत 0.71 रुपए से भी अधिक है।

पावर फाइनेंस कारपोरेशन की ताजी रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है। इस अंतर के मामले में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मप्र 28वें नंबर पर है। छत्तीसगढ़ जैसे छोटे राज्य में यह अंतर सिर्फ 0.06 रुपए यानी छह पैसे प्रति यूनिट है। बिजली कंपनी के रिटायर्ड एडि. चीफ इंजीनियर राजेंद्र अग्रवाल बताते हैं राज्य सरकार जो बिजली मुफ्त देती है और बकाया माफ करती है, उस सब्सिडी के रूप में कंपनियों के सरकार पर 24 हजार करोड़ बकाया हैं। सरकार ने 255.8 करोड़ 40 किस्तों में देने का निर्णय लिया है। इसमें देरी से तीन साल में ही बिजली 5.25 प्रतिशत महंगी हुई। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर का कहना है कि वित्तीय संसाधनों के अनुरूप बजट तय किया जाता है। कल्याणकारी योजनाओं के तहत किसानों और गरीबों को बिजली के मामले में सब्सिडी दी जाती है। बिजली कंपनियों को भी हम समय पर यह भुगतान करते हैं, कभी-कभी इसमें थोड़ा विलंब हो जाता है।

प्रदेश में बिजली चोरी रोकने और अवैध बिजली कनेक्शन पर अब तक लगाम नहीं लग सकी है। प्रदेश के ज्यादातर जिलों में धड़ल्ले से बिजली चोरी हो रही है। अप्रैल-मई-जून के आंकड़ों के मुताबिक, राज्य में भिंड जिला बिजली चोरी के मामले में अव्वल है। यहां सबसे ज्यादा 65.23 प्रतिशत बिजली चोरी हुई है।

बिजली कंपनी का नियम बना लोगों की गले की फांस

विद्युत वितरण विभाग की मनमानी से इन दिनों उपभोक्ता खासे परेशान हैं। एक तो कई-कई महीने तक मीटर रीडिंग नहीं हो रही है। इसके बाद भी अनाप-शनाप बिजली बिल भेजा रहा रहा है। सुधार के लिए उपभोक्ता बिजली ऑफिस के चक्कर लगाने को मजबूर हैं। दरअसल, बिजली कंपनी का एक नियम लोगों की गले की फांस बन गया है। बिजली बिलों से जुड़ी शिकायतों का समाधान जूनियर इंजीनियर (जेई), असिस्टेंट इंजीनियर (एई) स्तर पर होता था। जून से आला अफसर नया नियम लाए। यह जुलाई से प्रभावी हुआ। इसमें कहा गया, बिल संबंधी निराकरण अधीक्षण इंजीनियर (एसई) स्तर पर होगा। जेई, एई के पास आने वाली शिकायतों के समाधान के लिए एसई से अप्रूवल लेना होगा। यहीं से लोगों का संघर्ष शुरू हो गया। अंचल में ग्रामीणों को बिल सुधार कराने या अन्य समस्याओं के निराकरण के लिए 50 से 100 किलोमीटर दूर एसई दफ्तर जाना पड़ रहा है। इसके बावजूद उनकी समस्याएं दूर नहीं हो रहीं। आला अफसरों का कहना है, इस फॉर्मूले से राजस्व बढ़ा है। सीहोर जिले के नसरुल्लागंज में किराना व्यवसायी अजय कुमार सोनी भी नए नियम के बाद अफसरों के बीच चकरघिन्नी बने हुए हैं। वे बताते हैं, घर का तीन माह का बिल 27 हजार आया। पहले 150-200 यूनिट की दर से 500 से 1000 रुपए आता था। सुधार के लिए महीनों से चक्कर लगाते थक गया, समाधान नहीं हुआ। जेई कहते हैं- नोटशीट बनाकर भेजी है। कंपनी के लोग घर की लाइट काट गए। रीवा जिले के गोबिंदगढ़ के योगेंद्र चौधरी के घरेलू कनेक्शन का जून में 40 हजार रुपए का बिल आया।

बिजली थाने और ईनाम देने का प्रयोग भी बिजली चोरी रोकने में नाकामयाब साबित हुआ है। प्रदेशभर में बिजली चोरी के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। भोपाल उत्तर शहर में 46.79 प्रतिशत बिजली की चोरी हुई है। भोपाल सिटी (साउथ) में 35.39 प्रतिशत बिजली की चोरी हुई है। भोपाल सिटी पूर्व में 49.47 प्रतिशत, भोपाल सिटी पश्चिम में 27.57 प्रतिशत, भोपाल कोलार क्षेत्र में 38.74 प्रतिशत बिजली की चोरी की गई है। जानकारी के मुताबिक, हरदा में 53.50 प्रतिशत, रायसेन में 54 प्रतिशत, ग्वालियर शहर में 50.43 प्रतिशत, मुरैना सर्किल में 58.68 प्रतिशत, भिंड में 65.23 प्रतिशत बिजली की चोरी हुई है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारी का कहना है कि कंपनी के वितरण के तहत 4 संभाग आते हैं। इसमें कई जिले ऐसे हैं, जहां लगातार बिजली चोरी के मामले बढ़ रहे हैं। उनमें भिंड और मुरैना जिला सबसे आगे हैं। इस चोरी को कई प्रकार से रोकने की कोशिश की जा रही है।

कंपनी के सीनियर पब्लिसिटी ऑफिसर, मनोज द्विवेदी ने बताया कि बिजली चोरी रोकने के लिए आर्म्ड केबल डाली जा रही है। ऑटो कट ट्रान्सफर का प्रयोग नर्मदापुरम, सीहोर में किया जा रहा है। दोनों जिलों में प्रयोग सफल होने पर भिंड, मुरैना, ग्वालियर में भी आर्म्ड ट्रांसफार्मर लगाए जाएंगे। अवैध बिजली कनेक्शन लेने वालों के खिलाफ निरीक्षण कर कार्रवाई भी की जा रही है। इसमें विभिन्न धाराओं के तहत जुर्माने का भी प्रावधान है। साथ ही, बिजली चोरी के आरोपी को एक साल जेल भी हो सकती है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में अवैध बिजली कनेक्शन और बिजली चोरी रोकने के लिए विद्युत वितरण कंपनियों ने नया प्रयोग किया था। इसके तहत 'बिजली चोरी पकड़ाओ और ईनाम पाओ' योजना की शुरुआत की थी। इसके लिए विजिलेंस टीम तैयार की गई थी। शिकायत करने वालों की पहचान भी गुप्त रखने की बात कही गई थी। बिजली विभाग का यह प्रयोग भी नाकाफी साबित हुआ। बिजली चोरी रोकने के लिए अलग से बिजली थाने बनाने का प्रयोग भी सफल नहीं हो सका है। अब तक प्रदेशभर में धड़ल्ले से बिजली चोरी जारी है। बिजली चोरी होने से बिजली विभाग को हर बार करोड़ों का नुकसान भी उठाना पड़ रहा है।

● राकेश ग्रोवर

मप्र देश में सबसे अधिक बिजली उत्पादन करने वाले राज्यों में शामिल है। वहीं प्रदेश में बिजली चोरी भी रिकॉर्ड स्तर पर हो रही है। प्रदेश के बिजली कंपनियों ने बिजली चोरी रोकने के लिए कई कार्ययोजनाएं बनाई हैं और तमाम तरह के दावे किए हैं, लेकिन बिजली चोरी रोक नहीं पा रही है। इस कारण प्रदेश की बिजली कंपनियों को रोजाना तकरीबन 35 करोड़ रुपए की चपत लग रही है। मप्र में राजधानी भोपाल हो या फिर प्रदेश का दूरदराज का इलाका, बिजली चोरी निर्बाध रूप से हो रही है।

हर साल 17% बिजली बर्बाद

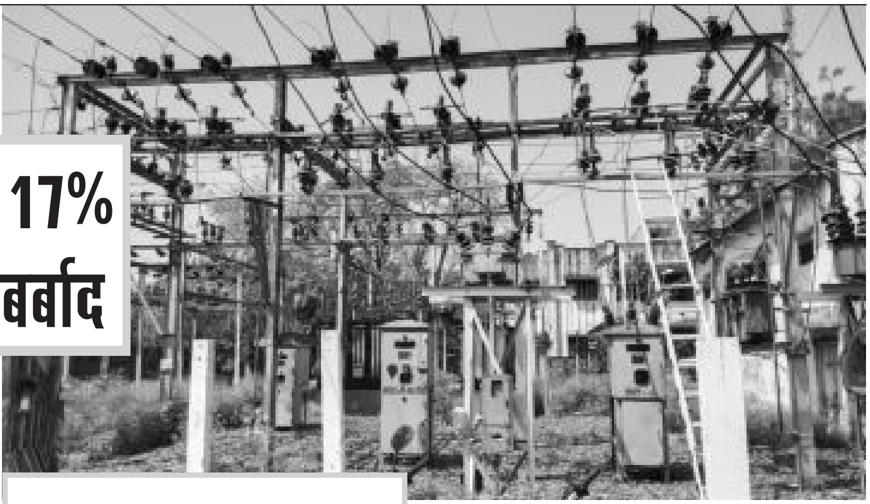

देश में घर-घर बिजली पहुंचाने के लिए अब तक बड़ी संख्या में योजनाएं लाई गई और इन पर सैकड़ों अरब रुपए खर्च भी हो चुके हैं लेकिन अब तक देश के कई गावों व कस्बों को बिजली पहुंचने का इंतजार है। वहीं चौकाने वाला तथ्य यह है कि देश में उत्पादित बिजली में से करीब 17 फीसदी बिजली प्रतिवर्ष बर्बाद भी हो जाती है। भारत में विकासशील और विकसित देशों के बीच अपने साथी देशों की तुलना में टीएंडडी (ट्रांसमिशन एंड डिस्ट्रीब्यूसन लॉस) नुकसान के उच्चतम स्तरों में से एक है। वर्ष 2018 में भारत में 16.93 प्रतिशत टीएंडडी नुकसान हुआ था। जबकि विश्व का औसत 8.2 प्रतिशत ही था। यहां तक कि समान सामाजिक-आर्थिक संरचना वाले देश जैसे कि दक्षिण अफ्रीका (2018 में 9.97 प्रतिशत) और बांग्लादेश (वित्त वर्ष 2020-21 में 11.11 प्रतिशत) में भारत की तुलना में काफी कम टीएंडडी नुकसान हुआ है।

बिजली की बचत के मामले में भारत अपने पड़ोसी बांग्लादेश से भी पीछे है। बिजली की बर्बादी प्रमुख रूप से बिजली चोरी तथा लाइन लॉस के रूप में होती है। देश में हो रही बिजली की बर्बादी की भरपाई के लिए बिजली कंपनियां बिजली की दरों में बढ़ोतरी कर उपभोक्ताओं से वसूलती है। संग्रहण हानियां डिस्कॉम की नकदी प्रवाह की स्थिति को सीधे प्रभावित करती हैं और उनकी वित्तीय स्थिति को और खराब करती हैं। संग्रह क्षमता वित्त वर्ष 2015-16 में 94.24 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष 2020-21 में 92.40 प्रतिशत हो गई है। इसी दौरान टीएंडडी हानि 19.31 से 15.93 प्रतिशत के बीच हो गई है और एटीएंडसी हानि 23.96 प्रशित से 22.32 प्रतिशत तक मामूली रूप से सुधरी है।

देश की बिजली कंपनियों पर वर्ष 2015-16 में उधार 421087 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 46454 करोड़ रुपए था। वर्ष 2016-17 में उधार 417106 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 39325 करोड़ रुपए था। वर्ष 2017-18 में उधार 464422 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 51220 करोड़ रुपए था। वहीं वर्ष 2018-19 में उधार 500022 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 49709 करोड़ रुपए था। वर्ष 2019-20 में उधार 514237 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 52917 करोड़ रुपए था। वहीं वर्ष 2020-21 में उधार 586194 करोड़ रुपए जबकि ब्याज 55773 करोड़ रुपए था।

बिजली की हानि रोकने में कोरिया विश्व में टॉप पर है। वर्ष 2017 कोरिया का टीएंडडी व एटीसी लॉस 3.47 प्रतिशत था। जबकि जापान 4.04, जर्मनी 4.95, इटली 6.01, ऑस्ट्रेलिया 5.89, फ्रांस 8.02, चीन 5.68, कनाडा 6.45, ब्रिटेन 8.21, रूस 12.15 और विश्व का कुल टीएंडडी व एटीसी लॉस 8.4 था। जबकि वर्ष 2018 में कोरिया का टीएंडडी व एटीसी लॉस 3.31 थी। जबकि जापान 4.54, जर्मनी 4.94, इटली 5.78, ऑस्ट्रेलिया 5.92, फ्रांस 8.06, चीन 5.27, कनाडा 6.11, ब्रिटेन 8.15, रूस 11.95 और विश्व का कुल टीएंडडी व एटीसी लॉस 8.2 प्रतिशत था।

निरंतर एसीएस-एआरआर अंतर ने डिस्कॉम को बिजली खरीद भुगतान दायित्वों सहित अपनी कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण वित्तपोषण के अस्थिर स्तरों का सहारा लेने के लिए मजबूर किया है। सभी डिस्कॉम का कुल कर्ज 4,21,087 करोड़ रुपए से बढ़ गया है वित्त वर्ष 2015-16 में। 5,86,194 करोड़ रुपए 2020-21 में। इसी अवधि में ब्याज राशि 46,454 करोड़ रुपए से बढ़कर 55,773 रुपए हो गई है, क्योंकि सभी डिस्कॉम के कुल खर्चों का प्रतिशत वित्त वर्ष 2020-21 के लिए 7.3 प्रतिशत है। एसईआरसीएस द्वारा समानुपातिक टैरिफ वृद्धि में विलम्ब से राजस्व अंतरालों का सृजन हुआ है। वित्त वर्ष 2022-23 के टैरिफ आदेशों के अनुसार

सूबे के सभी बिजली स्टेशनों का होगा रिमोट से संचालन

मप्र पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी अब तकनीकी रूप से अपने आपको सक्षम बनाने में जुटी हुई है। इसके तहत अब कंपनी द्वारा प्रदेशभर के बिजली स्टेशनों का नियंत्रण रिमोट से किए जाने की तैयारी कर ली गई है। इसकी वजह से बिजली स्टेशनों के संचालन के लिए कर्मचारियों की जरूरत जहां समाप्त हो जाएगी, वहीं कंपनी के खर्चे में भी प्रभावी कमी आएगी। जल्द 400 केवी क्षमता वाले प्रदेश के 14 सबस्टेशन को रिमोट से नियंत्रित किया जाएगा। इन सब स्टेशन को अभी तक मैन्युअल कर्मचारी संचालित करते हैं। इस वजह से तकनीकी रूप से खामी की गुंजाइश बनी रहती है। जिसके चलते ही इस तरह की नई व्यवस्था की जा रही है। कंपनी का दावा है कि सब स्टेशनों के रिमोट से संचालित होने पर रियल टाइम डाटा भी मिल सकेगा। कंपनी 400 केवी के बाद 220 केवी और 132 केवी के सब स्टेशन को भी इसी नई तकनीक से जोड़ेगी। खास बात ये है कि प्रदेश के सभी सब स्टेशन का संचालन वैसे तो जबलपुर के कंट्रोल रूम से करेगी, लेकिन बैकअप के लिए कंपनी द्वारा इंदौर में भी एक कंट्रोल रूम बनाने की योजना है। दरअसल इस तरह का कदम किसी तरह की आपात स्थिति से निपटने के लिए उठाया जा रहा है। यदि किसी तरह से ट्रांसमिशन कंपनी के सब स्टेशन में किसी तरह की हैकिंग या अनहोनी हुई तो सब स्टेशन ठप नहीं होंगे।

राजस्व अंतराल वाले 14 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए संचयी राजस्व अंतर 1,50,758 करोड़ रुपए है। तमिलनाडु और राजस्थान जैसे राज्यों ने राजस्व अंतर का 87 प्रतिशत योगदान किया है। जबकि दिल्ली 8955, कर्नाटक 6274, महाराष्ट्र 4580, अरुणाचल प्रदेश 380, पुडुचेरी 336, सिक्किम 291, झारखंड 196, मेघालय 154, पश्चिम बंगाल 107, पंजाब 88, त्रिपुरा 60, बिहार 7, उप्र 5, तथा उत्तराखंड में राजस्व का अंतर 5 करोड़ रुपए है।

सूबे की अफसरशाही के कई निर्णय आम आदमी के लिए बेहद भारी पड़ते हैं, जिसकी वजह से सरकार की भी किरकिरी होती है। ऐसे ही एक निर्णय की वजह से प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं को बड़ा झटका लगना तय था, लेकिन सरकार द्वारा लगाए गए बीटो की वजह से अफसरशाही को बड़ा झटका लगा है तो आम जनता के लिए राहत का मार्ग खुल गया है। दरअसल सरकार ने करीब छह माह पहले शुरू की गई विदेशी कोयले की खरीदी पर रोक लगा दी है। इसकी वजह से अब प्रदेश के उपभोक्ताओं को मंहगी बिजली खरीदने से राहत मिल गई है।

दरअसल जो विदेशी कोयला खरीदा जाना था वह देश के कोयले से आठ गुना तक मंहगा था, जिसकी वजह से बिजली उपभोक्ताओं को करीब 75 पैसे प्रति यूनिट तक अधिक दर से बिजली का बिल भरना पड़ सकता था। अब बिजली बनाने के लिए महंगे विदेशी कोयला खरीदने से तौबा कर लेने से फिलहाल बिजली के दामों में बढ़ोतरी नहीं होगी। मप्र ने देशी कोयले की उपलब्धता में ही बिजली उत्पादन को जारी रखने का निर्णय किया है जिसकी वजह से विदेशी कोयले की जरूरत नहीं रह गई है। गौरतलब है कि मप्र में जब कोयले की भारी कमी आ रही थी, तब सरकार ने विदेश से कोयला खरीदने के लिए ग्लोबल टेंडर जारी किया था। केंद्र सरकार ने भी जितनी डिमांड थी, उसमें 10 फीसदी विदेशी कोयला खरीदने की शर्त लगा दी थी। ऐसे में 15 लाख टन कोयला विदेश से लिया जाना था। सामान्य तौर पर इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीकी देशों से कोयला आयात होता है। इसकी गुणवत्ता का आंकलन उससे पैदा होने वाली ऊर्जा से होता है। जितना बेहतर कोयला उतनी अधिक ऊर्जा पैदा करता है।

गुणवत्ता वाले कोयले में राख कम बनती है। कंपनी का दावा था कि रबी सीजन में 17 हजार मेगावाट तक बिजली की मांग होगी, इस वजह से बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ऐसा किया जा रहा था। वैसे भी अब प्रदेश के जलाशय पूरी क्षमता से भरे हैं, जिनसे बिजली बनाई जा सकती है। इसके बाद विदेश से करीब सात लाख मैट्रिक टन कोयले के आयात के लिए 976 करोड़ रुपए का टेंडर जारी किया था। इसकी वजह से विदेशी कोयले की खरीदी में जो खर्च आता, उसकी वसूली बिजली कंपनी प्रदेश के उपभोक्ताओं से ही बिजली बिल बढ़ाकर करती। यह वर्तमान दरों पर मिलने वाले देशी खदानों के कोयले से तकरीबन 8 गुना महंगी दरों पर टेंडर जारी हुआ था। अब इस मामले में प्रमुख सचिव संजय दुबे के बयान के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि मप्र में विदेशी कोयला नहीं खरीदा जाएगा और इससे प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं को बड़ी राहत मिली है।

बिजली के टैरिफ निर्धारण में उपभोक्ताओं से 30 दिन के कोयला स्टॉक का पैसा लिया जाता है। मतलब बिजली घरों में उनकी क्षमता के अनुरूप 30 दिन का कोयला रखेंगे। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के मानक के अनुसार पिट हेट (प्लांट और कोयला खदान की दूरी 25 किमी से कम) पर 17 दिन का स्टॉक और प्लांट और कोयला खदान की दूरी 25 किमी से अधिक होने पर 26 दिन का कोयला स्टॉक रखना चाहिए। प्रदेश के बिजली घरों को वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड और साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड से कोल ब्लॉक आवंटित है। सारणी बिजली घर को डब्ल्यूसीएल के पाथाखेड़ा, कान्हान, पेंच, नागपुर, चंद्रपुर व वानी से रेल, सड़क व कन्वेयर बेल्ट से कोयले की सप्लाई होती है। अमरकंटक के बिजली घर को एसईसीएल के सोहागपुर कोल ब्लॉक से रेल के जरिए कोयला मिलता है। संजय गांधी बिरसिंहपुर बिजली घर को एसईसीएल के कोरिया, रीवा व कोरबा कोल ब्लॉक से रेल के जरिए कोयला मिलता है। वहीं सबसे बड़े प्लांट श्री सिंगाजी को एसईसीएल के विभिन्न ब्लॉक से कोयले की सप्लाई ट्रेन के माध्यम से होती है। विदेशों से आने वाला कोयला न्यूनतम परिवहन समेत 15 हजार से 20 हजार रुपए मीट्रिक टन पड़ना था। मौजूदा कोयले की दर 4000 से 6000 हजार रुपए मीट्रिक टन हो जाएगी। इससे प्रति यूनिट बिजली उत्पादन की लागत 75 पैसे से 1 रुपए तक बढ़ जाएगी। विदेशी कोयला मिलाने से तकनीकी दिक्कत भी आने की बात कही जा रही थी। इसका कारण है कि प्रदेश के सरकारी बिजली घरों के बॉयलर की बनावट देश में उत्पादित कोयले के अनुसार है। देसी कोयले का ताप 3000 से 3500 किलो कैलोरी का है। जबकि, विदेशी कोयले का ताप 5000 से 5500 किलो कैलोरी है। देसी कोयले से 30 से 40 प्रतिशत राख निकलती है, जबकि विदेशी कोयले से 10 प्रतिशत के लगभग राख निकलती है। अधिक कैलोरी के ताप से बिजली बनाने वाले बॉयलर को कैसे नियंत्रित करेंगे, ये बड़ा सवाल था, साथ ही लीकेज का खतरा बढ़ने की भी संभावना जताई जा रही थी।

● **सुनील सिंह**

जोड़े जाएंगे फायबर ऑप्टिकल केबल से

कंट्रोल सेंटर से सब स्टेशन फायबर ऑप्टिकल केबल से जोड़े जा रहे है। यह कंट्रोल सेंटर संचालित रहेगा। सभी सब स्टेशन की एक साथ निगरानी होगी। फिलहाल जिन 400 केवी सब स्टेशन का नियत्रंण किया जाएगा उनमें इंदौर, सूखीसेवनिया (भोपाल), नागदा, बीना, कटनी, आष्टा, पीथमपुर, जुलवानिया, छैगांव, सागर, किरनापुर, उज्जैन, बड़नावर और मंदसौर शामिल हैं। पावर ट्रांसमिशन कंपनी के नवनिर्मित अति उच्चदाब सबस्टेशनों को रिमोट से संचालित करने का प्रयोग किया है। इसके तहत 48.26 करोड़ की लागत से ढीमरखेड़ा (मुरवारी) और नर्मदापुरम जिले के मोहासा बावई औद्योगिक कॉरिडोर में आइनॉक्स ऑक्सीजन प्लांट के लिए 48.9 करोड़ की अनुमानित लागत से 132 केवी का अति उच्चदाब विद्युत सब स्टेशन ह्यूमन मशीन इंटरफेस तकनीक के जरिए कंट्रोल रूम से रिमोट से चलाए गए हैं। इन दोनों जगहों पर अगस्त में प्रयोग किया गया था, जो पूरी तरह से सफल रहा है।

एप के रडार पर नेताजी

मिशन 2023 के दौरान भाजपा के हर पदाधिकारी की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। अब भाजपा के नेता बैठकों में खानापूर्ति नहीं कर सकेंगे। क्योंकि संगठन ऐप 2.0 के जरिए बैठकों की निगरानी रखी जा रही है। कौन नेता आज क्या करेगा, क्या-क्या काम किया इसकी ऑनलाइन मॉनीटरिंग की जा रही है। यानी पार्टी का हर नेता संगठन ऐप के रडार पर है। गौरतलब है की पार्टी को धरातल पर मजबूती प्रदान करने के लिए भाजपा ने संगठन ऐप 2.0 जारी किया है। धार के मांडू में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने संगठन ऐप 2.0 लॉन्च किया था। बूथ स्तर तक की विस्तार से जानकारी संगठन ऐप 2.0 में हो रही है।

दरअसल, 2023 में होने जा रहे विधानसभा चुनावों की तैयारियां भाजपा ने तेज कर दी हैं। चुनाव में जीत के लिए भाजपा कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। संगठन ऐप 2.0 में प्रदेश अध्यक्ष से लेकर, जिलाध्यक्ष और बूथ स्तरीय कार्यकर्ताओं को प्रवास और बैठकों की जानकारी रियल टाइम पर रिपोर्ट करनी पड़ रही है। बैठकों और प्रवास की फोटो लोकेशन, जियो टैगिंग भी फीड करना पड़ रहा है।

इस ऐप में भाजपा के सभी प्रदेश पदाधिकारियों, सात प्रमुख मोर्चा के अध्यक्ष और प्रकोष्ठों के संयोजकों को जोड़ा गया है। इसके साथ ही ऐप में क्षेत्रीय सहसंगठन महामंत्री शिवप्रकाश, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह, प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद को जोड़ा गया है। मॉनीटरिंग का काम यही वरिष्ठ नेता करेंगे। गौरतलब है कि भाजपा ने अपने सभी प्रदेश पदाधिकारियों को दो से तीन जिलों का प्रभार दे रखा है। इसके अलावा मोर्चा और प्रकोष्ठ के प्रमुखों को भी काम आवंटित है। ये पदाधिकारी किस तरह का काम कर रहे हैं अब इसकी मॉनीटरिंग करने का तय किया गया है। प्रदेश संगठन के आईटी सेल ने संगठन ऐप तैयार किया है। इस ऐप से जुड़े पदाधिकारियों के लिए अपने दौरे और काम की डिटेल ऐप पर डालना अनिवार्य किया गया है।

पदाधिकारी और मोर्चा, प्रकोष्ठ प्रमुख जिस जिले या मंडल में दौरे पर जाएंगे। वहां कितनी बैठकें ली और इसमें कितने लोग थे। किन मुद्दों पर बात की। जैसी जानकारी वहीं से ऐप पर डालनी होगी। बैठक की वहीं से लाइव फोटो भी डालनी होगी। पदाधिकारियों से साफ कहा गया है कि गैलरी की फोटो या फाइल फोटो नहीं चलेगी। संगठन ऐप पर जैसे ही यह फोटो डलेगी। प्रदेश संगठन के शीर्ष नेताओं को यह दिख जाएगी। वे जरूरत पड़ने पर बैठक के दौरान ही इन नेताओं से जुड़कर उन्हें आवश्यक निर्देश भी दे सकेंगे। इसके अलावा प्रदेश पदाधिकारियों, मोर्चा और प्रकोष्ठ प्रमुखों को अपने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी भी ऐप पर अपलोड करनी होगी। इनकी सक्रियता नापने के बाद प्रदेश संगठन कुछ पदाधिकारियों के काम में बदलाव भी कर सकता है।

विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भाजपा ने अपने फ्रंटल ऑर्गनाइजेशनों के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया है। चंद रोज पहले झाबुआ में हुए एसटी मोर्चा के प्रशिक्षण के बाद युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं को सिवनी में दो दिनी प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के लिए पार्टी ने युवा मोर्चा के 250 कार्यकर्ताओं को चिन्हित किया गया था। भाजपा ने अपने सभी जिलाध्यक्षों और महामंत्रियों से कहा था कि प्रशिक्षण शुरू होने से पहले सिवनी पहुंच जाएं। प्रशिक्षण में युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं को उनकी विधानसभा चुनाव में भूमिका के बारे में बताया गया। इसके साथ ही उन्हें **सोशल मीडिया** समेत नई तकनीक के अन्य प्लेटफॉर्मों पर किस तरह एक्टिव रहना है यह भी बताया गया। प्रशिक्षण वर्ग में पार्टी के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री शिवप्रकाश, प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और संगठन महामंत्री हितानंद ने कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दिया। प्रशिक्षण वर्ग में आदिवासी युवाओं पर खास फोकस की रणनीति भी बताई गई। प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने युवा मोर्चा अध्यक्ष वैभव पवार को पंचायत स्तर तक युवा मोर्चा की टीम गठित करने को कहा था। संगठन नेताओं की बैठक में इस पर अब तक हुए काम की रिपोर्ट भी पेश की गई। युवा मोर्चा ने हर पंचायत में सात से दस युवाओं की टीम का गठन किया है।

भाजपा का संगठन 2.0 ऐप मांडू में प्रशिक्षण वर्ग के दौरान लॉन्च किया गया था। इस ऐप को कुछ इस तरह से बनाया गया है कि इसे पदाधिकारी अपने मोबाइल पर डाउनलोड कर पाएंगे। उदाहरण के लिए ग्वालियर के किसी पदाधिकारी को अगर झाबुआ में प्रवास का जिम्मा सौंपा गया है तो झाबुआ पहुंचकर उस पदाधिकारी को ऐप से रिपोर्ट करनी होगी। ये रिपोर्टिंग टेक्स्ट और फोटो के जरिए होगी। खास बात ये है कि ऐप में फोटो गैलरी से कोई फोटो अपलोड नहीं कर पाएंगे। केवल रियल टाइम यानी नए फोटो ही अपलोड हो पाएंगे। इसलिए कोई पदाधिकारी मौके पर पहुंचे बिना रिपोर्ट नहीं कर पाएगा। बैठकों और रैलियों के लिए भी ऐसा ही सिस्टम होगा।

● डॉ. जयसिंह सेंधव

मुख्यालय स्तर पर मॉनीटरिंग

संगठन ऐप 2.0 में अपलोड की गई जानकारी की मॉनीटरिंग सीधे पार्टी मुख्यालय करेगा। किस पदाधिकारी ने कितने दौरे किए इसकी रिपोर्ट भोपाल में तैयार होगी। ऐप की मॉनीटरिंग भोपाल के साथ-साथ दिल्ली मुख्यालय तक भी हो सकेगी। इसका एक फायदा ये भी होगा कि किसी कार्यकर्ता को अपने काम के लिए किसी बड़े नेता की सिफारिश की जरूरत नहीं होगी। अगर कोई पदाधिकारी काम में लापरवाही बरत रहा है तो फिर संगठन स्तर पर एक्शन भी उसी अंदाज में होगा। भाजपा के प्रदेश पदाधिकारियों समेत मोर्चा अध्यक्षों और अन्य जिम्मेदार पदों पर बैठे नेताओं के काम की अब प्रदेश संगठन सख्त मॉनीटरिंग करेगा। वे अपने प्रभार के जिलों में जो रहे हैं या नहीं और अगर जा रहे हैं तो उन्होंने वहां क्या किया, इसकी जानकारी उन्हें प्रदेश संगठन को मौके से ही ऑनलाइन देनी होगी। ऐसा विधानसभा चुनाव के मद्देनजर सक्रियता और काम की प्रामाणिकता बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। प्रदेश संगठन देश में पहली बार इस तरह का प्रयोग कर रहा है। भाजपा को अपने कुछ पदाधिकारियों और मोर्चा प्रमुखों को लेकर जानकारी मिली थी कि वे मैदान में उतने सक्रिय नहीं हैं जितना चुनाव के समय होना चाहिए। इनकी सक्रियता परखने के लिए भाजपा ने संगठन ऐप लॉन्च किया है।

जीत के लिए सर्वे का सहारा

मप्र में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस में अभी से जीतने वाले प्रत्याशियों की तलाश की कवायद शुरू कर दी गई है। इसके तहत सर्वे और पार्टी कार्यकर्ताओं से मिले फीडबैक के आधार पर ही टिकटों के लिए नाम तय किए जाएंगे। दरअसल इस बार पार्टी चुनाव की घोषणा होने के पहले ही प्रत्याशियों के नाम तय कर लेना चाहती है और कठिन मानी जाने वाली सीटों पर कई माह पहले प्रत्याशियों के नामों की घोषणा करने की रणनीति पर काम कर रही है। यही नहीं पार्टी की जीत तय करने के लिए अब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ भी अब पूरी तरह से मैदानी दौरे करने जा रहे हैं। उनके यह दौरे कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने, संगठन को मजबूत करना और प्रत्याशी की चयन की कवायद के लिए किए जा रहे हैं। उधर, इसके साथ ही कमलनाथ द्वारा संगठन के जिला प्रभारियों से सभी मुद्दों पर तथ्यपरक पूरी रिपोर्ट भी मांगी गई है।

कमलनाथ ने पार्टी की जीत तय करने के लिए प्रदेश के अलग-अलग अंचलों के हिसाब से रणनीति तैयार की है, जिसमें उनके द्वारा ग्वालियर-चंबल के अलावा बुंदेलखंड अंचल को प्राथमिकता में रखा गया है। यही वजह है कि वे अपने दौरे की शुरूआत बुंदेलखंड अंचल से कर चुके हैं। वे इस बार इन दोनों ही अंचलों में सीटों को हर हाल में बढ़ता हुआ देखना चाहते हैं। इसके अलावा नाथ द्वारा संगठन को भी मजबूत करने के प्रयास शुरू किए जा चुके हैं। पार्टी ने जिला प्रभारियों से यह रिपोर्ट बुलाई है कि जिलों में संगठन किस तरह से काम कर रहा है। इसकी पूरी जानकारी पाने के लिए कुछ बिंदु तय किए गए हैं। कांग्रेस सूत्रों की मानें तो प्रभारियों ने अपनी रिपोर्ट प्रदेश संगठन को दे दी है। इसके बाद अब मंडलम और सेक्टर स्तर तक कार्यकर्ता सम्मेलन करने की रणनीति तैयार की गई है। इसमें कार्यकर्ताओं को मतदाताओं को घर से मतदान के लिए निकालने से लेकर तमाम तरह के चुनावी प्रशिक्षण भी दिए जाएंगे। कार्यकर्ताओं के होने वाले सम्मेलनों में कमलनाथ भी शामिल होंगे। मकसद कार्यकर्ताओं का चुनाव को लेकर उत्साह बढ़ाना और सक्रिय करना है।

कांग्रेस ने प्रदेश में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले शिवराज सरकार को घेरने की तैयारी शुरू कर दी है। मप्र कांग्रेस कमेटी सरकार के विरूद्ध आरोप पत्र तैयार कर रही है, जिसे चुनाव से तीन महीने पहले जारी किया जाएगा। आरोप पत्र तैयार करने के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने दो सदस्यीय आरोप पत्र समिति बनाई है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह को समिति का अध्यक्ष और पूर्व विधायक पारस सकलेचा को समिति का उपाध्यक्ष बनाया गया है। समिति द्वारा इस पर तेजी से काम किया जा रहा है। इसके लिए चिन्हित विषयों से जुड़ी प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिए विधायकों के माध्यम से विधानसभा के आगामी शीतकालीन सत्र में प्रश्न और ध्यानाकर्षण सूचनाओं के आवेदन दिए जाएंगे। आरोप पत्र की पुस्तिकाएं और पंपलेट छपवाकर घर-घर बांटी जाएंगी। प्रदेश कांग्रेस ने भाजपा सरकार को घेरने के लिए संभाग स्तर पर आंदोलन करने के साथ आरोप पत्र जारी करने की योजना बनाई है। आरोप पत्र में सरकार द्वारा किए गए वादे और उन पर अमल की स्थिति, निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार, राशन वितरण में गड़बड़ी, किसानों के अनुदान में गड़बड़ी, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था, अनियमितता और अर्थव्यवस्था से जुड़े मुद्दे प्रमुखता से शामिल किए जा रहे हैं।

नाथ ने प्रभारियों से प्रत्याशी चयन को लेकर जिलेवार यह रिपोर्ट भी मांगी है कि जिले में कितनी सीटें हैं, किस समाज के कितने मतदाता हैं। अगर जिले में तीन सीटें हैं, तो उनमें प्रत्याशियों का चयन किस आधार पर किया जाना चाहिए। बताते हैं कि रिपोर्ट के अलावा पार्टी का भरोसा सर्वे पर भी है। सर्वे रिपोर्ट और प्रभारियों की रिपोर्ट का मिलान होगा। उसमें निकलने वाले मंथन के **आधार पर पार्टी प्रत्याशियों** का चयन का काम किया जाएगा। अभी सिर्फ उनके चयन के तरीके के बारे में तथ्यपरक जानकारी बुलाई गई है। सर्वे और प्रभारियों की रिपोर्ट के बाद पार्टी प्रत्याशियों के चयन पर काम करेगी।

इस अंचल के तहत आधा दर्जन जिले आते हैं। इनमें सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी शामिल हैं। छह जिलों में कुल 26 विधानसभा सीटें हैं। इनमें साल 2018 के चुनाव में कांग्रेस को 10 सीटें मिली थीं। एक सपा और एक सीट बसपा के खाते में गई थी। बाकी बची हुई 14 सीटें भाजपा को मिली थीं। साल 2020 में हुए सत्ता परिवर्तन के दौर में कांग्रेस के तीन विधायक भाजपा में चले गए थे। इनमें गोविंद सिंह राजपूत, राहुल सिंह और प्रद्युम्न शामिल हैं। पृथ्वीपुर सीट तत्कालीन विधायक बृजेंद्र सिंह राठौर के निधन के बाद रिक्त हुई थी, जिस पर हुए उपचुनाव में भाजपा को जीत मिली थी। उसके बाद सपा विधायक राजेश शुक्ला ने भी भाजपा का दामन थाम लिया था।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

ग्वालियर-चंबल का राजनीतिक परिदृश्य

ग्वालियर-चंबल में कुल 8 जिले आते हैं, जिनमें विधानसभा की 34 सीटें शामिल हैं। बात अगर 2018 के विधानसभा चुनाव की करें तो यहां की 34 सीटों में से कांग्रेस ने 26 सीटें जीती थी। जबकि 7 सीट भाजपा को मिली थी, जबकि एक सीट बसपा के खाते में गई थी, लेकिन श्रीमंत के भाजपा में जाने से कांग्रेस के अंचल के 15 विधायक कांग्रेस छोड़कर भाजपा में चले गए थे। इसके बाद हुए उपचुनाव में 8 सीटों पर भाजपा और 7 सीटों पर कांग्रेस अपना किला बचाए रखने में कामयाब हुई थी। कांग्रेस इस बार भी पुरानी जीत दोहराना चाहती है। इसकी वजह है इस अंचल की महापौर पद की दोनों सीटों पर कांग्रेस की जीत होना।

सीएम की फटकार भी दरकिनार

निगम व पीडब्ल्यूडी के बीच खराब सड़कें ठीक करने को लेकर जारी विवाद खत्म हो गया है। अब दोनों ही विभाग अपनी-अपनी सड़कों को ठीक करेगा। रेस्टोरेशन की मुख्य जिम्मेदारी निगम की होगी। सबसे पहले हमीदिया रोड को ठीक किया जाएगा। गत दिनों दोनों ही विभागों के अधिकारियों के बीच बैठक हुई है जिसमें यह सहमति बनी है। शहर की 40 प्रतिशत सड़कें खराब हैं, जिसकी वजह से लोग परेशान हो रहे हैं। छोला रोड क्षेत्र में तो एक राहगीर की गड्ढे में गिरने की वजह से मौत हो चुकी है। इसी बीच मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सड़कों का निरीक्षण किया था। इसके बाद ही नाराजगी जताई थी और 15 दिनों के भीतर सड़कें ठीक करने के निर्देश दिए थे। उसके बाद ही निगम व पीडब्ल्यूडी के अधिकारी हरकत में आए हैं।

बता दें कि वर्षा के बाद सबसे अधिक खराब सड़कें पुराने शहर की हैं। इनमें अधिकतर सड़कें पीडब्ल्यूडी विभाग की हैं लेकिन पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों का कहना था कि ये सड़कें वर्षा नहीं पाइपलाइन डालने की वजह से उखड़ी हैं लेकिन नगर निगम ने इनका रेस्टोरेशन नहीं कराया है। जिससे हालात बदतर हो गई है। वहीं नगर निगम रेस्टोरेशन कराने को तैयार नहीं था। यहां सीवेज और पानी की पाइपलाइन डालने के बाद संबंधित निर्माण एजेंसियों ने सड़कों को बिना रेस्टोरेशन किए छोड़ दिया था। हालांकि ये सड़कें पहले से स्वीकृत थीं, लेकिन पीडब्ल्यूडी इनको बनाने से पहले नगर निगम से रेस्टोरेशन कराने की मांग कर रहा था।

गत दिनों मुख्यमंत्री के साथ समीक्षा बैठक के बाद दोनों विभागों में सुलह हो गई है। अब इसका रेस्टोरेशन नगर निगम कराएगा और पीडब्ल्यूडी यहां नई सड़कें बनाएगा। इससे उम्मीद की जा रही है कि जल्द ही राजधानी की उखड़ी सड़कों की दशा में सुधार होगा और राहगीरों को राहत मिलेगी। उखड़ी सड़कों को लेकर नगर निगम और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों की बैठक बुलाई गई थी। इसमें पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों ने नगर निगम को रेस्टोरेशन कराने के लिए 24 सड़कों की लिस्ट सौंपी है। ये सभी सड़कें पानी की पाइपलाइन और सीवेज की पाइप लाइन डालने के लिए खोदी गई थीं। इनकी मरम्मत कराने की जिम्मेदारी पाइपलाइन डालने वाली एजेंसियों की थी, लेकिन इसमें लापरवाही बरती गई।

नगर निगम आयुक्त केवीएस चौधरी कोलसानी ने पानी की पाइपलाइन डालने वाली टाटा कंपनी और सीवेज की लाइन डालने वाली अंकिता कंस्ट्रक्शन के अधिकारियों के साथ सड़कों के रेस्टोरेशन को लेकर चर्चा की है। उन्होंने संबंधित एजेंसियों से एक सप्ताह में रेस्टोरेशन कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही ऐसा नहीं करने पर निगम में जमा राशि को राजसात करने की चेतावनी दी है। नगर निगम के अधिकारियों ने बताया कि बरसात की वजह से डामर प्लांट बंद थे। दो से तीन दिन के अंदर डामर प्लांट में काम शुरू हो जाएगा। जैसे ही डामर मिलने लगेगा, नगर निगम सड़कों का निर्माण और मरम्मत का काम शुरू करेगा। इसके लिए 165 सड़कों को चिन्हित किया जा चुका है। खराब सड़कों को ठीक करने के लिए पीडब्ल्यूडी के अधिकारी निगम से 15 करोड़ रुपए मांग रहे थे। उनका दावा था कि 24 सड़कें सीवेज व पानी की पाइपलाइन डालने के कारण उखड़ी है। जबकि निगम के अधिकारी यह राशि नहीं देना चाहते थे। उनका कहना था कि अलग से राशि देने का कोई प्रविधान नहीं है। हम उखड़ी सड़कों को ठेकेदारों से ही ठीक कराएंगे।

नगर निगम आयुक्त केवीएस कोलसानी चौधरी का कहना है कि पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों के साथ बैठक में पाइपलाइन डालने के लिए खोदी गई सड़कों का रेस्टोरेशन कराने को लेकर चर्चा हुई है। हमने संबंधित ठेकेदारों को जल्द उखड़ी सड़कों का रेस्टोरेशन कराने के निर्देश दिए हैं।

● धर्मेंद्र सिंह कथूरिया

चुनाव के लिए गर्मागर्म मुद्दा है सड़क

मप्र में सड़क हमेशा से चुनावी मुद्दा रही है। भाजपा हर चुनाव में 2003 के पूर्व सड़कों की खराब स्थिति का हवाला देकर कांग्रेस को घेरती रही है। साथ ही, शिवराज सरकार सड़क निर्माण के क्षेत्र में हुए नए काम को अपनी उपलब्धि के तौर पर बताती रही है। हालांकि अगले साल विधानसभा चुनाव में इनकी खराब स्थिति इस छवि को दाग लगा सकती है इसलिए सरकार इस दिशा में सक्रिय हो गई है। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने सड़क संधारण का काम युद्ध स्तर पर कराने के लिए नई योजना तैयार की है। इसमें साढ़े आठ हजार किमी सड़क का नवीनीकरण किया जाएगा। इसके लिए 1600 करोड़ रुपए अतिरिक्त व्यय किए जाएंगे। दरअसल, इस समय भोपाल सहित सभी जिलों में सड़कों की स्थिति खराब है। अतिवर्षा के कारण राज्यमार्ग, मुख्य जिला मार्ग व अन्य मार्ग क्षतिग्रस्त हुए हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी सड़कों की खराब स्थिति को लेकर नाराजगी जता चुके हैं। अगले साल प्रवासी भारतीय सम्मेलन, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, जी-20 की बैठक, नेशनल यूथ गेम्स सहित प्रदेश में कई बड़े कार्यक्रम और विधानसभा चुनाव होना है। इसे देखते हुए सड़क सुधार को प्राथमिकता में शामिल किया गया है। भाजपा सरकार में अधोसंरचना विकास के काम प्राथमिकता में करवाए जाते रहे हैं। ग्रामीण से लेकर शहरी क्षेत्रों में सड़कों के संधारण के साथ नई सड़कें बनाई जा रही हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर केंद्र सरकार भी भरपूर सहयोग कर रही है। अतिवर्षा के कारण प्रदेश में तीन हजार किमी सड़क पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुई हैं और साढ़े आठ हजार किमी सड़क का नवीनीकरण किया जाना है। साधारण मरम्मत के लिए सरकार ने पीडब्ल्यूडी को अनुपूरक बजट में 400 करोड़ रुपए दिए हैं लेकिन इससे पूरा काम नहीं हो सकता है। इसे देखते हुए विभाग ने नई नवीनीकरण योजना तैयार की है। इसमें सरकार से दो किस्तों में 1600 करोड़ रुपए मांगे गए हैं।

देश में आतंकी संगठनों के सबसे बड़े स्लीपर सेल कहे जाने वाले मप्र में इस बार पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) बड़ी राजनीतिक तबाही मचाने वाला था। पीएफआई के सदस्यों ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सहित कई नेताओं की रैकी करनी शुरू कर दी थी। वे किसी बड़ी वारदात को अंजाम देते उससे पहले ही पीएफआई के खिलाफ बड़ी कार्रवाई शुरू हो गई। पीएफआई के इस खूंखार मंसूबे की हकीकत एटीएस की जांच में सामने आई है। पीएफआई के पकड़े गए सदस्यों ने पूछताछ में बताया कि मालवा में युवाओं को पीएफआई से जोड़ने में मदद मिली। जिसके बाद प्रदेशभर में युवाओं को सदस्य बनाने का प्लान था।

मप्र में राजनीतिक तबाही करने वाला था पीएफआई

प्रदेश में एनआईए द्वारा पीएफआई के ठिकानों पर छापेमारी और गिरफ्तारी के बाद आरोपियों से पूछताछ में कई खुलासे हो रहे हैं। एनआईए ने अनुसार मप्र आतंकियों के निशाने पर था। साथ ही मप्र आतंकी संगठनों का सॉफ्ट टारगेट बन गया था। यहां सिमी, जेएमबी, सूफा, आईएस समेत कई आतंकी संगठन सक्रिय हो रहें हैं। दरअसल प्रदेश में पीएफआई के देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के पक्के सबूत के बाद इंदौर और उज्जैन में रेड की कार्रवाई की गई थी। कार्रवाई में संगठन के मुखिया समेत चार लोग गिरफ्तार किए गए हैं। सूत्रों की माने तो प्रदेश में पीएफआई के 6 हजार सदस्य सक्रिय हैं। और इंदौर, उज्जैन समेत मालवा में 2500 सदस्य एक्टिव हैं। जानकारी के अनुसार पीएफआई का गरीब लोगों और आदिवासी पर फोकस था। मॉर्निंग वॉक ग्रुप बनाकर युवाओं का ब्रेनवाश करते थे। साथ ही कट्टरपंथी विचारधारा का प्रचार कर युवाओं को देश के खिलाफ बरगलाने का काम कर रहे थे।

प्रदेश में भले ही किसी बड़ी घटना से पहले खुफिया जांच एजेंसियों ने पीएफआई के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया हो, लेकिन इनके निशाने पर कई बड़े राजनेता थे। खुद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को टारगेट बनाने की कोशिश की गई। यही नहीं मुख्यमंत्री की कई सभाओं में पीएफआई के स्लीपर सेल मौजूद रहे। एटीएस ने यह पड़ताल प्रधानमंत्री और आरएसएस का नाम आने के बाद की है। इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस से जांच एजेंसियों को साक्ष्य मिले हैं। जांच एजेंसी को इन डिवाइस से रैली के वीडियो और नेताओं की जानकारी जांच एजेंसी के जुड़े अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री पर कई विरोधियों की नजर होती है, लेकिन सुरक्षा में सेंध का सवाल नहीं है। सूत्रों ने बताया कि पीएफआई के सदस्यों ने मुख्यमंत्री को कई बार टारगेट करने की कोशिश की। एक सदस्य ने पूछताछ में बताया कि मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की जानकारी मिली। उस दिन मुख्यमंत्री धार में पैदल रोड शो कर रहे थे। तीन लोग भी उज्जैन और इंदौर से गए थे। मुख्यमंत्री के आसपास का कड़ा पहरा था इसलिए सदस्य जब तक मुख्यमंत्री तक पहुंच पाते सुरक्षागार्ड से झड़प हो गई। इसके बाद पुलिस ने मुख्यमंत्री को गाड़ी से रवाना कर दिया। यही वजह है कि कामयाबी नहीं मिली।

सूत्रों का कहना है कि अभी तक जिन लोगों को खुफिया एजेंसियों ने गिरफ्तार किया उनके तार पीएफआई से जुड़े हैं। पीएफआई के कई काम करते है। पीएफआई के सेल के तौर पर नेताओं की जानकारी दिया करते थे। उन्हें चीफ के निर्देश पर रैली और सभाओं में भी जानकारी लेने के लिए भेजा जाता था। इसके अलावा वाट्सएप से डेटा रिकवर करने के बाद कई अहम जानकारियां मिली हैं। संगठन का मंसूबा था कि देश के खिलाफ युवाओं को भड़काया जाए। इसमें कुछ हद का पीएफआई सफल भी हुआ। ग्रुपों में वायरल हुए मैसेज में लिखा गया था कि नेता एक धर्म के लिए काम कर रहे हैं। हम बगावत नहीं करेंगे तो 2047 तक हम नहीं बचेंगे। **यह मैसेज कई जिलों** के सदस्यों को भेजा गया था। इसके बाद से ही पीएफआई के सदस्य खुलेआम चर्चा करना शुरू कर दिया। जिसके बाद ही जांच एजेंसियों की निगरानी में आ गए। अधिकारियों ने बताया कि पीएफआई के सदस्यों से पूछताछ में जानकारी सामने आई है कि ट्रेनिंग और संगठन का नेटवर्क तैयार करने के लिए सिमी के पुराने सदस्यों ने मदद की थी। अंडरग्राउंड रहते हुए मुहिम को अंजाम देने का प्लान सिमी से ही मिला था। इसके लिए झारखंड में 4 साल पहले मीटिंग भी हुई थी। सदस्यों ने कबूल किया है कि सिमी पर बैन होने के बाद उन्हें फ्रंट बनाया गया है। पीएफआई के संगठन के कोर कमांडरों को एटीएस ने पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। दूसरी बार छापेमारी करते हुए 21 सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। इन्ही में तीन लोगों पर भी यूएपीए एक्ट दर्ज किया गया है। संभवत: कई और जानकारियां सामने आने के बाद गिरफ्तार किए गए लोगों के खिलाफ भी यूएपीए की धारा के तहत कार्रवाई की जा सकती है।

● अरविंद नारद

नई उम्र के युवाओं की भर्ती

प्रदेश में पीएफआई का नेटवर्क पिछले 2 साल से एक्टिव था। इंदौर में अपनी जड़ें जमाने के बाद उज्जैन और मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में इसने काम करना शुरू कर दिया था। जानकारी के मुताबिक पीएफआई का नेटवर्क नई उम्र के युवाओं की भर्ती करता था। मस्जिदों के जरिए पीएफआई के सदस्यों की भर्ती होती थी। ईद के दौरान इंदौर के कई मुस्लिम इलाकों में ईदगाह के बाहर पीएफआई के सदस्यों ने फंडिंग के लिए बैनर और पोस्टर लगाए थे। मुस्लिम उत्पीड़न की बात कहकर लोगों को भड़काते थे। जेलों में हो रहे मुस्लिमों पर अन्याय की बात उठाकर लोगों को भड़काने का काम किया जाता था। खरगोन और इंदौर के चूड़ी वाले की जेल से रिहाई के मामले में भी किया चंदा इकट्ठा किया गया था। शाजापुर में नगर पालिका के चुनाव में एसडीपीआई का उम्मीदवार खड़ा हुआ था। चुनाव में पार्षद की जीत के बाद पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगे थे। प्रदेश से गिरफ्तार हुए ज्यादातर लोगों में एसडीपीआई के कार्यकर्ता बताए जा रहे हैं।

पंचायतें करेंगी वनों का विकास

मप्र में वनों के संरक्षण, संवर्धन के साथ सरकार ने वनों में रोजगार के अवसर भी देने शुरू कर दिए हैं। इसके लिए सरकार ने पंचायतों को आगे करना शुरू कर दिया है। यानी अब पंचायतें वनों का विकास करेंगी और स्थानीय लोगों को रोजगार भी देंगी। वन विभाग द्वारा प्रदेश में वनों पर आश्रित रहने वाले समुदायों के कौशल उन्नयन और आर्थिक विकास के लिए आजादी के अमृत महोत्सव में ग्रीन इंडिया में चयनित लैंड स्केप में ग्रामीण युवा हितग्राहियों को स्व-रोजगार से जोड़ने की अभिनव पहल की गई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का काफी हिस्सा कृषि पर आधारित है। यहां की अधिकतर जनता गांवों में बसती है और वो खेती-किसानी से अपना गुजर-बसर कर रही है। इसी क्रम में मप्र में वन क्षेत्र को बढ़ाने के प्रयास जारी हैं। इसको लेकर बांस का रोपण किया जा रहा है। बीते साल की तुलना में इस साल पांच गुना बांस के रोपण का दावा किया गया है। आधिकारिक तौर पर दी गई जानकारी में बताया गया है कि वन उत्पादों से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों से आजीविका के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। मप्र राज्य बांस मिशन द्वारा 4500 से ज्यादा महिलाओं को स्व-सहायता समूह के माध्यम से बांस-रोपण से सीधे जोड़ा गया है। प्रदेश में बांस रोपण में पांच गुना की वृद्धि हुई है। वर्ष 2019-20 में 2623 हेक्टेयर में बांस रोपण किया गया था, जो इस वर्ष बढ़कर 13 हजार 914 हेक्टेयर हो गया है। राज्य सरकार के तरफ से भी इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। मप्र के कुछ क्षेत्रों में इसे एक रोजगार के रूप में जोड़कर देखा जा रहा है। वन अधिकार अधिनियम 2006 के अंतर्गत खरगोन जिले के 8 वन परिक्षेत्र में आने वाले 65 वनग्रामों को अब राजस्व ग्राम घोषित किया जाएगा। इसमें स्कूल, आंगनवाड़ी से लेकर मोबाइल टॉवर तक बनेंगे। साथ ही ग्राम पंचायतें अब विकास करा सकेंगी। इसमें वन क्षेत्र भगवानपुरा, झिरन्या और बड़वाह तहसीलें दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र के रूप में जानी जाती है। यहां के कई गांव व फलियां वनग्राम के रूप में आते हैं। ऐसी स्थिति में यहां के कई गांवों में सड़कें, स्कूल, आंगनवाड़ी या नेटवर्क के लिए टॉवर जैसे आधारभूत कार्य नहीं हो पा रहे थे, लेकिन अब इन तहसीलों के 65 गांवों को जल्द ही राजस्व गांव के रूप में जाना जाएगा। जिससे यहां भी पंचायतें और प्रशासन यहां विकास कार्य कर सकेंगे।

भू-अभिलेख कार्यालय ने इन गांवों की अधिसूचना जारी कर दी है। भू-अभिलेख अधीक्षक पवन वास्केल ने बताया कि अधिसूचना जारी होने के दो सप्ताह के अंदर किसी जनसमुदाय, संस्था या अन्य को कोई आपत्ति हो तो जनजातीय कार्य विभाग में निर्धारित समय में प्रस्तुत कर सकते हैं। खरगोन जिले के भगवानपुरा तहसील के 23, झिरन्या के 35 और बड़वाह के 7 गांवों के लिए अधिसूचना जारी की गई है। भगवानपुरा में सिरवेल-बिस्टान वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली 8-8 पंचायतें और बरुड वन परिक्षेत्र में आने वाली 3 पंचायतें शामिल है। इसी तरह झिरन्या तहसील में तितरन्या की 32 और चिरिया वन परिक्षेत्र की 3 पंचायतें, बड़वाह तहसील में वन परिक्षेत्र बलवाड़ा की 4, काटकूट की 2 और बड़वाह की एक पंचायत शामिल है। पिछले 15 साल में प्रदेश में डेढ़ लाख हेक्टेयर जंगल बढ़े हैं। पेसा एक्ट ग्राम सभा को सामुदायिक संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार देता है। वन भी सामुदायिक संसाधन है। इस कारण पेसा एक्ट वनों की सुरक्षा और संरक्षण का भी अधिकार ग्राम सभा को देता है। हम सामुदायिक वन प्रबंधन समितियों के गठन की जिम्मेदारी ग्राम सभा को देने जा रहे हैं। अब सामुदायिक वन प्रबंधन समितियां हर साल का माइक्रो (सूक्ष्म) प्लान बनाएंगी और उसे ग्राम सभा से अनुमोदित करवाकर क्रियान्वित करेंगी। इस काम में वन विभाग समितियों को मदद करेगा। आवश्यक वित्तीय संसाधन सरकार उपलब्ध कराएगी।

वनों के प्रबंधन के दौरान विरलन यानी थिनिंग से जो भी बांस-बल्ली या जलाऊ लकड़ी निकलेगी, वह समिति की होगी। कटाई से प्राप्त इमारती लकड़ी का भी एक अंश समिति को जाएगा। ग्राम सभा यदि समिति के कार्य से खुश नहीं होगी तो वो खुद ही उस समिति को भंग करके नई समिति गठित कर सकेगी। अभी तक यह अधिकार डीएफओ को था। बफर क्षेत्र में पर्यटन से होने वाली आय भी इन समितियों को जाएगी। पंचायती राज व्यवस्था की पांचवीं अनुसूची के क्रियान्वयन में आने वाली दिक्कतों को दूर करने के लिए राज्य सरकार ने पेसा ग्राम सभाओं के गठन का निर्णय लिया है। ग्राम सभाएं स्थानीय विकास के लिए स्वयं योजनाएं बना सकेंगी। पेसा ग्राम पंचायतों में गैर जनजातीय वर्ग के अधिकारों को भी संरक्षित रखा जाएगा।

जनजातीय वर्ग के समग्र विकास के लिए बजट में लगातार वृद्धि की गई है। वर्ष 2003-04 में जनजातीय कार्य विभाग का बजट 746.60 करोड़ था, जिसे वर्ष 2020-21 में बढ़ाकर 8085.99 करोड़ तक लाया गया है। इस प्रकार इस वर्ग के बजट में 948 प्रतिशत की वृद्धि की गई। प्रदेश के सभी 89 जनजातीय विकासखंडों में सिकल सैल मिशन 15 नवंबर से प्रारंभ किया जाएगा। इसमें घर-घर जाकर ऐसे भाई-बहनों की पहचान की जाएगी, जिनके खून में सिकल सैल ट्रेट विद्यमान हैं। ऐसे व्यक्तियों को चिन्हित कर उनका इलाज करवाया जाएगा। प्रदेश में अनुसूचित जनजाति साहूकार विनियम 1972 को अब और प्रभावी बनाया गया है। जनजातीय क्षेत्रों में साहूकारी का धंधा करने वालों के लिए पंजीयन शुल्क में वृद्धि की गई है। निर्धारित दर से अधिक ब्याज वसूलने वाले साहूकारों को कड़ा दंड दिया जाएगा। जनजातीय बहुल विकासखंडों में गांव-गांव राशन पहुंचाने की योजना शुरू की जा रही है।

● बृजेश साहू

गरीबी रेखा से ऊपर आने में मिलेगी मदद

मनरेगा स्कीम में 4511 हेक्टेयर में बांस-रोपण किया जा चुका है। इससे 4500 से अधिक महिलाओं को जोड़ा गया है, जो स्व-सहायता समूह की सदस्य हैं। बांस का उत्पादन शुरू होते ही इन परिवारों की आय में वृद्धि होगी और यह परिवार गरीबी रेखा से ऊपर आ जाएंगे। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में कृषि एवं वन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बांस-रोपण किया जा रहा है। बीते पांच वर्षों में कृषि क्षेत्र में 18 हजार 781 हेक्टेयर क्षेत्र और मनरेगा के अलावा विभागीय योजनाओं में 14 हजार 862 हेक्टेयर वन क्षेत्र में बांस का रोपण किया गया। इस प्रकार कुल 33 हजार 643 हेक्टेयर में बांस रोपण का काम हो चुका है।

बुंदेलखंड राज्य की मांग

अलग बुंदेलखंड राज्य की मांग का मुद्दा एक बार फिर गरम होने लगा है। गत दिनों इस मुद्दे पर झांसी में बुंदेलखंड क्रांति दल के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। इस मौके पर प्रदर्शन कर प्रधानमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन प्रशासन को सौंपा। कार्यकर्ताओं ने एक नवंबर के दिन को काला दिवस घोषित करते हुए कहा कि आज ही के दिन बुंदेलखंड राज्य के अस्तित्व को खत्म कर दिया गया था। बुंदेलखंड क्रांति दल के अध्यक्ष सत्येंद्र पाल सिंह ने कहा कि 1 नवंबर के दिन 1956 को बुंदेलखंड राज्य को खत्म कर दिया गया था। यह हमारे लिए काला दिवस है। बुंदेलखंड के सभी 14 जिलों में हमने प्रदर्शन किया। प्रधानमंत्री ने वादा किया था कि बुंदेलखंड राज्य का निर्माण कराएंगे और उन्हें वादा याद दिलाने के लिए हमने प्रदर्शन किया है। बुंदेलखंड राज्य इस समय उपेक्षा का शिकार है और यहां सबसे अधिक पलायन है।

यहां अलग राज्य की मांग बहुत पुरानी है, सन् 1942 से इसका आंदोलन चल रहा है। समय-समय पर राजनीतिक दल इसका फायदा भी उठाते रहे हैं। कुछ साल पहले पृथक बुंदेलखंड राज्य आंदोलन उग्र हो गया था। समर्थकों ने आधा दर्जन सरकारी वाहनों को आग लगा दी। कई जगह रेल गाड़ियां रोकी गईं। बुंदेलखंड मुक्ति मोर्चा के संयोजक शंकरलाल मेहरोत्रा और अन्य चार लोगों को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कई महीनों जेल रहे और दुर्भाग्य से श्री मेहरोत्रा जेल में लीवर की ऐसी बीमारी के शिकार हुए कि उनका असामयिक देहावसान हो गया। उसके बाद अभिनेता व कांग्रेसी नेता राजा बुंदेला इस आंदोलन की कमान संभाले हुए हैं। इसके अलावा बादशाह सिंह का संगठन भी अलग राज्य की राजनीति करता है। वैसे बादशाह सिंह मौदहा से विधायक हैं, उनकी बाहुबली छवि है और कई पार्टियों का फेरा लगाते रहे हैं।

भारत के नक्शे के ठीक मध्य स्थित बुंदेलखंड का क्षेत्र यमुना, नर्मदा, चंबल और टौंस नदियों के बीच लगभग 400 किलोमीटर पूर्व से पश्चिम और इतना ही उत्तर से दक्षिण वर्गाकार फैला हुआ है। लगभग 1.60 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल वाले इस भू-भाग की भाषा, संस्कृति, आचार-विचारों एकरूपता के बावजूद यह उप्र व मप्र दो राज्यों में विभाजित हैं। सन् 200-500 ईस्वी में वाकाटक युग से इस क्षेत्र की पहचान अलग राज्य के रूप में रही है। यह स्वरूप चंदेलों (सन् 831-1203 ई) और उसके बाद बुंदेलों, फिर अंग्रेजों के शासनकाल तक बरकरार रहा। शुरू में यह भू-भाग जैजाक-मुक्ति या जुझौति कहा जाता था। बुंदेला शासकों के दौरान यह बुंदेलखंड कहा जाता था। स्वतंत्रता से पहले बुंदेलखंड राज्य बना भी था और उसकी राजधानी नौगांव बनाई गई थी। लेकिन दो महीने बाद ही इसका विभाजन विंध्यप्रदेश के रूप में हो गया था। 1942 में प्रसिद्ध साहित्कार व संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने टीकमगढ़ रियासत के महाराज वीर सिंह देव के सहयोग से पृथक राज्य का जनांदोलन शुरू किया था। तब 'मधुकर' का एक विशेष अंक बुंदेलखड पर छापा गया था।

देश को आजादी के तत्काल बाद केंद्र सरकार ने राज्यों के गठन के दिशानीति तय करने हेतु 'दर आयोग' का गठन किया। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि नए राज्य प्रशासनिक सुविधा, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संरचना, सांस्कृतिक और आर्थिक आधार पर होना चाहिए। इस तरह बुंदेलखंड के गठन का रास्ता बड़ा स्पष्ट था। लेकिन तब कतिपय नेता भाषाई या जातीय आधार के पक्षधर थे। पहले गृहमंत्री वल्लभभाई पटेल ने अनेक रियासतों को मिलाकर अलग से बुंदेलखंड राज्य बनाने की परिकल्पना प्रस्तुत की थी, लेकिन तत्कालीन केंद्रीय सरकार उससे असहमत रही थी। 1948 में जवाहरलाल नेहरू, विट्ठल भाई पटेल और पट्टाभि सीतारामैय्या की अगुवाई में गठित जेवीपी आयोग ने बुंदेलखंड राज्य के पृथक अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया था। लेकिन 1955 में बनाए गए राज्य पुनर्गठन आयोग के प्रमुख केएम पणिक्कर ने अपनी रिपोर्ट में पृथक बुंदेलखंड राज्य के औचित्य का तर्कपूर्ण समर्थन किया था। यही नहीं आजादी के पश्चात केंद्र सरकार के स्वराष्ट्र विभाग के सचिव मेनन ने विस्तृत अध्ययन के बाद एक रिपोर्ट तैयार की थी। इसमें बुंदेलखंड को दो राज्यों में विभाजित रखने को क्षेत्र के विकास में अडंगा निरूपित किया था।

बुंदेलखंड के पन्ना में हीरे की खदानें हैं, यहां का ग्रेनाइट दुनियाभर में धूम मचाए है। यहां की खदानों में गोरा पत्थर, सीमेंट का पत्थर, रेत-बजरी के भंडार है। इलाके के गांव-गांव में तालाब हैं, जहां की मछलियां कोलकाता के बाजार में आवाज लगाकर बिकती हैं। इस क्षेत्र के जंगलों में मिलने वाले अफरात तेंदूपत्ता को ग्रीन-गोल्ड कहा जाता है। आंवला, हर्र जैसे उत्पादों से जंगल लदे हुए हैं। लुटियन की दिल्ली की विशाल इमारतें यहां के आदमी की मेहनत की साक्षी हैं। खजुराहो, झांसी, ओरछा जैसे पर्यटन स्थल सालभर विदेशी घुमक्कड़ों को आकर्षित करते हैं। अनुमान है कि दोनों राज्यों के बुंदेलखंड मिलाकर कोई एक हजार करोड़ की आय सरकार के खाते में जमा करवाते हैं, लेकिन इलाके के विकास पर इसका 10 फीसदी भी खर्च नहीं होता हैं।

● सिद्धार्थ पांडे

विकास और भाषाई पहचान बनी मुद्दा

तत्कालीन सरकार ने 1948 में बुंदेलखंड और बघेलखंड को मिलाकर विंध्य प्रदेश बनाया। उस समय दोनों क्षेत्रों की अलग-अलग सरकारें सत्तासीन हुईं। फिर 1956 में मप्र का गठन कर बुंदेलखंड को दो भाग में बांट दिया गया। उसी समय से बुंदलखंड की मांग की जा रही है। बुंदेलखंड की मांग करने वाले इसके पीछे विकास में पिछड़ेपन को भी मुद्दा बनाते हैं। बुंदेलखंड के पैरोकार इसके पीछे बुंदेली भाषाई एकजुटता का भी तर्क देते हैं। हालांकि एक तरफ जहां बुंदेलखंड की मांग की जाती है वहीं पृथक विंध्य प्रदेश की मांग भी लंबे समय से उठ रही है। बुंदेलखंड के समर्थक जहां मप्र के पन्ना, छतरपुर जैसे कुछ जिलों को शामिल किए जाने की मांग कर इसे साकार करना चाहते हैं। वहीं विंध्य प्रदेश के समर्थक बुंदेलखंड के कुछ जिलों के साथ अलग राज्य की मांग दोहराते हैं।

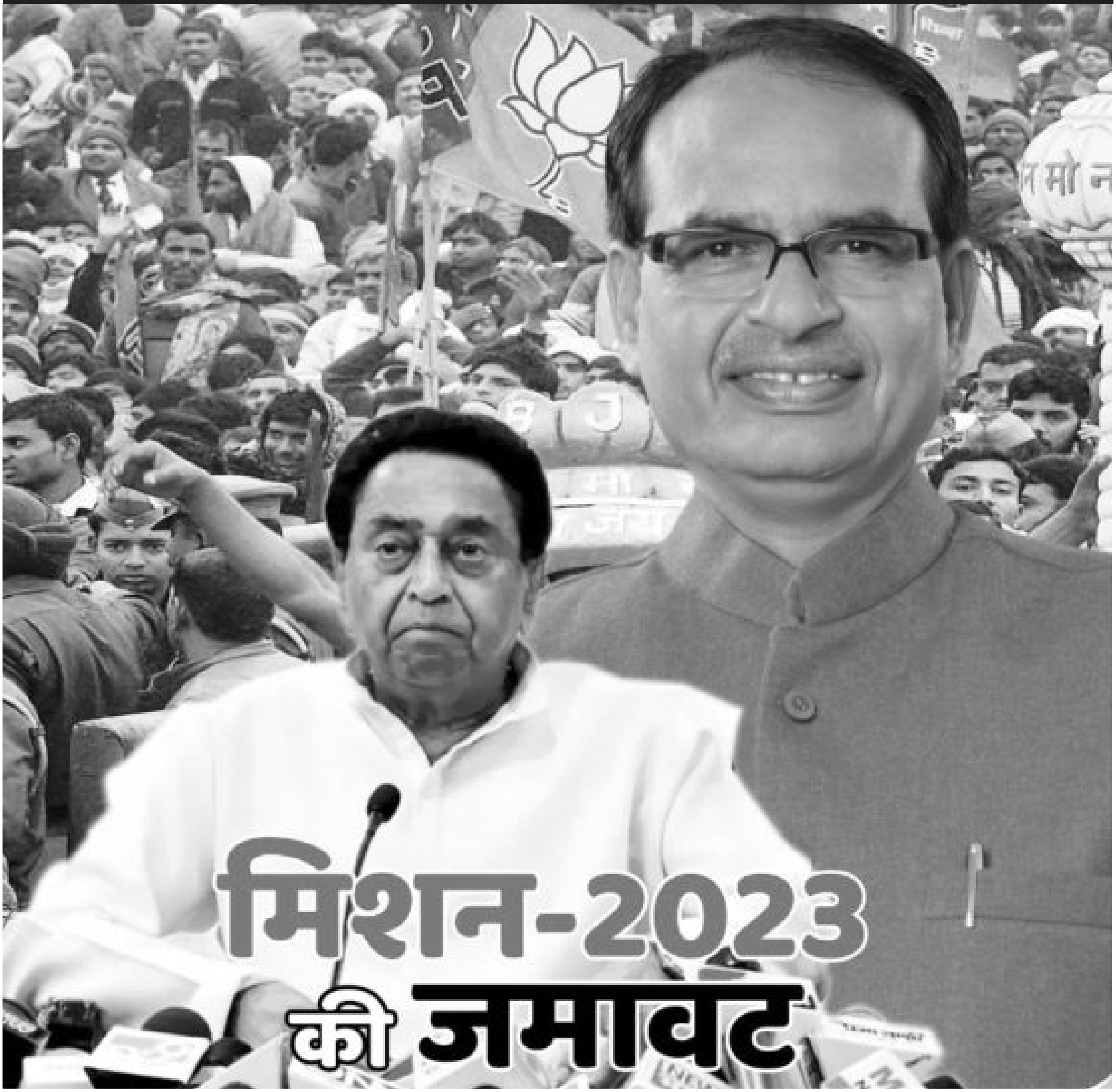

मिशन-2023 की जमावट

मप्र में एक साल पहले ही सत्ता का संग्राम शुरू हो गया है। हर बार की तरह मिशन 2023 में भाजपा और कांग्रेस के बीच जंग है। दोनों पार्टियों का दावा और कोशिश है कि विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल कर सरकार बनाई जाए। इसके लिए भाजपा ने अभी से चुनावी जमावट शुरू कर दी है। चुनावी वर्ष में प्रवेश से पहले भाजपा सत्ता और संगठन में फेर बदल कर कर्मठ नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने की तैयारी कर रही है। वहीं मंत्रालय से लेकर जिलों तक तेज तर्रार और विश्वासपात्र अफसरों को जिम्मेदारी देने का खाका तैयार किया जा रहा है।

● राजेंद्र आगाल

मप्र में आज से तकरीबन 1 साल बाद विधानसभा चुनाव होंगे। 2023 में होने वाला यह विधानसभा चुनाव अब तक के चुनावों से अलग होगा। इसकी वजह यह है कि भाजपा और कांग्रेस दोनों सत्ता के लिए जी जान से जुटे हुए हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ अपनी-अपनी पार्टी को जिताने के लिए मिशन 2023 की जमावट में जुट गए हैं। भाजपा सत्ता और संगठन में जातिगत, क्षेत्रीय आधार पर नेताओं को मंत्रिमंडल और निगम मंडलों में पदस्थ करने की तैयारी कर रही है। वहीं सरकार अफसरों की मैदानी जमावट कर रही है। उधर, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ पार्टी में जान फूंकने में लगे हुए हैं। इसके लिए उन्होंने सभी क्षत्रपों को काम पर लगा दिया है। हालांकि अभी तक की तैयारियों में भाजपा कांग्रेस से काफी आगे है, लेकिन कांग्रेस को 2018 की तरह इस बार भी उम्मीद लगी है कि उसे जीत मिलेगी।

मप्र में विधानसभा चुनाव अगले साल नवंबर और दिसंबर में होंगे। यानी पूरे एक साल बाद। दोनों ही पार्टियां अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गई है। इस बीच भाजपा के अंदरूनी और संघ के सर्वे के आधार पर पार्टी सत्ता और संगठन में नई जमावट करने जा रही है।

क्षेत्रीय और जातीय जमावट

पार्टी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, पार्टी और संघ से मिले फीडबैक के आधार पर पार्टी सत्ता, संगठन, निगम-मंडलों में खांटी भाजपाईयों को जगह देने की तैयारी कर रही है। वहीं नॉन-परफॉर्मिंग मंत्रियों और पदाधिकारियों को बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा। गुजरात चुनाव के बाद मप्र पर पार्टी का फोकस होगा। सिर्फ उन मंत्रियों की ही जिम्मेदारी कायम रखी जाएगी, जो अब तक परफॉर्म करते आए हैं। नॉन-परफॉर्मिंग मंत्रियों का मंत्री पद छीना जाना तय माना जा रहा है। इनमें ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में आए विधायक भी शामिल हैं। कई नए चेहरों को मंत्री बनाया जा सकता है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 25 और 26 नवंबर को मंत्रियों के कामकाज की समीक्षा करेंगे। इसमें राज्य और केंद्र की योजनाओं की स्थिति भी देखी जाएगी। शिवराज का मंत्रियों के साथ मंथन प्रशासन अकादमी में होगा। इसके लिए विभाग प्रमुखों को रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया है।

शिवराज कैबिनेट में अभी सिंधिया कोटे से 9 मंत्री हैं। इनमें 6 कैबिनेट और 3 राज्य मंत्री हैं। चर्चा है कि भाजपा कोर कमेटी के पास कुछ मंत्रियों की शिकायतें भी पहुंची हैं। आगामी चुनाव को देखते हुए भाजपा विपक्ष को किसी प्रकार को कोई मुद्दा नहीं देना चाहती। वहीं, कुछ मंत्रियों की परफॉर्मेंस भी ठीक नहीं है। ऐसे में उनको हटाकर नए चेहरों को मौका दिया जा सकता है। मौजूदा कैबिनेट के 6 मंत्रियों पर सत्ता और संगठन दोनों की नजर है। इसमें बुंदेलखंड के दो, मालवा-निमाड़ से एक, ग्वालियर संभाग के एक, मध्यभारत से एक और विंध्य से एक मंत्री शामिल है। परंतु सिंधिया अपने मंत्रियों को सत्ता से बाहर करने को तनिक भी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि सरकार बनाते समय यह फॉर्मूला तय हुआ था कि इस सरकार में उनके समर्थक मंत्री बने रहेंगे। अगली बार के चुनाव में परिवर्तन होंगे। शिवराज कैबिनेट में अधिकतम सदस्यों की संख्या 35 हो सकती है, लेकिन अभी मुख्यमंत्री को मिलाकर 31 सदस्य ही हैं। ऐसे में चुनाव से पहले जातिगत और क्षेत्रीय समीकरण साधने के लिए चार मंत्रियों के पद भरने और मंत्रियों के विभाग में फेरबदल किया जाएगा। केंद्रीय नेतृत्व से भी बदलाव को लेकर अनुमति मिल गई है। शिवराज सिंह चुनावी साल में अपने मंत्रिमंडल में विस्तार करते हैं। अभी सरकार का फोकस आदिवासी वोटरों को साधने पर है। साथ ही मंत्रिमंडल में क्षेत्रीय असंतुलन को भी ठीक करना है। ऐसे में सरकार जोबट में कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुई सुलोचना रावत और विंध्य-महाकौशल में क्षेत्रीय समीकरण साधने के लिए राजेंद्र शुक्ला, शरदेंदु तिवारी, संजय पाठक को मौका दे सकती है। इसके अलावा पूर्व मंत्रियों को भी शामिल कर उनकी नाराजगी दूर करने की रणनीति के अनुसार काम करेगी।

सूत्रों का कहना है कि शिवराज सिंह चौहान सरकार का तीसरा मंत्रिमंडल विस्तार व फेरबदल दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में होने जा रहा है। इसमें 10 से 12 नए चेहरे मंत्रिमंडल में शामिल होंगे। वर्तमान में मुख्यमंत्री को मिलाकर कैबिनेट में 31 सदस्य हैं। चार पद रिक्त हैं। इन चार पदों के साथ नॉन परफॉर्मेंस वाले मंत्रियों को बदला जा सकता है। हाल ही में हुई दो कोर कमेटियों में इस पर सहमति बन गई है, क्योंकि कुछ मंत्रियों की शिकायतें भी कोर कमेटी तक पहुंची हैं। बदले जाने वाले चेहरों की कसौटी पर सिंधिया कोटे के भी लोग शामिल हैं। उनके कोटे से 6 कैबिनेट और 3 राज्यमंत्री हैं। मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल नवंबर माह में ही संभावित था, लेकिन अब इसे गुजरात चुनाव तक रोका गया है। गुजरात के नतीजे 8 दिसंबर को आ जाएंगे। इसके बाद मप्र में विधानसभा का शीतकालीन सत्र होगा। इसी के बाद बदलाव होगा। केंद्रीय भाजपा की तरफ से हरी झंडी मिल गई है। अबकी बार कैबिनेट विस्तार में जातीय और क्षेत्रीय संतुलन को महत्व दिया जाएगा। वर्तमान समय में शिवराज कैबिनेट 31 में से इस समय 10 मंत्री क्षत्रिय हैं। इनमें महेंद्र सिंह सिसोदिया, गोविंद सिंह राजपूत, अरविंद सिंह भदौरिया, प्रद्युम्न सिंह तोमर, राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, यशोधरा राजे सिंधिया, बृजेंद्र प्रताप सिंह, ऊषा ठाकुर, इंदर सिंह परमार और ओपीएस भदौरिया शामिल हैं। मंत्रिमंडल में 25

सोशल मीडिया पर मंत्रियों की उपस्थिति कमजोर

मप्र में विधानसभा के चुनावों के लिए भले ही अभी एक साल का समय बचा है, लेकिन इससे पहले भाजपा और कांग्रेस मैदान के साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक्टिव हो चली है। 2023 के लिए दोनों ही पार्टियों का फोकस सोशल मीडिया पर है। भाजपा ने इसके लिए बड़ा मास्टर प्लान सुघोष बनाया है। इसके जरिए साइबर सेना को 2023 के जंग में उतारा जाएगा। लेकिन हैरानी की बात यह है प्रदेश सरकार के मंत्री ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कमजोर साबित हो रहे हैं। आलम यह है कि प्रदेश के कई मंत्री सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 30 हजार फॉलोअर्स भी नहीं बना पाए हैं। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक साल पहले मंत्रियों से कहा था कि वे अपने विधानसभा क्षेत्र के कुल वोटर्स में 5 प्रतिशत लोगों को सोशल मीडिया से जोड़ें। साथ ही फेसबुक, ट्विटर, कू और इंस्टाग्राम में अधिक से अधिक सक्रिय रहें। लेकिन, प्रदेश के 5 ऐसे मंत्री हैं, जो चारों प्लेटफॉर्म में 30 हजार फॉलोअर्स भी नहीं बना पाए हैं। इनमें मंत्री विजय शाह, मीना सिंह, प्रेम सिंह पटेल, रामकिशोर कांवरे और सुरेश धाकड़ सबसे पीछे हैं। सोशल मीडिया में अपनी उपस्थिति बनाए रखने के लिए सरकार की तरफ से सोशल मीडिया एनालिस्ट भी नियुक्त किए हैं। जिला और विकासखंड स्तर पर कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया पर ओरिएंटेशन भी दिया गया। इसके बाद भी 30 में 13 मंत्री ही एक लाख से अधिक फॉलोअर्स बना पाए हैं। इस संबंध में मंत्री प्रेम सिंह पटेल का कहना है कि याद नहीं कि सीएम साहब ने सोशल मीडिया में सक्रिय रहने की बात कही है। वैसे हम नकली नहीं, असली सोशल मीडिया में रहते हैं। क्षेत्र में सीधे संपर्क में रहते हैं।

भाजपा व कांग्रेस में छिड़ी जुबानी जंग

राहुल गांधी की मप्र यात्रा से पहले प्रदेश की राजनीति बेहद गर्मा गई है। चल रहीं चर्चाओं के मुताबिक भाजपा ने राहुल गांधी की यात्रा को फ्लॉप करने के लिए बेहद गोपनीय रणनीति बनाई है, जिसके तहत दो या तीन किस्तों में करीब एक दर्जन कांग्रेस विधायकों को भाजपा में शामिल करना है। इस तरह की चर्चाओं के जोर पकड़ने पर कांग्रेस अब भाजपा पर हमलावर हो गई है। उधर, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा का कहना है कि पार्टी इस तरह का कोई आपरेशन नहीं चला रही है, तो कांग्रेस नेताओं का दावा है कि उनके बीच अब कोई गद्दार नहीं है। ऑपरेशन लोटस की चर्चाओं में तेजी की वजह है राष्ट्रपति चुनाव में कई कांग्रेस विधायकों द्वारा पार्टी गाइडलाइन को तोड़कर द्रौपदी मुर्मू के पक्ष में मतदान करना। दरअसल कहा जा रहा है कि राहुल गांधी की यात्रा के मप्र में प्रवेश करने के समय भाजपा कांग्रेस के कुछ आदिवासी विधायकों को अपनी पार्टी में शामिल करा सकती है। उधर इस तरह की चर्चा जोरों पर है कि भाजपा नेता करीब डेढ़ दर्जन कांग्रेस विधायकों के संपर्क में हैं। जिसमें से कई विधायक भाजपा का दामन थाम सकते हैं।

प्रतिशत ओबीसी वर्ग के सदस्य हैं। कैबिनेट में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को मिलाकर 8 सदस्य भूपेंद्र सिंह, कमल पटेल, मोहन यादव, भारत सिंह कुशवाह, रामकिशोर कांवरे, बृजेंद्र सिंह यादव और सुरेश धाकड़ हैं। वहीं मंत्रिमंडल में 3 एससी और 4 एसटी मंत्री हैं। एससी में जगदीश देवड़ा, तुलसी सिलावट और प्रभुराम चौधरी तथा एसटी में विजय शाह, बिसाहूलाल सिंह, मीना सिंह और प्रेम सिंह शामिल हैं। कैबिनेट विस्तार में मंत्री बनने के लिए जो नए दावेदार हैं उनमें एससी से भोपाल के विष्णु खत्री, गुना के जजपाल सिंह जज्जी और जतारा से हरीशंकर खटीक। ब्राह्मण कोटे से रीवा से राजेंद्र शुक्ला व शरदेंदु तिवारी, कटनी से संजय सत्येंद्र पाठक और भोपाल से रामेश्वर शर्मा हो सकते हैं। ओबीसी से मनोज चौधरी व महेंद्र हार्डिया, एसटी से सुलोचना रावत और अनारक्षित में चेतन कश्यप का नाम शामिल है।

गुजरात फॉर्मूले ने बढ़ाई चिंता

मप्र में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा लगातार रणनीतिक मोर्चे पर काम कर रही है। पार्टी मैदानी सक्रियता के साथ ही टिकट वितरण के लिए फॉर्मूलों पर भी चिंतन-मनन कर रही है। इस बीच गुजरात में हुए टिकट वितरण फॉर्मूले ने प्रदेश के मंत्रियों और भाजपा विधायकों की चिंता बढ़ा दी है। दरअसल, भाजपा ने गुजरात विधानसभा चुनाव के लिए 30 प्रतिशत स्टेंडिंग विधायक व मंत्रियों के टिकट काट दिए हैं। यदि मप्र में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में उम्मीदवारी तय करने के लिए यह फॉर्मूला अपनाया जाता है, तो प्रदेश के कई मंत्रियों व स्टेंडिंग विधायकों के टिकट कट सकते हैं। गौरतलब है कि 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा के 41 मंत्री चुनाव हार गए थे। इनमें मप्र के 13, राजस्थान के 20 और छत्तीसगढ़ के 8 मंत्रियों ने अपनी सीट गंवाई। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा गुजरात फॉर्मूला अपना सकती है। भाजपा की आंतरिक रिपोर्ट में वर्तमान में प्रदेश के कई मंत्रियों व विधायकों की स्थिति अच्छी नहीं हैं। इस कारण टिकट कटने की आशंका से कई मंत्री व विधायक अभी से चिंतित नजर आ रहे हैं। इनमें कुछ मंत्री व विधायक कांग्रेस से भाजपा में शामिल होने वाले भी हैं। गुजरात को भाजपा की बड़ी प्रयोगशाला माना जाता है। हर नए फॉर्मूले को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के लिए भाजपा पहले उसका प्रयोग गुजरात में करती है। पिछले डेढ़ दशक से भाजपा में नए चेहरों व युवाओं को आगे लाने के लिए संगठन निरंतर कार्य कर रहा है। संगठन ने गुजरात विधानसभा चुनाव में 30 प्रतिशत नए चेहरों को मैदान में उतारा है, जबकि कई दिग्गज मंत्रियों व विधायकों को टिकट नहीं दिए हैं। सबसे बड़ी बात यह रही है कि टिकटों

नेतापुत्रों का दिखेगा दम

आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर एक तरफ भाजपा और कांग्रेस में रणनीतिक तैयारियां तेज हो गई हैं, वहीं टिकट के दावेदारों की दौड़ भी शुरू हो गई है। भाजपा में हाईकमान ने भले ही परिवारवाद पर समझौता न करने को लेकर क्राइटेरिया साफ किया है, लेकिन मिशन 2023 के घमासान में नेतापुत्रों का दम दिखेगा। इसके लिए फिलहाल पार्टी के चार बड़े नेता 'अपनों' के लिए चुनाव मैदान छोड़ चुके हैं। पूर्व मंत्री गौरीशंकर शेजवार और हर्ष सिंह ने विधानसभा चुनाव में बेटे के लिए मैदान छोड़ा था। अब दो पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन और नागेंद्र सिंह ने चुनाव लड़ने से इंकार किया है। 12 अन्य नेता भी हैं, जिनके अपने टिकट की दावेदारी में हैं। यानी आगामी विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा में टिकट के लिए जोरदार घमासान होने के आसार हैं। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि परिवारवादी पार्टी हमारे लोकतंत्र और युवाओं की सबसे बड़ी दुश्मन है। ये अपने विकास के बारे में ही सोचती हैं। इसके बावजूद नगरीय निकाय और पंचायत चुनावों में भी भाजपा नेताओं ने बेटे-बहू और नजदीकी रिश्तेदारों को चुनाव लड़ाया और इनके लिए पूरी ताकत लगाई थी। अब विधानसभा चुनाव में किस नेता के बेटे या बेटी को टिकट मिलेगा, ये गाइडलाइन ही तय करेगी। मप्र भाजपा में परिवारवाद की बेल लंबी है। प्रदेश में 2023 में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में भाजपा के कई दिग्गज अपने परिजनों के लिए टिकट की दावेदारी कर सकते हैं, लेकिन मोदी का फॉर्मूला चला तो ये दावेदारी खटाई में पड़ सकती है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बेटे कार्तिकेय सिंह चौहान राजनीति में एक्टिव हैं। वो अपने पिता के विधानसभा क्षेत्र बुदनी में सक्रिय हैं। पिछले दो विधानसभा चुनाव में प्रचार की जिम्मेदारी भी संभाली। सिंधिया राजवंश की चौथी पीढ़ी अब राजनीति के मैदान में सक्रिय होती नजर आ रही है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के बेटे महाआर्यमन भी राजनीति में उतर सकते हैं। महाआर्यमन पिछले कुछ वक्त से लगातार सार्वजनिक कार्यक्रमों में नजर आ रहे हैं। भाजपा के कद्दावर नेता और शिवराज सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री गोपाल भार्गव के बेटे अभिषेक भार्गव मप्र की राजनीति सक्रिय हो गए हैं। पंचायत चुनाव में अभिषेक परिवारवाद की राजनीति पर सवाल खड़े कर सुर्खियों में रहे। अभिषेक ने कहा था कि पंचायत चुनाव में भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा परिवारवाद पर बनी गाइडलाइन का पालन होना चाहिए। यदि पूर्व से ही किसी के परिवार में विधायक या सांसद है, तो फिर उस परिवार से किसी अन्य सदस्य को सरपंच, जनपद, या जिला पंचायत का चुनाव नहीं लड़ाना चाहिए।

की घोषणा के बाद बगावत का एक भी स्वर नहीं फूटा है। अगर इस फॉर्मूले से भाजपा गुजरात में एक बार सरकार बनाने में सफल होती है तो पार्टी अगले वर्ष मप्र सहित चार राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव में नए चेहरों को चुनाव में उतारने पर विचार कर सकती है।

मप्र में गुजरात से भिन्न परिस्थितियां

मप्र में गुजरात से परिस्थितियां भिन्न हैं। गुजरात में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का दबदबा है। उनके फैसले के सामने गुजरात का कोई नेता बोलने की हिम्मत नहीं कर पाता है। वहीं प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को छोड़ दिया जाए तो क्षेत्रवार दमदार नेता हैं। मालवा-निमाड़ में कैलाश विजयवर्गीय, ग्वालियर-चंबल अंचल में केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का वर्चस्व है। सिंधिया के साथ कांग्रेस छोड़कर आए विधायक भी टिकट मिलने की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

गुजरात के फॉर्मूले पर मप्र में भी भाजपा अमल कर सकती है, क्योंकि 2018 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने जिन मंत्रियों को चुनाव में उतारा था। उनमें से अर्चना चिटनीस, उमाशंकर गुप्ता, ललिता यादव, शरद जैन, जयंत मलैया, अंतर सिंह आर्य, जयभान सिंह पवैया, लालसिंह आर्य, रुस्तम सिंह, दीपक जोशी, नारायण सिंह कुशवाह, ओमप्रकाश धुर्वे और बालकृष्ण पाटीदार चुनाव हार गए। जानकारी के अनुसार सिंधिया के साथ भाजपा में आए मंत्री व विधायक ज्यादा चिंतित हैं, क्योंकि उनसे किए गए वादे भाजपा पूरे कर चुकी है। आगामी चुनाव में कोई शर्त टिकट आवंटन में आड़े नहीं आएगी, उन्हें संगठन का फैसला मानना होगा। फिलहाल इस संबंध में कोई भी नेता कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है।

कांग्रेस में होगा परिवर्तन

मप्र में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के बाद कांग्रेस में संगठन स्तर पर परिवर्तन किया जाएगा। जिला और ब्लॉक अध्यक्ष बदले जाएंगे। विधायकों को संगठन के दायित्व से मुक्त करके चुनाव की तैयारी में लगाया जाएगा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने इसके लिए संगठन पदाधिकारियों को तैयारी करने के निर्देश दिए हैं। विधायक राकेश मावई, झूमा सोलंकी और फुंदेलाल मार्को पहले ही जिला अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे चुके हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जिला प्रभारी और सह प्रभारियों से जिला और ब्लॉक इकाइयों के कामकाज का प्रतिवेदन ले चुके हैं। प्रदेश संगठन इसका परीक्षण करवा रहा है, जिसके आधार पर प्रतिवेदन तैयार होगा। संगठन के प्रभारी प्रदेश उपाध्यक्ष चंद्रप्रभाष शेखर का कहना है कि प्रदेश, जिला और ब्लॉक स्तर पर परिवर्तन प्रस्तावित हैं। कुछ विधायकों ने चुनाव की तैयारियों के लिए संगठन के दायित्व से मुक्त होने की इच्छा जताई है। प्रदेश अध्यक्ष भी इससे सहमत हैं कि विधायक और चुनाव लड़ने वाले पदाधिकारियों को क्षेत्र में चुनाव की तैयारी करने के लिए अन्य दायित्वों से मुक्त किया जाए। इसे ध्यान में रखते हुए विधायक तरुण भनोत और कमलेश्वर पटेल को छोड़कर किसी को जिला प्रभारी नहीं बनाया गया था। अभी सभी भारत जोड़ो यात्रा की तैयारियों में व्यस्त हैं। तीन दिसंबर को आगर-मालवा होते हुए यात्रा राजस्थान में प्रवेश करेगी। इसके बाद संगठन स्तर पर परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। उधर, सूत्रों का कहना है कि आगामी चुनाव को देखते हुए पार्टी की मीडिया टीम में भी नए पदाधिकारी बनाए जाएंगे, वहीं कुछ को दायित्व मुक्त भी किया जाएगा।

भाजपा के 51 माननीयों के टिकट खतरे में

विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा प्रत्याशियों की सूची जारी होते ही प्रदेश के कई माननीयों की धड़कने तेज हो गई हैं। इसकी वजह है गुजरात का वह फॉर्मूला जिसकी वजह से कई मंत्रियों से लेकर विधायकों व पूर्व मुख्यमंत्री तक को इस बार टिकट से वंचित कर दिया गया। यह फॉर्मूला मप्र में भी लागू होना तय माना जा रहा है। दरअसल इस फॉर्मूले को लागू कर पार्टी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा की सरकार एक बार फिर से बनाने की तैयारी में है। माना जा रहा है कि प्रदेश में गुजरात की तुलना में अधिक माननीयों के टिकट काटे जाएंगे। गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा ने जहां करीब 25 फीसदी विधायकों के टिकट पर कैंची चलाई है तो वहीं मप्र में इसका आंकड़ा 50 फीसदी तक जाने की संभावना अभी से जताई जा रही है। इसके संकेत प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने तभी दे दिए थे, जब उनके द्वारा बूढ़ी भाजपा युवाओं का मनोनयन किया गया था। यही वजह है कि माना जा रहा है कि इस बार 50 से अधिक टिकट काटे जाएंगे। इसकी अपनी वजहें भी हैं। दरअसल प्रदेश में बीते आम विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से बाहर होना पड़ा था। इसके बाद सत्ता में वापसी के लिए पार्टी को 15 माह तक इंतजार करना पड़ा था। अगर भाजपा के मंत्री चुनाव में नहीं हारते तो भाजपा की सत्ता में वापसी तय थी, लेकिन इन मंत्रियों की कार्यशैली ऐसी रही थी की खुद तो हारे ही आसपास की सीट हारने की वजह भी वे बने। मौजूदा सरकार में कई मंत्री ऐसे हैं जो हरल्ले मंत्रियों की राह पर चल रहे हैं। पार्टी और सरकार के पास जो फीडबैक अब तक आया है उसमें ऐसे ही एक दर्जन मंत्रियों के नाम आ चुके हैं, जो अभी चुनाव हो जाएं तो उनकी जीत कठिन मानी जा रही है। दरअसल उनकी कार्यशैली से न तो कार्यकर्ता और न ही जनता ही खुश है। इसका प्रभाव आसपास के इलाकों पर भी पड़ता हुआ दिख रहा है। कहा तो यह भी जा रहा है कि कई मंत्री तो अपने ही कार्यकर्ताओं के तक काम नहीं करते हैं।

जयस ने बढ़ाई चिंता

भाजपा को अभी से आदिवासी वोट बैंक की चिंता सताने लग गई है, जिसको लेकर पार्टी ने काम भी शुरू कर दिया है। उनके प्रभाव वाली विधानसभाओं पर सर्जरी की जिम्मेदारी पार्टी ने डॉ. निशांत खरे को सौंप दी है। ये दायित्व अपने आप में बड़ा और महत्वपूर्ण है, माना जा रहा है कि 2023 के चुनाव में सत्ता का रास्ता आदिवासी सीट ही तय करेगी। जिला पंचायत व नगरीय निकाय चुनाव ने भाजपा और कांग्रेस को चिंता में डाल दिया है। आदिवासी समाज को लेकर काम कर रहे जयस जैसे संगठन ने पहली बार अपने प्रत्याशियों को मैदान में उतारा था। एक तरह से वह ट्रायल था, पर उनका ये प्रयोग कुछ हद तक सफल रहा। कुछ पंचायतों में उनके प्रत्याशी चुनाव जीते तो अच्छे वोट लेकर आए। इन परिणामों से उनमें व जयस में उत्साह है तो भाजपा और कांग्रेस के माथे पर चिंता की लकीरें पड़ गईं हैं।

सालभर बाद विधानसभा चुनाव होना है लेकिन भाजपा ने अभी से आदिवासी वर्ग के बीच में नए सिरे से काम करना शुरू कर दिया है। आदिवासी क्षेत्र को दो हिस्सों में बांटा गया है। मालवा-निमाड़ की जिम्मेदारी डॉ. निशांत

खरे को सौंपी गई तो गोंडवाना बेल्ट का काम श्याम महाजन देख रहे हैं। पश्चिमी मप्र, जिसमें मुख्य रूप से मालवा-निमाड़ सहित करीब 22 सीटें आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित हैं तो करीब 15 सीट पर वोट प्रभाव डालते हैं। इंदौर जिले की 9 विधानसभाओं में महू विधानसभा में आदिवासी समाज का बड़ा वोट बैंक है। खंडवा, खरगोन, बड़वानी, धार, झाबुआ, अलीराजपुर की सामान्य सीटें इसमें शामिल हैं। इनकी सर्जरी के लिए पार्टी ने डॉ. खरे को जिम्मेदारी सौंपी है। संगठन की बारीकी से समझ रखने वाले डॉ. खरे पूरी ताकत से काम में जुट गए हैं। लगातार प्रवास कर रहे हैं तो युवाओं के बीच में गहरी पैठ बनाकर उन्हें जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। गौरतलब है कि प्रदेश में कुल 47 सीट अजजा वर्ग की हैं तो उसको मिलाकर 82 सीट पर 5 से 25 प्रतिशत मतदाता होकर प्रभाव रखते हैं।

अफसरों की होने लगी जमावट

चुनावी मोड में आ चुकी भाजपा अब सत्ता और संगठन के तालमेल के साथ ही मैदानी अफसरों की जमावट में जुट गई है। यानी चुनावी साल में जिन अधिकारियों की एक ही जगह पदस्थापना के तीन साल पूरे होने वाले हैं, उन्हें बदला जा रहा है। सरकार मैदानी अफसरों की पदस्थापना में पदाधिकारियों की राय को महत्व दे रही है। अभी तक मैदानी क्षेत्रों में जो जमावट की गई है, उसके अनुसार सरकार को प्रमोटी आईएएस से ज्यादा प्रमोटी आईपीएस पर अधिक भरोसा है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि प्रदेश के 52 जिलों में से 18 जिलों के कलेक्टर प्रमोटी हैं, वहीं 24 जिलों के पुलिस अधीक्षक प्रमोटी हैं। जानकारी के अनुसार चुनावी साल में हर साल सबसे अधिक प्रमोटी अफसरों पर भरोसा करती है। इसकी वजह यह है कि ये अफसर जनता के सबसे अधिक करीब रहते हैं। मप्र में भी हर चुनावी वर्ष में प्रमोटी अफसरों को सरकार महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देती है। मप्र में भी प्रशासनिक सर्जरी शुरू हो गई है। मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस के रिटायरमेंट और मिशन 2023 की दृष्टि से यह प्रशासनिक फेरबदल काफी मायने रखता है। हुआ भी यही। जहां ऊपरी स्तर पर किए गए तबादलों से चौंकाया तो मैदानी में पोस्टिंग में चुनावी जमावट साफ दिखी। सरकार ने फिर से प्रमोटी अफसरों पर भरोसा जताया है। विपक्ष के प्रति तीखे तेवरों के लिए गुड बुक में रहने वाले अफसरों को इस मैदानी जमावट में प्राथमिकता मिली है। राज्य सरकार ने 15 जिलों में नए कलेक्टर बनाए हैं। इनमें 8 अफसरों को पहली बार कलेक्टरी मिली है। जबकि चुनावी साल में अनुभवी अधिकारी को मैदान की कमान दी जाती है। दूसरी तरफ 18 जिलों में प्रमोटी अफसर हैं। प्रमोटी आईएएस और सीधी भर्ती के आईएएस में अनुभव और कौशल को लेकर एक खास तरह की प्रतिस्पर्धा और टकराव चलता रहता है। चुनाव के साल में नए सीधी भर्ती के आईएएस व राज्य सेवा से पदोन्नत हुए आईएएस को मिली इस पोस्टिंग से उन पर एक खास तरह का दबाव होगा। यूं भी मैदानी पोस्टिंग के लिए सत्ता के प्रति आस्था पहली योग्यता मानी जाती है। शायद यही कारण है कि जिलों में पदस्थ अधिकारी विपक्ष के प्रति सख्त तेवर दिखलाते हैं और सत्ता पक्ष के प्रति अतिरिक्त उदार होते हैं।

24 जिलों में प्रमोटी पुलिस अधीक्षक

मिशन 2023 के मद्देनजर की गई पहली प्रशासनिक सर्जरी में प्रमोटी अफसरों पर भरोसा जताया है। शिवराज सरकार का अनुभव प्रमोटी अधिकारियों के साथ अच्छा होने की झलक बीते दिनों हुए ट्रांसफर में भी देखने को मिली। ट्रांसफर सूची से स्पष्ट संकेत हैं कि सरकार को प्रमोटी आईएएस और आईपीएस अधिकारियों पर ज्यादा भरोसा है। मप्र के कई जिलों की कमान राज्य प्रशासनिक सेवा (राप्रसे) से आईएएस बने अधिकारियों के हाथों में है। ऐसे एक या दो नहीं 18 जिले हैं। हाल ही में हुए तबादलों में प्रदेश के केंद्र बिंदु भोपाल संभाग का संभागायुक्त भी इस संवर्ग से आए मालसिंह भयडिया को बनाया गया है। युवा आईएएस लोकेश जांगिड़ के विवादित बयानों से सुर्खियों में आए बड़वानी कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा स्थानीय नेताओं की शिकायतों के बाद भी वहीं जमे हैं। गत दिनों हुए तबादलों में 2012 बैच के अधिकारी अरुण परमार और कैलाश वानखेड़े को भी कलेक्टर बनाया गया है। सरकार के आंख के तारे केवल प्रमोटी आईएएस नहीं, राज्य पुलिस सेवा से आईपीएस बने अधिकारी भी हैं। ऐसे प्रमोटी आईपीएस के हाथों 24 जिलों की पुलिस कप्तानी है। प्रमोटी आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का सहारा लेने की एक वजह राजनीतिक समीकरण भी मानी जा सकती है।

मप्र में भी लागू हुआ पेसा कानून, राष्ट्रपति ने शहडोल में जारी की नियमावली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जनजातीय गौरव दिवस के कार्यक्रम में शहडोल में मप्र में पेसा कानून की नियमावली को जारी किया। इसके साथ ही मप्र यह कानून लागू करने वाला सातवां राज्य बन गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस मौके पर कहा कि जनजातीय गौरव दिवस पर मैं सभी देशवासियों को बधाई देती हूं। यहां आने से पहले भगवान मुंडा के गांव जाने का सौभाग्य मिला। उनकी जयंती पर उनकी प्रतिमा का दर्शन कर मैं भाग्यशाली महसूस कर रही हूं। राष्ट्रपति के रूप में मप्र की पहली यात्रा में इतनी बड़ी संख्या भाई-बहनों को देखकर मैं बहुत खुश हूं। यहां ज्यादातर लोग हमारी जनजातीय समुदाय के हैं। यह मेरे प्रति उनके विशेष स्नेह और उत्साह का परिचय देता है। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे देश में जनजातीय आबादी की संख्या 10 करोड़ है। डेढ़ करोड़ से अधिक मप्र में है। यहां किसी भी राज्य में सबसे अधिक जनजातीय आबादी रहती है। जनजातीय समुदाय के विद्यार्थियों को आज सम्मानित किया गया है। उन्हें देखकर उम्मीद करती हूं कि आने वाला समय और अधिक उज्ज्वल होगा। मप्र में पेसा कानून के विस्तार से जुड़ी नियम पुस्तिका का विमोचन हुआ है। जनजातीय समुदायों के सशक्तिकरण के लिए इन नियमों का उपयोग किया जाएगा। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि राष्ट्रपति बनने के बाद द्रौपदी मुर्मूजी पहली बार मप्र आई हैं। शहडोल में तो पहली बार कोई राष्ट्रपति आया है। दूर-दूर तक जनसमुदाय दिख रहा है। 83 ब्लॉक्स में यह पेसा कानून लागू होने वाला है। यह जमीन, जंगल, जल, खदानें भगवान ने सबके लिए बनाई है।

बंपर बहुमत की सरकार का सफर

छत्तीसगढ़ के गठन के बाद जोड़तोड़ से शुरू हुआ राजनीतिक सफर बंपर बहुमत की सरकार तक पहुंच गया है। वर्ष 2000 में राज्य गठन के समय कांग्रेस की सरकार बनी। अजीत जोगी को कांग्रेस ने प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में पेश किया। कांग्रेस और भाजपा के विधायकों की संख्या में ज्यादा अंतर नहीं होने के कारण प्रदेश में पहली बार में ही बड़ी संख्या में भाजपा के विधायक टूटकर कांग्रेस के पाले में चले गए। राजनीति का पहिया ऐसा घूमा कि जब 2003 में विधानसभा के चुनाव हुए तो कांग्रेस की सरकार चली गई। इसके बाद अगले 15 साल भाजपा ने ऐसा चक्रव्यूह रचा कि कांग्रेस सत्ता से बाहर रही। 15 साल के सत्ता के वनवास को भूपेश बघेल के नेतृत्व में कांग्रेस ने अब तक के सबसे बड़े बहुमत के आंकड़े को छुआ। विधानसभा चुनाव में पहली बार किसी दल के एक साथ 68 विधायक चुने गए। उसके बाद हुए उपचुनाव में कांग्रेस की जीत का सिलसिला चलता रहा और कांग्रेस विधायकों की संख्या 71 तक पहुंच गई।

राज्य गठन के शुरुआती वर्षों में विकास की नींव रखी गई, तो भाजपा ने 15 साल में प्रदेश में रोड, रेलवे, इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में बेहतर काम किया। भाजपा सरकार में प्रशासन के विकेंद्रीकरण को देखते हुए छोटे जिलों के गठन की शुरुआत हुई। विकास की बात के बीच भाजपा सरकार के माथे पर नक्सलवाद एक कलंक के रूप में उभरा। देश की सबसे बड़ी नक्सली घटनाओं के लिए छत्तीसगढ़ को पहचाना जाने लगा। ताड़मेटला हो, पामेड़ हो, मदनवाड़ा हो या फिर झीरम घाटी में नक्सली हमला, हर बार भाजपा सरकार को बैकफुट पर आना पड़ा। रमन सरकार के पहले कार्यकाल में गरीबों के लिए चावल की योजना शुरू हुई, जिसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह को चाउर वाले बाबा की उपाधि मिली। लेकिन उनकी सरकार में ही सबसे बड़ा पीडीएस घोटाला हुआ। एंटी करप्शन ब्यूरो ने नागरिक आपूर्ति निगम के दफ्तर में छापा मारा और करोड़ों रुपए की राशि जब्त की। रमन सरकार के तीसरे कार्यकाल में अंखफोड़वा कांड, गर्भाशय कांड और बीपीएल के राशन कार्ड में कटौती ने ऐसा माहौल बनाया कि विपक्षी दल प्रशासनिक आतंकवाद का आरोप लगाने लगा। रमन मंत्रिमंडल के चेहरों से नाराजगी का असर यह हुआ कि 15 साल सत्ता में रहने के बाद वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के सिर्फ 15 विधायक ही जीत सके।

वर्ष 2018 में कांग्रेस के मजबूत नेतृत्व और भाजपा नेताओं से जनता की नाराजगी का परिणाम आया। झीरम घाटी कांड के बाद हुए 2013 के चुनाव में कांग्रेस हार गई थी। इसके बाद केंद्रीय नेतृत्व ने भूपेश बघेल जैसे आक्रामक छवि वाले नेता को प्रदेश अध्यक्ष और सौम्य छवि वाले टीएस सिंहदेव को नेता प्रतिपक्ष बनाया। 5 साल सदन से लेकर सड़क तक कांग्रेस मजबूती से नजर आई। भाजपा सरकार की गलतियों और मंत्रियों से जनता में आक्रोश तो था ही, सीडी कांड में भूपेश बघेल की गिरफ्तारी के बाद पूरा राजनीतिक समीकरण बदल गया। इसके बाद कांग्रेस में एक नारा चला, खाबो लाठी, जाबो जेल, हमर नेता भूपेश बघेल। इस नारे ने न सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रिचार्ज किया, बल्कि सत्ता की दहलीज तक पहुंचा दिया। चुनाव से पहले भाजपा कार्यकर्ता नेताओं से तो नाराज थे ही, कांग्रेस के घोषणापत्र ने रही कही कसर पूरी कर दी। जिस दिन कांग्रेस ने घोषणा की कि सभी किसानों का कर्ज माफ होगा, बिजली बिल हाफ होगा और धान की खरीदी 2500 रुपए प्रति क्विंटल में होगी। गांव-गांव में कांग्रेस के पक्ष में लहर मजबूत हुई और छत्तीसगढ़ की राजनीति में अब मां, माटी और मानुस की बात शुरू हो गई है। विधानसभा चुनाव से एक साल पहले कांग्रेस ने चुनावी एजेंडा सेट कर दिया है। कांग्रेस अब छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़िया को लेकर आगे बढ़ रही है। मां (छत्तीसगढ़ महतारी), माटी को बचाने जैविक खेती, तो मानुस के लिए ब्लॉक स्तर पर रूरल इंडस्टीयल पार्क खोले जा रहे हैं। कांग्रेस सरकार ने प्रदेश के सभी जिलों में छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति लगाने की घोषणा की। कांग्रेस के छत्तीसगढ़िया दांव की भाजपा काट खोज ही रही थी कि भाजपा के सहप्रभारी नितिन नबीन ने छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति लगाने पर सवाल खड़ा कर दिया। कांग्रेस ने इस बयान को लेकर भाजपा की नीयत पर सवाल खड़ा कर दिया। कांग्रेस ने इसे छत्तीसगढ़ी अस्मिता के विरोध के रूप में पेश करना शुरू कर दिया। अब भाजपा नेता इसका जवाब तलाश रहे हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पदभार संभालने के बाद छत्तीसगढ़ी माटी के लिए महत्वाकांक्षी योजना नरवा, गरवा, घुरवा बाड़ी लांच की। नरवा योजना में नालों में पानी और भूजल स्तर को सुधारने की दिशा में पहल की गई। गायों को बचाने के लिए गोठान बनाया गया, जिसमें अब नवाचार हो रहा है।

सरकार गोबर और गोमूत्र की खरीदी कर रही है, जिससे किसान आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं। बाड़ी की ताजी सब्जियों के लिए भी बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है। माटीपुत्रों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए रूरल इंडस्ट्रीयल पार्क बनाया जा रहा है, जिसमें बड़े पैमाने पर रोजगार मिल रहा है। कांग्रेस के राजनीतिक एजेंडे (मां, माटी और मानुस) के लिए अब भाजपा नए सिरे से रणनीति बना रही है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने मीडिया से चर्चा में भाजपा नेताओं से पूछा कि क्या छत्तीसगढ़ भारत से बाहर है। उन्होंने कहा कि हर प्रदेश का अपना गौरव है। हम लोग छत्तीसगढ़ को मां के रूप में देखते हैं। उसी का नारा भी लगाते हैं और पूजा भी करते हैं।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

क्षेत्रीय दलों ने कभी कांग्रेस तो कभी भाजपा को रोका

छत्तीसगढ़ में भले ही कोई क्षेत्रीय दल सफल न रहा हो, लेकिन कभी कांग्रेस तो कभी भाजपा की राह मुश्किल जरूर की। राज्य गठन के बाद पहली बार हुए चुनाव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का झंडा उठाकर विद्याचरण शुक्ल ने तीसरे मोर्चे का नेतृत्व किया। उनके एक विधायक ही जीते, लेकिन राज्य में 7 प्रतिशत वोट शेयर के साथ राकांपा ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया। दूसरे चुनाव में कांग्रेस की आंतरिक गुटबाजी ने तीसरे मोर्चे का काम किया और सत्ता से दूर रही। तीसरे विधानसभा चुनाव में भाजपा के बागी तारांचद साहू ने छत्तीसगढ़ स्वाभिमान मंच बनाकर चुनाव लड़ा, लेकिन वह भी सफल नहीं हो पाया। वर्ष 2018 से पहले अजीत जोगी ने कांग्रेस से अलग होकर बसपा के साथ गठजोड़ किया और चुनाव में ताल ठोंकी। जोगी की जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जकांछ) के 5 और बसपा के 2 विधायक जीते। प्रदेश की करीब 5 सीटों पर जकांछ के प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रहे। इन सीटों पर भाजपा के विधायक थे, जिन्हें हार का सामना करना पड़ा।

नाक का सवाल बन गए चुनाव

हिमाचल और गुजरात चुनाव में भाजपा के डबल इंजन की सरकार की अग्नि परीक्षा है। हिमाचल में मतदान संपन्न हो गया है, जबकि गुजरात में मतदान होना बाकी है। ये चुनाव सभी के लिए नाक का सवाल बने हुए हैं।

चुनाव आयोग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के गृहराज्य गुजरात में मतदान की तिथियों की घोषणा कर दी है। 1 और 5 दिसंबर को गुजरात में दो चरणों में मतदान होगा और 8 दिसंबर को हिमाचल प्रदेश के साथ परिणाम सुनाए जाएंगे। अब जबकि चुनाव आयोग ने अपने पत्ते खोल दिए हैं तो यह देखना भी जरूरी है कि आज की तारीख में कौन सा राजनीतिक दल गुजरात में कहां खड़ा है। हिमाचल प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस फिर से आमने-सामने की लड़ाई में है। कांग्रेस ने दिल्ली से सबक सीखा है। अरविंद केजरीवाल जब पहली बार कांग्रेस को हराकर दिल्ली में चुनाव जीते थे, तब राहुल गांधी ने कांग्रेस की एक बंद कमरे की मीटिंग में कहा था कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं को केजरीवाल से सीखना चाहिए कि चुनाव कैसे लड़ना होता है।

वह केजरीवाल से इतना प्रभावित थे कि उन्होंने कांग्रेस के समर्थन से दिल्ली में उनकी पहली सरकार बनवा दी थी। फिर कुछ दिन तक कांग्रेस और भाजपा में आम आदमी पार्टी को एक-दूसरे की बी टीम कहने की होड़ मची। आखिर भाजपा और कांग्रेस दोनों को समझ आ गया कि आम आदमी पार्टी दोनों का वोट बैंक खा रही है। पंजाब में उसने कांग्रेस, भाजपा के साथ-साथ क्षेत्रीय पार्टी अकाली दल का वोट बैंक भी निगल लिया।

हिमाचल प्रदेश में पिछले कई चुनावों में किसी राजनीतिक दल की दोबारा सरकार नहीं बनी। एक बार भाजपा और एक बार कांग्रेस की सरकार ही बनती आई है। जैसे पंजाब में भी 1967 से बाद एक बार अकाली दल और एक बार कांग्रेस जीत रही थी। पहली बार 2007 के बाद 2012 में भी अकाली दल दूसरी बार सत्ता में आ गया था। हालांकि हिमाचल में भाजपा कांग्रेस का विकल्प बन गई थी, परंतु पड़ोसी राज्यों हरियाणा और पंजाब में भाजपा कांग्रेस का विकल्प नहीं बन पाई। हरियाणा में वह देवीलाल के लोकदल की जूनियर पार्टनर बनी रही और पंजाब में अकाली दल की जूनियर पार्टनर बनी रही।

2014 से हरियाणा की राजनीति में बदलाव आया, जब देवी लाल के बेटे और पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला भ्रष्टाचार के आरोप में जेल चले गए, और उधर राष्ट्रीय राजनीति में मोदी का उदय हुआ, तो हरियाणा में कमल का फूल खिला, और ऐसा खिला कि 2019 में भाजपा ने सत्ता में वापसी भी कर ली।

हिमाचल में भी अब पहली बार लग रहा है कि भाजपा सरकार की वापसी हो रही है। अगर ऐसा होता है तो इसकी वजह आम आदमी पार्टी होगी, क्योंकि वह 68 में से 67 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर मोदी के विपक्ष के रूप में उभरने की कोशिश कर रही है, इसलिए वह हर राज्य में मोदी विरोधी वोटरों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

हिमाचल प्रदेश और गुजरात दोनों ही राज्यों में वह मोदी विरोधी वोटरों को अपनी तरफ आकर्षित कर रही है। इसका सीधा नुकसान मोदी विरोधी प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस को होगा, और मोदी विरोधी वोट बंटने से सीधा फायदा भाजपा को होगा। जिससे दोनों ही राज्यों में भाजपा की सीटें बढ़ सकती हैं। कांग्रेस इस बात को बखूबी समझती है, इसलिए कांग्रेस ने राहुल गांधी की 10 साल पहले कही गई बात को याद करके केजरीवाल के तरीके से चुनाव लड़ने का फैसला किया है।

जारी हुए अपने चुनाव घोषणापत्र में कांग्रेस ने केजरीवाल की तरह रेवड़ियां बांटने का ऐलान किया है। उसने युवाओं, बेरोजगारों, रिटायर्ड बुजुर्गों, महिलाओं, पशुपालकों के अलावा शिक्षा और स्वास्थ्य का स्तर सुधारने के दस लोकलुभावन वायदे किए हैं। कांग्रेस ने वादा किया है कि वह सत्ता में आई तो 5 लाख युवाओं को रोजगार का अवसर देगी, स्टार्टअप के लिए युवाओं को 680 करोड़ रुपए, महिलाओं को 1500 रुपए महीना मुआवजा, पुरानी पेंशन योजना बहाल की जाएगी, हर घर को 300 यूनिट मुफ्त बिजली, हर विधानसभा क्षेत्र में चार अंग्रेजी माध्यम के स्कूल, हर गांव में मोबाईल क्लिनिक से मुफ्त ईलाज, किसानों से रोजाना 10 लीटर दूध और 2 रुपए किलो के हिसाब से गाय का गोबर खरीदेगी। इसके अलावा मजेदार वायदा यह भी है कि किसान खुद अपनी फसल की कीमत तय करेंगे। केजरीवाल स्टाईल इन घोषणाओं का वोटरों पर असर हो सकता है, लेकिन कांग्रेस के सामने मुश्किल यह है कि वीरभद्र सिंह के देहांत के बाद प्रदेश में कांग्रेस के सारे नेता राजनीतिक तौर पर बौने हैं।

कांग्रेस ने वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर इसका सबूत खुद दे

भाजपा के लिए पथरीली हुई हिमाचल की राह

अनुशासित माने जाने वाली भाजपा के अनुशासन को हिमाचल प्रदेश में तगड़ा झटका लगा है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और हिमाचल से ही आने वाले जेपी नड्डा के तमाम मानमनौवल के बाद भी हिमाचल में भाजपा के बागियों ने हथियार नहीं डाले और खुलकर चुनाव मैदान में डटे हुए हैं। बगावत से भाजपा कितनी परेशान है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद बागी उम्मीदवारों को संदेश भेजकर मुकाबले से हटने का आग्रह कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश ऐसा प्रदेश है जहां थोड़े से अंतर से ही हार-जीत तय होती है। ऐसे में लगातार दूसरी बार सरकार बनाने का संकल्प लेकर चल रही भाजपा की राह में भाजपा के ही बागी रोड़ा बन गए हैं। सत्ता बरकरार रखने के लिए और सत्ता विरोधी लहर को मात देने के लिए भाजपा ने दो मंत्रियों सहित 11 मौजूदा विधायकों के टिकट काट दिए।

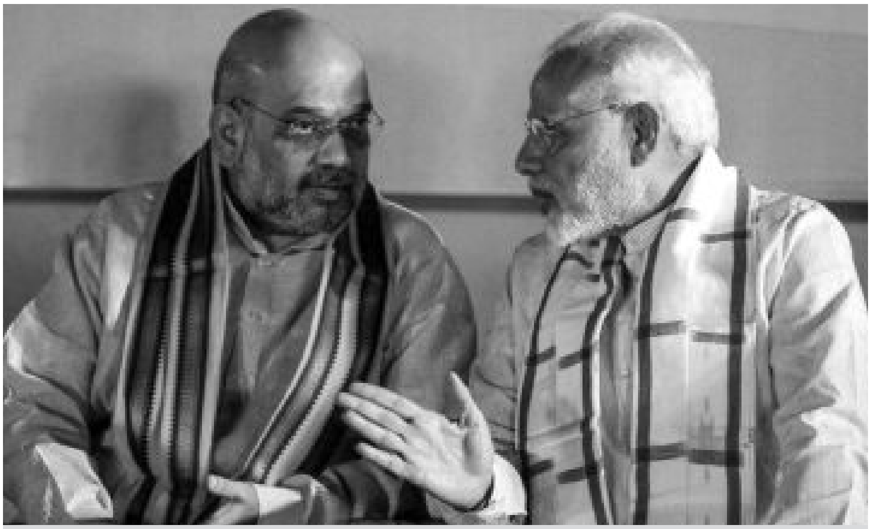

गुजरात में बढ़ रहा है केजरीवाल की लोकप्रियता का ग्राफ

गुजरात में आमतौर पर दो राजनीतिक दलों का ही दबदबा रहा है। कांग्रेस और भाजपा। इस बार गुजरात की राजनीतिक तस्वीर में आम आदमी पार्टी का प्रवेश हुआ है। पहली बार गुजरात के चुनाव मैदान में उतरी आम आदमी पार्टी की ताकत यह है कि हर हफ्ते उसके वोट शेयर में कुछ वृद्धि हो रही है। आम आदमी पार्टी की इस सफलता के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार माना जा रहा है, जिसने अपने वोट बैंक को पूरी तरह से खुला छोड़ दिया। भाजपा के दो सबसे बड़े नेता नरेंद्र मोदी और अमित शाह भी केजरीवाल के बढ़ते कद के लिए जिम्मेदार हैं, जिन्होंने गुजरात में खुद के अलावा किसी और को पनपने ही नहीं दिया, इसी कारण केजरीवाल की तुलना सीधे उन्हीं दोनों से हो रही है। जून महीने के बाद से ही प्रति सप्ताह आम आदमी पार्टी के वोट शेयर में बढ़ोत्तरी कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि गुजरात के मतदाताओं के बीच, भले नकली ही सही, लेकिन अरविंद केजरीवाल अपनी बेहद सरल, सामान्य और सहज उपस्थिति से जो प्रभाव पैदा कर रहे हैं, वह उनकी पार्टी की पैठ बढ़ाने में सकारात्मक साबित हो रहा है।

दिया, क्योंकि दो बार सांसद रहने के बावजूद उनकी छवि चुप रहने वाली रानी की ही बनी हुई है। सब जानते हैं कि वह वीरभद्र सिंह का विकल्प नहीं हो सकतीं, इसलिए कांग्रेस के 4-5 मझौले नेता खुद-ब-खुद मुख्यमंत्री पद के दावेदार हैं।

चुनाव से पहले कांग्रेस के कई बड़े-बड़े नेता पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए, जिस कारण उसे एंटी-इन्केम्बेन्सी का जो लाभ मिलना चाहिए था, वह उससे वंचित हो गई। ऐसा नहीं है कि भाजपा में सब कुछ ठीकठाक है, भाजपा ने 11 विधायकों का टिकट काट दिया और दो मंत्रियों का निर्वाचन क्षेत्र बदल दिया। इससे भाजपा में भी खलबली है, अनेक विधायक बागी होकर मैदान में डट गए हैं। उनसे निपटने के लिए भाजपा को नाकों चने चबाने पड़ रहे हैं, क्योंकि भले ही वे खुद न जीतें, लेकिन भाजपा के नए उम्मीदवार को हराने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

ऐसी कल्पना भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी नहीं की थी। चुनाव की कमान जेपी नड्डा खुद संभाले हुए हैं, क्योंकि अगर भाजपा उनके गृह राज्य में ही हार गई, तो उनकी राष्ट्रीय अध्यक्ष की कुर्सी ही खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए जहां गुजरात जीतना नरेंद्र मोदी और अमित शाह की नाक का सवाल है, तो हिमाचल प्रदेश जीतना जेपी नड्डा की नाक का सवाल है।

कांग्रेस में हिमाचल में सत्ता पाना प्रियंका गांधी की नाक का सवाल है, क्योंकि उन्होंने वहां अपना आलीशान घर बनाया हुआ है। अगर वह अपने गृह-राज्य से कांग्रेस को नहीं जिता पाईं, तो कांग्रेस की भविष्य की नेता बनने के उनके चांस भी खत्म हो जाएंगे। लेकिन प्रियंका गांधी एहतिहात के तौर पर उप्र की तरह खुद कमान नहीं संभाले हुई, परंतु पर्दे के पीछे से सब कुछ वही तय कर रही हैं।

सवाल यह है कि गुजरात और हिमाचल में आम आदमी पार्टी का क्या खेल है। आम आदमी पार्टी का खेल लोकसभा चुनाव से पहले खुद को राष्ट्रीय राजनीतिक दल के तौर पर मान्यता दिलाना है। राष्ट्रीय दल की मान्यता के लिए जो तीन शर्तें निर्धारित हैं, उनमें से एक शर्त यह भी है कि अगर किसी राजनीतिक दल को चार राज्यों में क्षेत्रीय दल की मान्यता मिल जाए तो वह राष्ट्रीय राजनीतिक दल की मान्यता पाने का हकदार हो जाएगा।

राज्य स्तरीय राजनीतिक दल की मान्यता हासिल करने के लिए जो पांच शर्तें निर्धारित हैं, उनमें से एक शर्त यह भी है कि अगर उसे विधानसभा चुनाव में 6 प्रतिशत वोट और 2 सीट मिल जाए अथवा 8 प्रतिशत वोट मिल जाएं, सीट भले न मिले, तो उसे राज्य स्तरीय राजनीतिक दल की मान्यता मिल जाएगी।

दिल्ली, पंजाब और गोवा में आप को राज्य स्तरीय राजनीतिक दल की मान्यता है, अगर गुजरात या हिमाचल प्रदेश में उसे 8 प्रतिशत वोट मिल जाते हैं, अथवा 6 प्रतिशत वोट मिल जाएं और 2 सीट जीत ले तो उसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल की मान्यता मिल जाएगी।

राष्ट्रीय राजनीतिक दल की मान्यता हासिल करने के लिए अन्य शर्तें आम आदमी पार्टी पूरी नहीं करती। पहली शर्त है कि उसे तीन राज्यों से लोकसभा की सीटों का दो प्रतिशत यानि 11 सीटें हासिल हों। आम आदमी पार्टी की लोकसभा में एक भी सीट नहीं है। दूसरी शर्त है कि या तो उसे लोकसभा या चार विधानसभाओं में छह प्रतिशत वोट और साथ में लोकसभा की कम से कम चार सीटें हासिल हों। आम आदमी पार्टी यह शर्त भी पूरी नहीं करती, इसलिए उसके पास एक ही विकल्प है कि वह चार राज्यों में 8 प्रतिशत वोट हासिल करे, अथवा 6 प्रतिशत वोट और कम से कम 2 सीटें जीते। इसलिए आम आदमी पार्टी गुजरात और हिमाचल प्रदेश का चुनाव इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लड़ रही है।

हिमाचल में भाजपा के जिन नेताओं ने भाजपा के लिए राह में कांटे बिछा दिए है उनमें मंडी से प्रवीण शर्मा, बिलासपुर में सुभाष ठाकुर, बंजार में हितेश्वर सिंह, किन्नौर में तेजवंत नेगी, चंबा में इंदिरा ठाकुर, नूरपूर में कृपाल परमार, देहरा में होशियार सिंह, आनी में किशोरी लाला, करसोग में युवराज कपूर, बड़सर में संजीव शर्मा, नालागढ़ में केएल ठाकुर जैसे बड़े नेता शामिल हैं।

यही वजह है कि पार्टी बगावत को लेकर चिंतित नजर आ रही है। भाजपा के लिए चिंता इस बार यह भी है कि उनके मुकाबले कांग्रेस में मात्र 7 सीटों पर ही बागी मैदान में हैं। मौजूदा मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर मंडी जिले से आते हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में यहां की 10 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस का सफाया हो गया था लेकिन लोकसभा उपचुनाव में यहां भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा था। इस बार मुख्यमंत्री ठाकुर के लिए अपना जिला बचाना आसान नहीं होगा। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के क्षेत्र हमीरपुर की 5 विधानसभा सीटों में से 3 पर भाजपा मुश्किल में है। चंबा सदर सीट पर भाजपा उम्मीदवार नीलम नय्यर के खिलाफ उसी की नेता इंदिरा कपूर मैदान में है। पार्टी ने यहां पहले इंदिरा कपूर को टिकट दिया और फिर उनकी जगह नीलम नय्यर को उम्मीदवार बना दिया।

● विपिन कंधारी

पिछले 8 साल से देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी का जिस तरह पतन हो रहा है, वह लोकतंत्र के लिए भी चिंता का विषय है। ऐसे में पार्टी की कमान मल्लिकार्जुन खड़गे के हाथ में आई है। पार्टी को मजबूत करने की राह में खड़गे के सामने कई तरह की चुनौतियां खड़ी हैं।

खड़गे की चुनौतियां

जमीन से जुड़े और 50 साल से राजनीति में अपनी मेहनत से जमे हुए मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के अध्यक्ष बन चुके हैं। उनके सामने अब कांग्रेस का सर्वसम्मत अध्यक्ष बनने की चुनौती है। इसके लिए उन्हें पार्टी के बीच गांधी और गैर-गांधी के दायरे से बाहर निकलना होगा। साथ ही पार्टी से बाहर चले गए नेताओं को वापस पार्टी में लाने की बड़ी और चुनौतीपूर्ण शुरुआत करनी होगी। चूंकि वह गांधी परिवार के पसंदीदा उम्मीदवार थे, उनकी जीत कांग्रेस के बीच गांधी परिवार की ही जीत है। अर्थात् अध्यक्ष चुनाव के बहाने भी गांधी परिवार के हक में ही पार्टी के अधिकांश नेताओं, कार्यकर्ताओं ने समर्थन दिया है। लेकिन इसके बावजूद यदि खड़गे कांग्रेस अध्यक्ष से ज्यादा गांधी परिवार के प्रतिनिधि ही कहलाए जाते रहे, तो भाजपा के पास उन पर आक्रमण करने का अवसर रहेगा और खुद पार्टी के भीतर अध्यक्ष के नाते वह अपनी अथॉरिटी को स्थापित नहीं कर पाएंगे। इसमें कोई दो-राय नहीं है कि राहुल गांधी ही भविष्य में कांग्रेस के प्रधानमंत्री पद का चेहरा होंगे। ऐसे में खड़गे यदि मजबूत अध्यक्ष के रूप में काम करके पार्टी के बीच सभी पक्षों का साथ पाने में सफल रहते हैं, तो वह देश के सर्वोच्च पद के लिए राहुल गांधी की ही राह आसान करेंगे, जो भारत जोड़ो यात्रा के जरिये देश की राजनीति और जनता में अपनी एक नई छवि गढ़ने में सफल होते दिख रहे हैं।

अध्यक्ष का चुनाव करवाकर कांग्रेस ने अब भाजपा को ही चुनौती दे दी है कि वह भी अपने अध्यक्ष का चुनाव करवाए, जहां हमेशा मनोनयन से ही अध्यक्ष तय होते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, जब भाजपा ने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में खड़गे के नाम की घोषणा होने के कुछ मिनट के भीतर ही उन पर गांधी परिवार का डमी होने का तमगा चस्पा कर दिया।

देखा जाए, तो यह तो भाजपा में भी है कि जहा अध्यक्ष जेपी नड्डा को मोदी और शाह के खास के रूप में चिन्हित किया जाता है। ऐसे में समझा जा सकता है कि खड़गे को गांधी परिवार का प्रतिनिधि कहते रहना भाजपा की रणनीति का हिस्सा है, ताकि कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए खड़गे के चुनाव के जरिए चयन को कमतर करके आंका जा सके। यह वैसा ही है, जैसे भाजपा राहुल गांधी को **पप्पू कहकर** उनकी छवि को खराब करती रही है।

लेकिन भाजपा के लिए खड़गे उतना आसान शिकार नहीं होंगे। खड़गे जमीनी राजनीति से बखूबी वाकिफ हैं और भाजपा की सोच के प्रति उनके तेवर हमेशा तीखे रहे हैं। मुद्दों पर वह बहुत बेहतरीन तर्कों के साथ बात करते हैं और दक्षिण भारत से होते हुए भी उनका हिंदी प्रेम और भाषा पर उनकी पकड़ उन्हें एक मजबूत नेता बनाती है। उत्तर भारत में कांग्रेस को हिंदी भाषी छवि वाला नेता चाहिए और खड़गे हिंदी भाषी न होते हुए भी जैसी हिंदी बोलते हैं, उसमें वह किसी को भी अपनी बात समझाने में सफल रहते हैं।

खड़गे अक्सर उन मुद्दों पर बहुत बेबाकी और तर्कों के साथ बोलते हैं, जो राहुल गांधी के प्रिय विषय रहे हैं। इस तरह खड़गे को राहुल गांधी का अनुभवी अवतार कहा जा सकता है। ऐसे में खड़गे और राहुल गांधी एक मजबूत टीम बनाकर नए तेवर से भाजपा को टक्कर दे सकते हैं। खड़गे के लिए तो यह चुनौती गुजरात और हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव से ही शुरू होने वाली है, जहां मतदान के लिए मुश्किल से पखवाड़े भर का ही समय बचा है। गुजरात के चुनाव भी नवंबर-दिसंबर में होने हैं।

हिमाचल में भाजपा के लिए चुनौतियां हैं और कांग्रेस ठोस रणनीति से काम करे, तो भाजपा के लिए बड़ी मुश्किल पैदा कर सकती है। गुजरात में भी भाजपा को तश्तरी में रखकर सत्ता नहीं मिलने वाली है, जहां कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) दोनों ही उसके लिए गंभीर चुनौती बने हुए हैं। कांग्रेस ने इस बार गुजरात में जमीनी अभियान पर काम की रणनीति अपनाई है, जिसकी और खुद प्रधानमंत्री मोदी तक अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए संकेत कर चुके हैं। इसके विपरीत आप ने अपना अभियान

राहुल गांधी का प्रभाव

यह तय है कि संगठन में राहुल गांधी से असहयोग करते रहे नेताओं को अब जगह नहीं मिलेगी। एक पद-एक व्यक्ति के नियम का भी पालन होगा। जाहिर है जो व्यक्ति विधायक या सांसद हैं, उन्हें दूसरा पद शायद न मिले। इससे यह भी लगता है कि प्रदेश के पदाधिकारी यदि विधायक बनते हैं, तो उन्हें पदाधिकारी का पद छोड़ना पड़ेगा। राहुल गांधी आने वाले समय में सभी चुनाव घोषणा-पत्र जनता की राय से बनाने के हक में हैं। तेलंगाना को लेकर तो उन्होंने यह कह ही दिया है। हिमाचल प्रदेश और गुजरात में विधानसभा चुनाव में पार्टी ने तामझाम वाले प्रचार की जगह जमीनी स्तर के प्रचार अभियान की रणनीति अपनाई है। देखना दिलचस्प होगा कि इसका क्या नतीजा निकलता है। गुजरात में कांग्रेस को देखकर लगता है कि वहां वह प्रचार में कहीं नहीं है, लेकिन हकीकत यह है कि उसने प्रचार और जनता तक पहुंचने के लिए अलग रणनीति अपनाई है। उसके नेता जमीनी स्तर पर मैदान में डटे हुए हैं। इसके नतीजे दिलचस्प हो सकते हैं। खड़गे के अध्यक्ष बनने से पहले ही यह रणनीति बना ली गई थी। हालांकि इसमें उनकी भी सहमति थी।

धमाकेदार तरीके से चलाया हुआ है। दोनों ही पार्टियों के अभियान ने भाजपा पर दबाव बनाया है।

खड़गे दोनों ही राज्यों में इस दबाव से कांग्रेस की राह निकाल सकते हैं। हिमाचल और गुजरात भाजपा के लिए कई कारणों से अहम हैं। गुजरात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके सबसे नजदीकी नेता गृहमंत्री अमित शाह, जिन्हें भाजपा में उनके समर्थक चाणक्य कहते हैं; का गृहराज्य होने के कारण चुनावी राजनीति के लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरी और हिमाचल भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का गृह राज्य है और वहां भाजपा की जीत-हार पार्टी में उनकी स्थिति पर असर डालेगी। भाजपा किसी भी सूरत में यह राज्य नहीं हारना चाहती। विपरीत नतीजे उसके लिए बड़ा संकट खड़ा कर सकते हैं और उस पर जबरदस्त मनोवैज्ञानिक दबाव बना सकते हैं। चुनावों में कांग्रेस और खड़गे को मोदी-शाह-नड्डा की मजबूत तिकड़ी से भिड़ना होगा। खड़गे इतने कम समय में इन दोनों राज्यों के चुनाव के लिए क्या रणनीति बनाते हैं, यह देखना दिलचस्प होगा। वह अपने अध्यक्ष होने की शुरुआत चुनाव में हार से नहीं करना चाहेंगे। इसके लिए उन्हें निश्चित ही पार्टी के भीतर नकारात्मक माहौल को बदलना होगा, जो हाल के महीनों में बना है। पार्टी के कार्यकर्ताओं में जीत की भूख जगानी होगी और उन्हें यह बताना होगा कि कांग्रेस राज्यों को जीत सकती है। कांग्रेस के लिए यह अच्छा हुआ कि गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री और कद्दावर नेता शंकर सिंह बघेला के बेटे महेंद्र सिंह बघेला कांग्रेस में शामिल हो गए हैं, जिसका असर वहां दिख सकता है।

हालांकि अध्यक्ष बनना और उस पर काम करना दो अलग-अलग चीजें हैं। इसलिए खड़गे के सामने एक बड़ी चुनौती है। भाजपा का दबाव, पार्टी के भीतर नेताओं को संतुष्ट रखना, चुनावों की चुनौतियां, रणनीति बनाना, राज्यों में यूपीए सहयोगियों के साथ तालमेल रखना इनमें शामिल हैं। इसके अलावा पार्टी ने उदयपुर के चिंतन शिविर में जो फैसले किए थे, उन्हें लागू करने की कठिन जिम्मेदारी खड़गे पर रहेगी। खड़गे अनुभवी राजनेता हैं और कांग्रेस की नब्ज पहचानते हैं। अध्यक्ष बनते ही उन्होंने सक्रियता दिखाई है। संगठन और चुनाव में 50 फीसदी पद युवाओं को देने की राहुल गांधी की सोच को उन्होंने अपनी घोषणा में शामिल किया है। देखना दिलचस्प होगा कि खड़गे का आना कांग्रेस के लिए क्या परिवर्तन लाता है? यदि दो राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस बेहतर प्रदर्शन करती है, तो यह माना जाएगा कि खड़गे का आना पार्टी के लिए शुभ रहा है।

खड़गे पर सबसे मुश्किल जिम्मेदारी यह भी है कि राज्यों में बिना कांग्रेस की कीमत पर उन्हें सहयोगियों के साथ चलना होगा। अगले चुनाव के लिए अभी भी पौने दो साल हैं और राज्यों में भारत जोड़ो यात्रा जैसे और अभियान चलाकर वह कांग्रेस को खड़ा कर सकते हैं। कांग्रेस के लिए यह इसलिए भी जरूरी है कि उसे यदि मुख्य विपक्षी दल बने रहना है और भविष्य में केंद्र की सत्ता हासिल करनी है, तो राज्यों में जमीन मजबूत करनी होगी। अन्यथा आम आदमी पार्टी जैसा दल उसकी जगह लेने में देर नहीं करेगा, जो राज्यों पर फोकस कर अपना देशव्यापी आधार बनाने में जुट गई है। आम आदमी पार्टी राज्यों में सरकार बनाने के लिए जैसे मेहनत कर रही है, उससे वह निश्चित ही आने वाले समय में कांग्रेस के लिए चुनौती बन सकती है। खड़गे ने पद का जिम्मा संभालते ही सबसे पहले सीडब्ल्यूसी को भंग कर दिया और उसकी जगह संचालन समिति का गठन कर दिया। इसमें कमोवेश वही चेहरे हैं, जो हाल के वर्षों में कांग्रेस में चर्चा में रहे हैं। हालांकि यह बहुत अच्छा संदेश होता यदि खड़गे अध्यक्ष पद के चुनाव में अपने प्रतिद्वंद्वी रहे शशि थरूर को भी इस महत्वपूर्ण समिति में जगह देते। थरूर पार्टी के ही भीतर के चुनाव में उनके प्रतिद्वंद्वी थे। लिहाजा उन्हें स्थान देने से खड़गे की तारीफ ही होती और विपक्ष में इसका संदेश जाता कि चुनाव के बाद पार्टी अब फिर एकजुट है। थरूर और जी-23 के कुछ अन्य नेताओं को भी इस समिति से बाहर रखा गया है, जिनमें मनीष तिवारी भी हैं। इससे यह भी हो सकता है कि पार्टी के भीतर एक विरोधी गुट का अस्तित्व बना रहे, भले चुनाव हो जाने के बाद उनका ज्यादा दबाव या विरोध शायद अब नाममात्र को ही रहे। इस गुट के आनंद शर्मा जैसे नेताओं को संचालन समिति में लेकर यह संदेश देने की कोशिश की गई है। यदि आप संभल जाते हैं, तो आपके लिए स्थान है। यह तो साफ है ही कि खड़गे को अध्यक्ष चुनकर पार्टी के बहुमत ने सोनिया गांधी (गांधी परिवार) के ही हक में मुहर लगाई है। स्टीरियंग कमेटी बनाने के बाद खड़गे को अब अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का गठन करना है। इसमें महासचिवों से लेकर उपाध्यक्ष और दूसरे पदाधिकारी मनोनीत होने हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि थरूर जैसे नेताओं को वह कैसे समायोजित करते हैं, क्योंकि अध्यक्ष का चुनाव लड़ चुका नेता शायद महासचिव या उपाध्यक्ष न बनना चाहे। खड़गे राज्यों में वरिष्ठ नेताओं को बड़ी जिम्मेदारियां दे सकते हैं। पार्टी जमीन से जुड़े नेताओं को राज्यों का जिम्मा देने जा रही है, ताकि संगठन को जमीन पर मजबूत किया जा सके।

गांधी परिवार कहां?

काफी साल बाद कांग्रेस को गैर-गांधी अध्यक्ष मिलने के बाद सभी के मन में यह सवाल उठा कि क्या अब गांधी परिवार पार्टी में अप्रासंगिक हो गया? इस सवाल का एक ही जवाब नहीं कि ऐसा बिलकुल नहीं है। अध्यक्ष पद संभालने के बाद खड़गे ने तो यह कहा ही कि पार्टी के लिए गांधी परिवार हमेशा महत्वपूर्व रहेगा। पार्टी के अधिकांश नेता भी मानते हैं कि गांधी परिवार की पार्टी में भूमिका को खत्म करने का मतलब होगा, पार्टी को शून्य कर देना। इसमें कोई दो-राय नहीं कि कांग्रेस को नए विचार और नेतृत्व की जरूरत थी; लेकिन यह भी सच है कि यदि कांग्रेस के भीतर देशव्यापी पहचान किसी नेता की है, तो वह गांधी परिवार के ही नेता हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हाल के वर्षों में भाजपा की तरफ से इतने झटके मिलने के बाद भी गांधी परिवार के ही कारण कांग्रेस मजबूती से अपना अस्तित्व बनाए रख पाई है। भाजपा यदि आज भी किसी पार्टी या नेता से ख़ुद के लिए चुनौती मानती है, तो वह कांग्रेस और गांधी परिवार ही है। यहां तक कि खड़गे को भी राहुल गांधी की पसंद माना जाता है। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी दक्षिण राज्यों में जैसे भीड़ खींचने में सफल रहे हैं, उसकी चर्चा अब हर जगह है। यह कहा जाने लगा है कि भविष्य के चुनावों में कांग्रेस दक्षिण में बहुत बेहतर नतीजे ला सकती है।

● इन्द्र कुमार

बदल रहा राजनीति का ट्रेंड

जैसे-जैसे मुंबई निकाय चुनाव नजदीक आ रहे हैं, महाराष्ट्र की राजनीति में एक नया वोट बैंक भी उभरता नजर आ रहा है। कुछ ही दिन पहले जहां उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना मराठी मुस्लिमों को साधते हुए नजर आ रही थी, अब एक और वोट बैंक निकल आया है। जिन उत्तर भारतीयों पर कभी शिवसेना के तेवर कड़े हुआ करते थे अब उन्हीं उत्तर भारतीयों को पार्टी रिझाने में जुट गई है। ऐसा लगता है कि अब उद्धव गुट को अब उत्तर भारतीयों के साथ की जरूरत पड़ने लगी है। अब पार्टी का कहना है कि शिवसेना ने उत्तर भारतीयों को झोली भर-भरकर दिया ही है। उत्तर भारतीयों ने भी पिछले पांच दशकों से शिवसेना के साथ ही रहना पसंद किया है। इसका सबसे बड़ा कारण है बाबा साहेब ठाकरे का हिंदुत्व। उद्धव ने यह भी माना है कि उत्तर भारतीय समाज और शिवसेना के बीच दरार पैदा हुई थी।

मुंबई में 40 लाख से भी ज्यादा उत्तर भारतीय रहते हैं। शिवसेना इस वक्त अपना बुरा दौर देख रही है। पार्टी में बगावत के सुरों के बाद विधायकों का साथ छूटने के बाद चुनाव चिन्ह भी जब्त हो गया। इसके बाद अब उन्होंने उत्तर भारतीयों का कार्ड खेला है। वहीं, अब भाजपा ने इस पर जमकर निशाना साधा है। भाजपा का कहना है कि शिवसेना सत्ता से बाहर होते हुए भी उत्तर भारतीयों को परेशान करती थी और उनसे वसूली करती थी। इसे उद्धव सेना के नए मास्टर स्ट्रोक के रूप में देखा जा रहा है। गणित और राज्य में बदली हुई राजनीति के मद्देनजर अब वोट बैंक भी बदलते नजर आ रहे हैं। प्रतिष्ठित बृहन्मुंबई नगर निगम के चुनाव में उद्धव सेना 25 सालों से नियंत्रित करती रही है। देखने वाली बात यह होगी की क्या इस बार जनता बदलती हुई इस उद्धव सेना को स्वीकार करेगी। खासकर जब भाजपा इस पर कब्जा जमाने की हर कोशिश कर रही है। वहीं अब पार्टियों के बीच मराठी मुस्लिम को लेकर राजनीति शुरू हो गई। एक तरफ जहां शिवसेना (उद्धव गुट) ने दावा किया है कि उन्हें मराठी मुसलमानों का साथ मिल रहा है तो दूसरी तरफ भाजपा ने इसे तुष्टीकरण की राजनीति बताया है। दरअसल, 22 अक्टूबर को शिवसेना (उद्धव गुट) के मुखपत्र सामना ने पहले पन्ने पर इस बात का जिक्र किया था कि मराठी मुसलमान पार्टी का समर्थन कर रहे हैं। इस पर भाजपा ने तुरंत जवाब दिया और पार्टी पर तुष्टीकरण का आरोप लगाया। मुंबई भाजपा प्रमुख आशीष शेलार ने उद्धव गुट पर हमला करते हुए कहा कि शिवसेना उद्धव बालासाहेब पार्टी मराठी और मुस्लिम वोट हासिल करना चाहती है, लेकिन शब्दों के साथ बड़ी चतुराई से खेल किया है।

वहीं, कांग्रेस और राकांपा दोनों ने उद्धव सेना के साथ गठबंधन करने का वादा किया है, इसे जीतने के लिए, पार्टी को न केवल अपने मराठी वोट बैंक पर पकड़ बनाने की जरूरत है, बल्कि और लोगों को भी जोड़ना होगा। इसी वजह से अब पार्टी ने नया वोट बैंक बनाना शुरू कर दिया है। मराठी वोट बैंक मुंबई में आबादी का लगभग 26-30 प्रतिशत होने का अनुमान है, मुसलमानों की संख्या 14-16 प्रतिशत है।

कभी अपने उग्र हिंदुत्व के लिए जानी जाने वाली शिवसेना के प्रति मुसलमान नरम हो गए हैं। 2019 के विधानसभा चुनावों के बाद भाजपा की सत्ता से इनकार करने के लिए एनसीपी और कांग्रेस के साथ हाथ मिलाने के उद्धव ठाकरे के फैसले ने उस दिशा में एक लंबा सफर तय किया। यही कारण है कि मराठी मुस्लिम सेवा संघ (एमएमएसएस) ने उद्धव की बैठक में पार्टी को अपना समर्थन देने की बात कही।

वर्तमान सरकार ने इस महीने के शुरू में सत्ता में 100 दिन पूरे कर लिए हैं। शिवसेना अध्यक्ष उद्धव ठाकरे के विरूद्ध एकनाथ शिंदे के बगावत करने तथा पार्टी के 55 में 44 विधायकों के साथ एक अलग धड़ा बना लेने के बाद एमवीए सरकार गिर गई थी और वर्तमान सरकार अस्तित्व में आई थी। शिंदे ने इस साल जून में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी और भाजपा के देवेंद्र फडणवीस उपमुख्यमंत्री बने थे। नवंबर, 2019 में सत्ता में आने के बाद शिवसेना, कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) की एमवीए सरकार ने पिछली भाजपा-शिवसेना सरकार के कुछ खास नीतिगत निर्णय पलट दिए थे। भाजपा-शिवसेना सरकार के अगुवा देवेंद्र फडणवीस थे। शिंदे सरकार ने उन चार नीतिगत निर्णयों को वापस लाने का फैसला किया जो 2014-2019 के दौरान फडणवीस सरकार की ओर से लिए गए थे लेकिन बाद में एमवीए सरकार ने इन्हें रद्द कर दिया था। महाराष्ट्र कृषि उपज एवं विपणन (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1963 में केवल ग्राम पंचायत, कृषि साख सोसाइटी एवं बहुद्देश्यीय सोसाइटियों के सदस्यों को ही समिति के सदस्यों के चुनाव की अनुमति थी लेकिन अगस्त, 2017 में भाजपा-शिवसेना सरकार ने उस कानून में संशोधन कर किसानों को भी मताधिकार दिया था। उसे जनवरी, 2020 में एवीए सरकार ने रद्द कर दिया था।

● बिन्दु माथुर

शिंदे सरकार ने फटाफट पलट डाले उद्धव सरकार के 6 फैसले

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे नेतृत्व वाली सरकार ने सीबीआई को राज्य के मामलों की जांच करने और एफआईआर दर्ज करने की आम मंजूरी दी। इसी के साथ शिंदे सरकार ने पूर्ववर्ती महाविकास आघाड़ी (एमवीए) सरकार के कम से कम आधे दर्जन निर्णयों पर रोक लगा दी है या उन्हें पलट दिया है। महाराष्ट्र की राजनीति में एक ट्रेंड देखने को मिल रहा है कि सत्ता में आते ही नई सरकार पिछली सरकार के फैसले बदल देती है। सीबीआई के बारे में राज्य सरकार का फैसला अहम है क्योंकि एमवीए सरकार ने इस जांच एजेंसी को आम मंजूरी यह कहते हुए वापस ले ली थी कि 'राजनीतिक नफा-नुकसान के लिए इसका दुरुपयोग किया जा रहा है।' सत्ता में आने के बाद शिंदे-फडणवीस सरकार पिछली सरकार के 6 फैसले पलट चुकी है। उदाहरण के लिए इन फैसलों में कृषि उपज विपणन समिति (एपीएमसी) बाजारों में किसानों के मताधिकार की बहाली, इमरजेंसी के दौरान जेल में डाल दिए गए लोगों के लिए पेंशन दोबारा शुरू करना, लोगों के बीच से ग्राम प्रमुख और निगम परिषद अध्यक्षों का निर्वाचन और आरे में मेट्रो 3 कार शेड बनाना शामिल हैं। ये फैसले 2014-19 में भाजपा-शिवसेना की तत्कालीन सरकार ने लिए थे जिसे एमवीए सरकार ने पलट दिया था। इसलिए जब उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से पिछली सरकार के फैसले बदलने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, एमवीए ने सत्ता में आने पर हमारे सारे फैसले पलट दिए थे हालांकि हम अनुचित नहीं करेंगे और अगर वे (एमवीए) कोई आपत्ति जताएंगे तो हम देखेंगे।

मुख्यमंत्री का चेहरा कौन?

राजस्थान... कहने को तो यह सूबा रजवाड़ों की भूमि रहा है। जहां बलिदानों की अनगिनत कहानियां आपको हर गांव, कस्बों और शहरों की हवाओं में घुली हुई सुनाई पड़ेंगी। परंतु इतिहास में जो बलिदान यहां के निवासियों ने इस मिट्टी के हित के लिए दिया वो बलिदान आज यहां का हर नागरिक अपने अनहित में देता नजर आ रहा है। जी हां बात अगर सूबे के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य के संदर्भ में की जाए तो यह तर्कसंगत भी प्रतीत होती है।

2018 में विधानसभा चुनाव के परिणामों ने राज्य में कांग्रेस को सत्ता के शिखर तक पहुंचाया। तब दिसंबर की गुलाबी ठंड वाली शामों में सचिन पायलट के ताजपोशी की खबरें समाचार चैनलों और अखबारों की हेडलाइंस भी बन रहीं थीं। लेकिन कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी ने अनुभव को युवा जोश पर तरजीह देते हुए कुर्सी अशोक गहलोत को थमा दी। तब की उन हल्की सर्द हवाओं वाले मौसम को अंगड़ाई लेते देख आज पूरे 4 साल बीतने को आए हैं। पर आज तक राजस्थान का वोटर अनभिज्ञ है कि उसका वोट उसके हित में कार्य कर रहा है या अनहित में। कांग्रेस के राज्य के 2 स्तंभ गहलोत और पायलट की लड़ाई, सत्ता के बंद गलियारों से होते हुए कब सड़कों तक आ गई पता ही नहीं चला। और खामियाजा भुगता जनता ने जो 4 साल बाद भी इस राज से अनजान है कि राज्य में राज कौन कर रहा है? कांग्रेस का वो तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष (पायलट) जिसने उनको सपने दिखाए थे राज्य की कायापलट करने के या वो जादूगर जिसकी जादूगरी जनता 1998/03 और 2008/13 में देख चुकी है।

पायलट समर्थक इस बात से परेशान हैं कि विपक्ष में रहते हुए सदन से सड़कों तक लड़ाई लड़ी उन्होंने और सत्ता सुख भोग रहे गहलोत समर्थक। तो गहलोत को जानने वाले कह रहे हैं कि जादूगर सब कुछ छोड़ सकता है पर जादू करना नहीं। वहीं हाल तो भाजपा के भी कुछ ठीक नहीं लग रहे। भाजपा की हालत कुछ ऐसी है कि हर खिलाड़ी को लगता है कि वो टीम का कप्तान बन सकता है। पर हकीकत तो यह है कि ऐसे हर एक उस खिलाड़ी के टीम के मैदान में उतरते समय अंतिम दल में जगह बनाने के भी लाले पड़ते दिख रहें हैं। बहरहाल 2 महीने बाद जब घड़ी 2023 में कदम रखेगी तो फिर से एक बार वो सुगबुहाहट शुरू होगी आखिर 2023 में राज करेगा कौन? कहीं एक बार फिर से यह राज, राज ही न बना रह जाए।

भाजपा आलाकमान के बार-बार चेताने के बावजूद राजस्थान के भाजपा नेता एक-दूसरे की टांग खिंचाई करने से बाज नहीं आ रहे हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा राजस्थान में भाजपा संगठन को लेकर बहुत गंभीर नजर आ रहे हैं। उनको पता है कि मौजूदा परिस्थितियों में कांग्रेस को हरा पाना मुश्किल है। इसीलिए नड्डा स्वयं भी राजस्थान के दौरे कर रहे हैं और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं को भी लगातार राजस्थान भेज रहे हैं। ताकि राजस्थान में नेताओं के आपसी मतभेद समाप्त हो सकें। मगर नड्डा के प्रयास कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। राजस्थान के संगठन में सबसे अधिक बिखराव पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया के कारण हो रहा है। वसुंधरा राजे पूरा प्रयास कर रही है कि उन्हें एक बार फिर नेता प्रोजेक्ट कर प्रदेश की कमान सौंप दी जाए। मगर भाजपा आलाकमान ऐसा करना नहीं चाहता है। भाजपा आलाकमान का मानना है कि प्रदेश में अब वसुंधरा राजे पहले की तरह लोकप्रिय नहीं है। इसीलिए पार्टी नए नेतृत्व को तैयार कर रही है। जो आने वाले समय में पार्टी की कमान संभाल सके। हालांकि वसुंधरा राजे अपने पक्ष में तर्क देती हैं कि उनके नेतृत्व में पार्टी ने प्रदेश में दो बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई थी। मगर उनके विरोधियों का कहना है कि मुख्यमंत्री रहते वसुंधरा को दोनों ही बार चुनाव में मात भी खानी पड़ी थी। यदि वह लोकप्रिय नेता होती तो उनके मुख्यमंत्री रहते पार्टी चुनाव क्यों हारती। पिछले विधानसभा चुनाव में वसुंधरा राजे ही राजस्थान में पार्टी की एक छत्र नेता थी। मगर फिर भी पार्टी चुनाव हार गई थी। पिछले विधानसभा चुनाव में तो राजस्थान में भाजपा 163 सीटों से घटकर मात्र 73 सीटों पर आ गई थी। भाजपा को सीधे-सीधे 90 सीटों का नुकसान उठाना पड़ा था। वसुंधरा सरकार की नाकामियों को भुनाकर कांग्रेस ने घर बैठे सत्ता हथिया ली थी। अपने मुख्यमंत्री के पिछले कार्यकाल में वसुंधरा राजे पर उनकी पार्टी के ही नेता चाटूकारों से घिरे रहने का आरोप लगाते हैं।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

महारानी से संघ नाराज

वसुंधरा राजे की कार्यशैली से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी भी नाराज रहते थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कई बार वसुंधरा सरकार को अपनी कार्यप्रणाली सुधारने की चेतावनी भी दी थी। मगर वसुंधरा राजे ने किसी की एक नहीं सुनी थी। जिसके परिणाम स्वरूप ही राजस्थान में भाजपा को सत्ता गवांनी पड़ी थी। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी, पूर्व मंत्री यूनुस खान, कालीचरण सर्राफ, राजपाल सिंह शेखावत, प्रताप सिंह सिंघवी, भवानी सिंह राजावत, उनके विशेषाधिकारी धीरेंद्र कमठान जैसे लोग सत्ता के केंद्र बन गए थे। जिनकी सलाह पर ही वसुंधरा राजे फैसले लिया करती थी। वसुंधरा राजे आज भी अपनी उसी पुरानी चौकड़ी से घिरी नजर आती है। भाजपा से निष्कासित पूर्व मंत्री रोहिताश्व शर्मा वसुंधरा के हर कार्यक्रम में शामिल होते हैं। जिसका पार्टी संगठन की तरफ से कड़ा विरोध दर्ज कराया जाता है। मगर फिर भी वसुंधरा राजे अपनी चौकड़ी को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। वसुंधरा विरोधी खेमे के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, अर्जुन राम मेघवाल, सांसद किरोडी लाल मीणा, ओम माथुर, राजेंद्र राठौड़, दिया कुमारी जैसे नेता चाहते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर ही अगला विधानसभा चुनाव लड़ा जाए।

प्रभावहीन योगीराज

अपने कड़े निर्णयों के लिए प्रसिद्ध उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार दो के शासनकाल में अब लोगों में उनके प्रति वो सम्मान नहीं दिख रहा है, जो उन्होंने पिछले शासनकाल में प्राप्त किया था। इसमें संभवत: कोई मतभेद नहीं होगा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का उनके साधु होने के नाते प्रदेशभर के लोग उनका विकट सम्मान करते हैं, मगर एक मुख्यमंत्री होने के नाते अब उनकी छवि पहली बार के शासनकाल की तरह लोगों के मन में नहीं रही।

भौजीपुरा निवासी रामपाल कहते हैं कि ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को उनके ही मंत्री और अधिकारी गुमराह कर रहे हैं। अन्यथा एक संत आदमी किसी का बुरा क्यों करेगा? भौजीपुरा के ही बलवीर कहते हैं कि योगी आदित्यनाथ को जब अपने ही प्रदेश के लोगों का दुख नहीं दिखाई देता है, तो वो उनकी समस्याओं का समाधान कैसे करेंगे। उन्हें तो हर जिले का महीने में एक बार दौरा करना चाहिए और वहां के लोगों से उनकी समस्याएं जाननी चाहिए, ताकि उनका समय पर समाधान हो सके। विकास योजनाएं आती हैं, मगर अधिकारियों तथा ग्राम प्रधानों के बीच ही उनमें पलीता लग जाता है। लोगों तक पांच किलोग्राम राशन अवश्य पहुंच रहा है, मगर सुना है कि उसमें भी बटा लग रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की निंदा तथा प्रशंसा करने वालों की प्रदेश में कमी नहीं है, मगर उनके कुछ कामों की समीक्षा होनी आवश्यक है।

सबसे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उन कार्यों की चर्चा की जाए, जो प्रशंसनीय हैं। इन कार्यों में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार का कार्य है, जो अभी होना है। हालांकि सरकारी लोग बताते हैं कि कुछ तालाबों का जीर्णोद्धार हो चुका है तथा शीघ्र ही पूरे प्रदेश के सभी गांवों में तालाबों का जीर्णोद्धार हो जाएगा, ताकि वर्षा जल संचयन के अतिरिक्त गिरते भूजल स्तर में सुधार हो सके। हर गांव में सरकारी टंकियों पर भी कार्य हो रहा है, जिनसे नगरों एवं महानगरों की तरह ही पीने योग्य पानी टंकी के माध्यम से हर घर तक पहुंचाया जाएगा। कुछ गांवों में ग्रामीणों को पीने योग्य पानी देने के लिए फिल्टर लगाए गए हैं, मगर जनसंख्या के अनुसार इनकी क्षमता अभी बहुत कम है। 5 किलो राशन वाली योजना भी प्रशंसा के योग्य है। ग्रामीण और नगरीय विकास की अनेक योजनाएं इसी प्रकार उप्र विधानसभा में योगी आदित्यनाथ सरकार दो में पास हुई है। मगर प्रश्न यही है कि इन योजनाओं में से कितनी योजनाएं सही रूप से लोगों तक पहुंचेंगी।

कम नहीं हो सका भ्रष्टाचार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को ईमानदार माना जाता है तथा भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध माना जाता है, मगर उनकी इस ईमानदारी का कोई भी असर होता प्रदेश में नहीं दिखता। आज ग्राम पंचायत से लेकर तहसील तथा जनपद स्तर तक कोई भी काम संभवतः ही ऐसा होगा, जिसे प्रदेशवासी बिना रिश्वत दिए करा लेते हों। प्रधानों से लेकर पटवारी तक से ग्रामीणों के काम अधिक पड़ते हैं, मगर उनके काम कितनी ईमानदारी से होते हैं, इसकी जांच प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को एक बार तो अवश्य करानी चाहिए। योगी आदित्यनाथ सरकार में अगर सबसे अधिक परेशान कोई करता है, तो वो है बिजली। नगरों में 24 घंटे के अंदर 4-5 से लेकर 8-8 कट तक लगते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में तो 24 घंटे में बिजली ही 6 से 8 घंटे ही रहती है। उसमें भी कई-कई कट तक लग जाते हैं। इसके अतिरिक्त बिजली महंगी बहुत है। कई लोगों के तो बिल ही इतने आते हैं कि उन्हें अपने अधिक बिलों को सही कराने के लिए बिजली विभाग के चक्कर लगाने के अतिरिक्त रिश्वत तक देनी पड़ती है। ग्रामीण लोगों के पास पैसा इतना नहीं होता कि वो महंगी बिजली का बिल भर सकें, सो अनेक ग्रामीणों ने अपने बिजली कनेक्शन ही कटवा रखे हैं। वहीं बिजली मीटर भी लोग डर से नहीं लगवा रहे हैं। जबकि योगी आदित्यनाथ सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में भी बिजली के मीटर लगवाने के कई प्रयास कर चुकी है।

उप्र कई दशक से अपराधों के लिए बदनाम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इन्हें रोकने में नाकाम रहे हैं, इतना ही सत्य नहीं है। सत्य यह है कि उनके शासनकाल में दुश्कर्मों और अपराधों में बढ़ोतरी हुई है। जबकि मुख्यमंत्री तथा उनके मंत्री सदैव दावा करते रहे हैं कि योगीराज में अपराध घटे हैं। योगीराज ही रामराज्य है। मगर सत्य यह है कि योगीराज में हर दूसरे-तीसरे दिन समाचार पत्रों में सामूहिक दुष्कर्म अथवा दुष्कर्म की घटनाएं प्रकाशित होती हैं। अपराध की दर्जनों घटनाएं हर दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होती हैं। अचंभा तो तब होता है, जब इन्हीं समाचार पत्रों के माध्यम से पता चलता है कि कहीं-कहीं पुलिस भी लोगों के साथ अपराधियों की तरह व्यवहार करती है। सामूहिक दुष्कर्म, दुष्कर्म, अन्य प्रकार के अपराधों पर योगी आदित्यनाथ को प्रदेश का मुख्यमंत्री होने के नाते रोक लगानी चाहिए तथा पुलिस को सख्त आदेश देना चाहिए कि अगर उनके थाना क्षेत्र में कोई अपराध हुआ, तो पूरा का पूरा थाना निलंबित कर दिया जाएगा। तय है कि ऐसा आदेश जारी होने से अपराधों में विकट कमी आएगी।

उप्र के विकास के पोस्टर हर एक-दो किलोमीटर पर लगे दिख जाते हैं। मगर प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली सड़कों की दशा कई वर्षों से दुर्दशापूर्ण है, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना सदैव बनी रहती है। प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों में तो इतने बड़े-बड़े तथा गहरे-गहरे गड्ढे हैं कि वाहनों के क्षतिग्रस्त होने के अतिरिक्त राहगीरों की दुर्दशा हो जाती है। धूल फांकती टूटी-फूटी सड़कें कई वर्षों से अपनी मरम्मत की बारी की बाट जो रही हैं। ग्रामीणों से इस बारे में बात करो, तो अधिकतर लोग डर के मारे कुछ भी बोलने को तैयार नहीं होते। कुछ भाजपा कार्यकर्ताओं का कहना है कि जो विधायक और मंत्री बन चुके हैं, वे अब अपने क्षेत्रों में काम नहीं कराना चाहते हैं। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार की ओर से पहले शासनकाल में भी सड़कों के निर्माण एवं मरम्मत के लिए पैसा पास हुआ था तथा अब भी पैसा विधायक एवं प्रधान निधि के रूप में आ रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ग्रामीण विकास के लिए पर्याप्त पैसा जारी करते हैं, मगर जो लोग काम कराने वाले हैं, वो उस पैसे को या तो दबाकर बैठे हैं या फिर उसे पचाने में लगे हैं। उप्र के सरकारी अस्पतालों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। हाल ही में डेंगू के एक रोगी को प्लेटलेट्स की जगह मौसम्बी का जूस चढ़ाने से उसकी मृत्यु की बात भी सामने आई थी। हालांकि अब कहा जा रहा है कि रोगी को प्लेटलेट्स ही चढ़ाई गई थी, लेकिन रोगी गंभीर हालत में था, इसलिए उसकी मृत्यु हो गई। हालांकि इस मामले को अगर छोड़ दें, तो भी योगी राज में अस्पतालों के कई मामले ऐसे सामने आ चुके हैं, जिनमें एक ही अस्पताल में दर्जनों रोगियों की मौत हुई है।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

कब आएगी बिहार में बहार?

ऐसे कई सवाल हैं, जो आज तक अनसुलझे हैं और उन्हें सुलझाने के लिए जो आत्मबल चाहिए, वहां के राजनीतिज्ञों में उसकी घोर कमी है। ये अपनी कुर्सी पाने से पहले जनता को गफलत में रखते हैं और सत्तासीन हो जाने के बाद उनका दुख जानने, उनकी उम्मीदों को पूरा करने, अपने वादे पर अमल करने की बातें जानबूझकर भूल जाते रहे हैं। इसीलिए जब वहां के युवा बेरोजगारी से आजिज आकर बिहार से पलायन करते हैं और अन्य राज्यों, विशेषकर बड़े शहरों में जाते हैं, तो वही युवा बिहार की दुर्दशा के लिए विषवमन करते हैं।

स्वाभाविक है, दूर तक गलत संदेश जाता है और बिहार की छवि खराब होती है। परिणाम यह होता है कि बाहर से आकर कोई उद्योगपति बिहार में उद्योग नहीं लगाता। सरकारी लापरवाही से स्थानीय सारे उद्योग-धंधे बंद हो गए और युवा दूसरे राज्यों में रोटी के चक्कर में अपमान का घूंट पीते रहे। यह एक उदाहरण है कि 1945-1947 में बिहार में 33 बड़ी-बड़ी चीनी मिलें थीं, आज 10 मिलें हैं। यहां की जमीन गन्ने की फसल के लिए सबसे उपयुक्त है, लेकिन हम गन्ना नहीं उगा सकते, क्योंकि मिलें बंद हैं। रैयाम दरभंगा, लोहट मधुबनी, मोतीपुर मुजफ्फरपुर, गरौल वैशाली, बनमनखी पूर्णिया की पांच चीनी मिलें बंद है बनमनखी चीनी मिल की संपत्ति को कबाड़ में बेचा जा रहा है। 118 एकड़ में फैले इस चीनी मिल की दुर्दशा पर कोई कुछ बोलने के लिए तैयार नहीं है। सकरी तथा समस्तीपुर वाले मिल को सरकार ने बंद कर दूसरा उद्योग लगाने के लिए दे दिया है, लेकिन क्या वे उद्योग लगाए जा सकेंगे? लोहट मिल बंदी के खिलाफ पुर्जों को कबाड़ में बेचने के विरोध में मधुबनी जिलाधीश कार्यालय के बाहर धरना प्रदर्शन जारी है। यही हाल जूट मिलों का है। भारत में जूट का 40 प्रतिशत तक उत्पादन करने वाले बिहार के तीनों मिल बंदी के कगार पर हैं, क्योंकि जूट की खेती अब यहां के किसान नहीं करते हैं। रही बात कागज उद्योग की, तो सैकड़ों एकड़ जमीन में फैले अशोक पेपर मिल हायाघाट आज बंद है और विषैले सांपों का जंगल बन गया है।

बिहार के सहरसा-मधेपुरा हाईवे पर सहरसा से 5 किलोमीटर पूरब बैजनाथपुर कागज मिल को 50 एकड़ में बनाने का कार्य शुरू किया गया था, लेकिन बनने के बाद आज उसकी संपत्ति कौड़ियों के भाव बेची जा रही है। इस उद्योग के निर्माण का कार्य सत्तर के दशक में शुरू किया गया था, उसमें रोजगार की उम्मीद लगाए आज तक सिर पीटते जीवन गुजार रहे हैं। अभी पिछले दिनों जिलाधिकारी ने इसका दौरा किया और कहा है कि इस जमीन का उपयोग कृषि उपयोग में लाए जाने वाली सामग्री बनाने के लिए किया जाएगा। 12 अक्टूबर को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक चुनावी रैली में कहा था, 'ज्यादा बड़ा उद्योग वहां लगता है, जो समुद्र के किनारे के राज्य होते हैं। फिर भी हमने बहुत कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सके।' मुख्यमंत्री की बातें पढ़े-लिखे युवाओं को हतोत्साहित ही कर रही हैं, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान वादा तो यही था कि यदि उनकी सरकार बनी तो लाखों लोगों को रोजगार देने के लिए सरकार कृत संकल्पित होगी। लेकिन हां, यदि भाजपा के नजरिए से देखें तो यह चुनावी जुमला कहलाता है, लेकिन बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव युवा हैं। उनकी बातों पर तो विश्वास अभी तक युवाओं का है और उपमुख्यमंत्री के रूप में जिस आक्रामक तरीके से तेजस्वी यादव काम कर रहे हैं, उसका रिजल्ट देखने के लिए युवाओं को कुछ इंतजार करना ही होगा। सरकार अभी बनी है, इसलिए इस नई सरकार को कुछ समय देना पड़ेगा। सबसे बड़ा सवाल यह कि जिन मिलों से लाखों लोग अपने परिवार की जीविका चला रहे थे, उनका क्या होगा जो अब बंद हो चुकी हैं। चीनी और कागज की जो मिलें बंद हो गई हैं, क्या उन्हें फिर से चालू करने का प्रयास वर्तमान सरकार करेगी? यदि उन्हें फिर से नियमित नहीं किया जाएगा तो फिर किस योजना के तहत बिहार की वर्तमान सरकार रोजगार मुहैया करा सकेगी? यदि सरकार की सोच सच में अपने राज्य के युवाओं को रोजगार देने की है तो सबसे पहले उसे उन सभी चीनी मिलों, कागज मिलों को चालू कराना होगा, क्योंकि जहां घर-घर में सभी बेरोजगार हो, वहां कोई किस प्रकार अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकेगा।

बिहार में 15 वर्ष लालू प्रसाद यादव ने यदि विकास पर अपना ध्यान केंद्रित किया होता और उसके बाद के 15 वर्षों में वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार के विकास की ओर लगाया होता तो जो स्थिति आज वहां हो गई है, तो ऐसी स्थिति देखने को नहीं मिलती। वैसे, यह तो राजनीति में सत्ता पाने के लिए हर दल दूसरे दल को नीचा दिखाने का, भारत ही नहीं विश्व में प्रयास होता ही रहता है, लेकिन बिहार के राजनीतिज्ञ इस मामले में बिल्कुल अलग हैं। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है, क्योंकि सरकार यदि विकास करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएं तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि राष्ट्र अथवा राज्य का विकास न हो, लेकिन बिहार के राजनेता केवल अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही कुछ करते हैं और उन्हें जनता से कोई लेना-देना नहीं होता।

● **विनोद बक्सरी**

'रोजगार देने में भाजपा बाधक'

जनता से उनका लेना-देना केवल चुनाव के समय ही होता है, जब उनका स्वार्थ सिद्ध होना होता है। जो भी हो, बिहार में युवाओं को रोजगार मिले, वहां की सभी बंद मिलें फिर से शुरू हों, उसके हूटर बजे, इसके प्रयास होने चाहिए। ऐसा करने से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा और उन्हें अपने राज्य से बाहर जाने और अपमान का घूंट पीने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ेगा। अब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी यह आरोप नहीं लगा सकते कि उन्हें राज्य और वहां के युवाओं का विकास करने से भाजपा टांग खींचती है। बिहार का विकास पिछले वर्षों में इसलिए भी अवरुद्ध हुआ, क्योंकि देश के किसी भी उद्योगपति ने वहां अपना उद्योग लगाने में रुचि नहीं दिखाई। इसके कई कारणों में एक कारण यह भी है कि उनके मन में यह भय है कि बिहार में उनकी और उनके उद्योग की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। विपक्षियों ने प्रचारित किया है कि बिहार में जंगल राज है, वहां कानून-व्यवस्था नामक कुछ भी नहीं है, बिहार को जमकर बदनाम किया है। वैसे, नीतीश सरकार ने पिछले कुछ सालों में आम लोगों की जिंदगी की जो मूलभूत जरूरतें होती हैं, उन्हें पूरा करने के प्रयास में सड़क और बिजली को ठीक कर दिया है, लेकिन बढ़ती बेरोजगारी ने सब पर पानी फेर दिया है।

पाकिस्तान में खूनी सियासत

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की हत्या करने की कोशिश की गई। हमलावर ने यह बात कबूल की है। हालांकि उसने कहा कि कोई भी उसके पीछे नहीं है। इसके अलावा हमलावर ने यह भी कबूल किया कि वह काफी पहले से ही इमरान खान को मारना चाहता था। इमरान खान ने इस हमले के पीछे तीन लोगों को जिम्मेदार बताया है जिसमें मौजूदा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का नाम भी शामिल है। इसी साल अप्रैल में इमरान खान ने कहा था कि उनकी जान को खतरा है। उन्होंने कहा था कि वह देश के लिए लड़ते रहेंगे। उन्होंने संसद में अविश्वास प्रस्ताव के दौरान कहा था कि विपक्ष विदेशी हाथों की कठपुतली बना हुआ है। पाकिस्तान में सेना सरकार पर भारी रहती है। इस वजह से सरकार स्थिर नहीं रह पाती।

सत्ता हाथ से जाने के बाद इमरान खान पिछले कई महीनों से सत्तारूढ़ दल और सेना के खिलाफ हमलावर रहे हैं तथा रैलियों और जलसों में शहबाज शरीफ की सरकार को खरीद-फरोख्त की सरकार बताते रहे हैं। उन्हें अभूतपूर्व जनसमर्थन भी मिल रहा है, लेकिन सेना और आईएसआई इमरान खान की बढ़ती लोकप्रियता से आशंकित हैं। पाकिस्तान एक राष्ट्र के तौर पर लोकतंत्र की मूल मान्यताओं से बहुत दूर नजर आता है। लोकतांत्रिक देशों में राजनीतिक यात्राओं को सत्ता प्राप्ति का साधन माना जाता है, लेकिन वहां ऐसा बिल्कुल नहीं है। पाकिस्तान में सत्ता के विरोध में जनता को लामबंद करने के लिए 'लांग मार्च' की परंपरा बहुत पुरानी है, हालांकि यह लोकतंत्र की मजबूती का कारण कभी नहीं बन पाई। वहां चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकारों को बर्खास्त करने के लिए सेना ने विपक्षी दलों से मिलकर कई बार इन्हीं 'लांग मार्च' को मजबूत किया। देश में अशांति का माहौल बनाने में मदद की और फिर सुरक्षा के नाम पर प्रधानमंत्री को अपदस्थ करके सैन्य सरकार की स्थापना कर दी। एक बार फिर पाकिस्तान उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। तहरीक-ए-इंसाफ के नेता इमरान खान के नेतृत्व में 'लांग मार्च' का कारवां पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में समाप्त होता, उसके ठीक पहले उन पर हमला हो गया। यह लोकतंत्र को खत्म करने की सुनियोजित कोशिश का हिस्सा दिखाई देता है। इमरान खान को 'लांग मार्च' में जिस प्रकार अभूतपूर्व समर्थन मिला है, वह न तो पाकिस्तान की सेना के लिए सुखद संकेत माना गया और न ही सत्तारूढ़ पार्टी के लिए। इमरान खान देश में तुरंत आम चुनाव चाहते हैं और यह स्थिति उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को स्वीकार नहीं है।

इमरान खान जिस सेना की शह पर 2018 में प्रधानमंत्री बने थे, वही सेना उनके राजनीतिक जीवन की सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी बन गई है। क्रिकेट के मैदान में आक्रामक तेवर के लिए मशहूर रहे इमरान खान राजनीतिक मैदान को आक्रामकता से जीत लेना चाहते हैं, पर उनकी यह कोशिश कामयाब होती दिख नहीं रही है। वे अपने भाषणों में देश की विदेश और गृह नीति की स्वतंत्रता की बात कह रहे हैं, लेकिन सेना के प्रभाव वाले इस इस्लामी देश में यह न तो सिद्धांत रूप में संभव है और न ही व्यवहार में। इस साल रूस द्वारा यूक्रेन पर हमले की शुरुआत में बतौर प्रधानमंत्री इमरान खान की रूस यात्रा और पुतिन से मुलाकात पाकिस्तान की सैन्य रणनीति के उलट मानी गई। अमेरिकी प्रभाव वाले इस देश में इमरान खान की रूस के करीबी दिखने की कोशिश को सेना ने चुनौती की तरह लिया और उसने विपक्षी दलों से हाथ मिलाकर उनको प्रधानमंत्री पद छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

पाकिस्तान में हर सरकार अमेरिका से बेहतर संबंध बनाए रखती है। पाकिस्तानी सेना के पास अधिकांश अत्याधुनिक हथियार अमेरिका के ही हैं। 1979 में अफगानिस्तान में तत्कालीन सोवियत संघ के सैन्य हस्तक्षेप के बीच पाकिस्तान और अमेरिका के सैन्य और कूटनीतिक संबंधों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। बाद में इसके व्यापक वैश्विक प्रभाव पड़े। अफगानिस्तान में मुजाहिद्दीन की सेना, तालिबान का जन्म और सोवियत संघ का विभाजन इन्हीं स्थितियों का परिणाम माना जाता है। अमेरिका की शह पर पाकिस्तान ने आतंकी केंद्र बनाए और अफगानिस्तान से सोवियत संघ की सेना को बाहर निकालने के लिए जिहाद को राजनीतिक हथियार बनाया।

इमरान खान का रूस को समर्थन, उनकी अपरिपक्वता और पाकिस्तानी सैन्य हितों के विपरीत माना गया। इसके बाद पाकिस्तान की राजनीति में भारी उथल-पुथल हुई और सत्ता उनके हाथ से जाती रही। देश के नए प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो बने। सत्ता हाथ से जाने के बाद इमरान खान पिछले कई महीनों से सत्तारूढ़ दल और सेना के खिलाफ हमलावर रहे हैं तथा रैलियों और जलसों में शहबाज शरीफ की सरकार को खरीद-फरोख्त की सरकार बताते रहे हैं। उन्हें अभूतपूर्व जनसमर्थन भी मिल रहा है, लेकिन सेना और आईएसआई इमरान खान की बढ़ती लोकप्रियता से आशंकित हैं।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

पाक में होती रहती हैं राजनीतिक हत्याएं

1947 में पाकिस्तान बनने के बाद से ही सियासत में खूनी खेल चलता रहा है। यहां सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने वाले हमेशा किसी और के निशाने पर रहे। गोली मारने से लेकर फांसी देने तक की साजिशें होती रहीं। यहां तक कि आत्मघाती हमले भी किए गए। पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री लियाकत अली खान की भी 16 अक्टूबर 1951 में हत्या कर दी गई थी। रावलपिंडी के कंपनी बाग में उन्हें गोली मार दी गई थी। वह मुस्लिम लीग की जनसभा के दौरान मंच पर बैठे थे। खान की मौत का रहस्य अब भी रहस्य ही है। लियाकत अली खान मोहम्मद अली जिन्ना के काफी करीबी माने जाते थे। हालांकि लियाकत अली खान ऐसे नेताओं में थे जो कि पाकिस्तान में कट्टरपंथ के पांव नहीं जमने देना चाहते थे। जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तान में काफी लोकप्रिय नेता था। हालांकि जनरल जिया-उल-हक ने तानाशाही शासन के दौरान उन्हें फांसी पर चढ़वा दिया था। कानून के जानकार इसे न्यायिक हत्या बताते हैं। जिया 1978 से 1988 तक पाकिस्तान का राष्ट्रपति और सेना प्रमुख था। उसने जुल्फिकार से सत्ता छीन ली थी। जुल्फिकार पहले ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्हें जनता ने चुना था। भुट्टो की फांसी के 9 साल बाद जिया उल हक की भी संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। बताया जाता है कि 1988 में एक विमान हादसे में उसकी मौत हो गई थी।

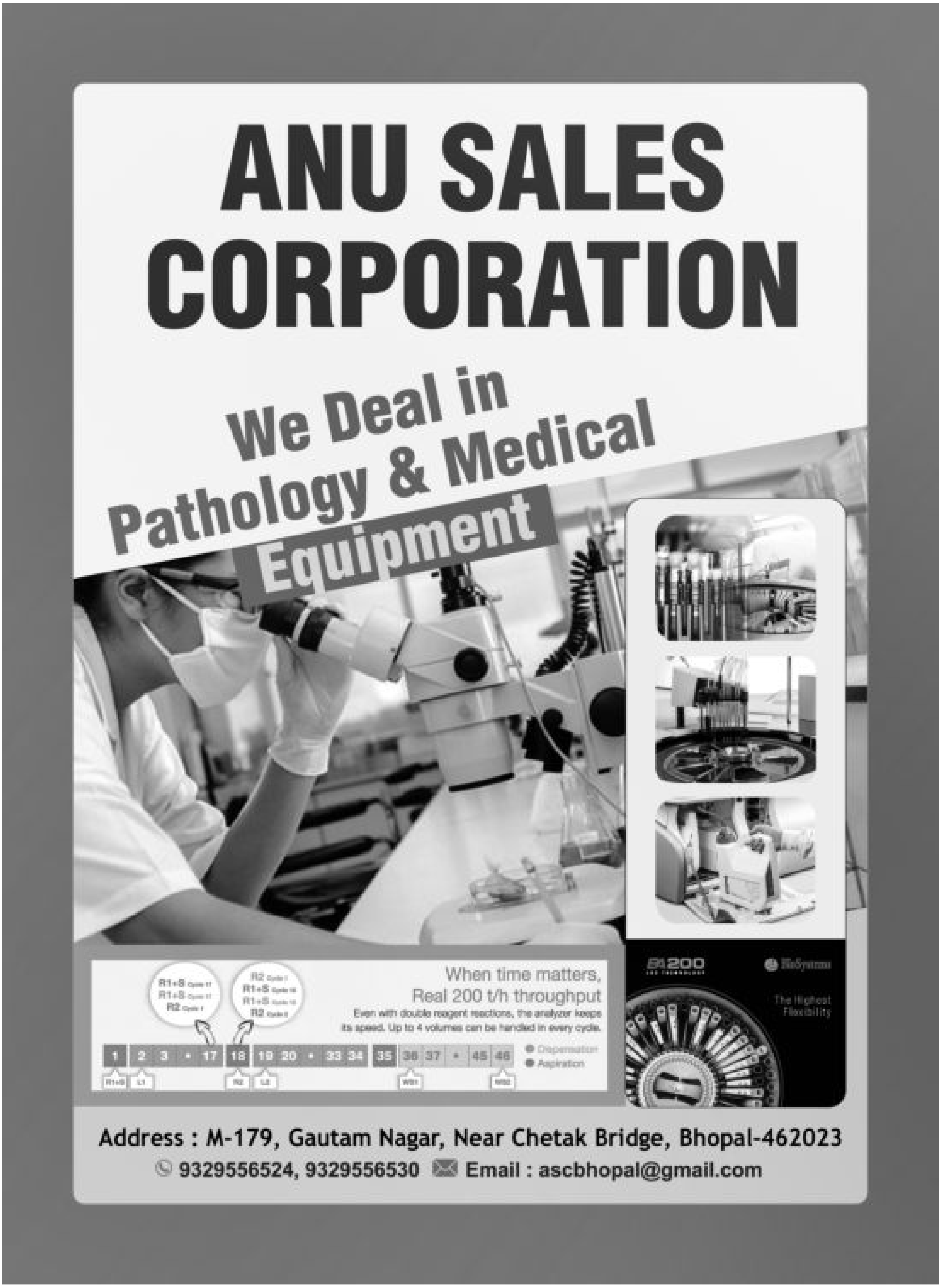
ANU SALES
CORPORATION
We Deal in
Pathology & Medical
Equipment
When time matters,
Real 200 t/h throughput
Even with double reagent reactions, the analyzer keeps its speed. Up to 4 volumes can be handled in every cycle.
Dispensation
Aspiration
BA200
The Highest Flexibility
Address : M-179, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

चीन की बदनीयती

चीन के सबसे बड़े राजनीतिक आयोजन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग का संबोधन किसी सम्राट की भांति रहा। विशुद्ध शाही अंदाज में उन्होंने यह संदेश दिया कि अहम मसलों पर पीछे मुड़ने का उनका कोई इरादा नहीं। इनमें शून्य कोविड नीति से लेकर ताइवान, रिश्वतखोरी विरोधी अभियान और 'चीनी प्रभुत्ववादी धर्म' जैसे उनके प्रमुख एजेंडे शामिल हैं। इन पर दो-टूक बयान से उनका फैसला स्पष्ट है कि अपने देश को उसकी नियति से साक्षात्कार कराने को लेकर उनकी सोच एकदम स्पष्ट है और वह चीन को उसी दिशा में ले जाना चाहते हैं। उन्हें लगता है वही चीन को नए युग में ले जाएंगे।

थेन आनमन चौक स्थित 'द ग्रेट हाल ऑफ द पीपल' में कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस में 2,000 से अधिक प्रतिनिधियों के समक्ष करीब दो घंटे चला शी का भाषण मुख्य रूप से इन्हीं बिंदुओं पर केंद्रित रहा। चूंकि वह लगातार तीसरा कार्यकाल संभालने जा रहे हैं तो माओ जैसे कद्दावर नेताओं की पांत में शामिल हो गए हैं। इसलिए उसे प्रतिबिंबित करने की कोई खास जरूरत नहीं। अब नजर उनके 5 साल के भावी एजेंडे पर होगी, जिसके केंद्र में 'चीनी राष्ट्र का भव्य कायाकल्प' जैसी उनकी महत्वाकांक्षी योजना रहेगी, जिसके जरिए वह अपनी विरासत को मजबूत करेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी नेतृत्व विशेषरूप से शी के लिए ताइवान से अधिक महत्वपूर्ण कोई और मुद्दा नहीं। उन्हें सबसे ज्यादा वाहवाही चीन के एकीकरण और चीनी राष्ट्र के कायाकल्प की बात पर ही मिलीं। उन्होंने कहा कि इतिहास का पहिया इसी दिशा में घूम रहा है और बिना किसी संदेह के राष्ट्र के संपूर्ण एकीकरण को आकार दिया जाएगा। अपने भाषण की शुरुआत में ही वह इस मुद्दे पर आ गए, जो इस मसले की तात्कालिकता और उनकी प्राथमिकता को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि चीन से अलगाव में जुटी अलगाववादी ताकतों की सक्रियता के बावजूद उनकी सरकार ताइवान में अलगाववाद एवं विदेशी हस्तक्षेप से निपटने को लेकर डटी रही। शी ने यही संकेत दिए कि इस मामले में कोई ढील नहीं दी जाएगी और किसी भी प्रकार के विरोध से सख्ती से निपटा जाएगा। ताइवान की आजादी का विरोध और अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता एवं भौगोलिक अखंडता को लेकर उन्होंने कहा कि 'नए दौर में ताइवान के मुद्दे को सुलझाने के लिए हमें समग्र रणनीति के साथ आगे बढ़ना, उसके साथ विनिमय एवं सहयोग बढ़ाना, ताइवान की आजादी का दृढ़ता से विरोध और बाहरी ताकतों का पुरजोर तरीके से प्रतिरोध करना है और ताइवान-स्ट्रेट में पहलकारी रुख एवं प्रभुत्व पर पकड़ बनाए रखनी है।'

जिनपिंग ने यह भी सुनिश्चित किया कि उनकी बात न केवल उनके समर्थकों, बल्कि ताइपे तक भी पहुंच जाए। उन्होंने शांतिपूर्ण कदमों की जुमलेबाजी के साथ ही सभी आवश्यक कदम उठाने के विकल्प की बात भी दोहराई। ताइवान स्ट्रेट में हालिया तनाव को देखते हुए स्पष्ट है कि चीन की वैश्विक पहचान में ताइवान की भूमिका कितनी केंद्रीय हो गई है। फिर चाहे बात घरेलू नीतियों की हो या फिर विदेश नीति आकांक्षाओं की। ताइवान पर फोकस के साथ शी न केवल आक्रामक ताइवान नीति के लिए घरेलू राजनीतिक समर्थन जुटाने की कोशिश में हैं, बल्कि किसी संभावित संकट की स्थिति में बाहर निकलने की राह भी मुश्किल बना रहे हैं।

वैसे तो शी ने दुनिया को यह बार-बार याद दिलाया है कि चीनी सेना ताइवान को मिलने वाली किसी भी विदेशी मदद की काट करने में सक्षम है, लेकिन यह स्पष्ट होता जा रहा है कि वह अब इस मुद्दे पर बेसब्र हुए जा रहे हैं और अपने इरादे भी जाहिर करना चाहते हैं। पार्टी कांग्रेस से निकला संदेश स्पष्ट है कि ताइवान पर चीनी दबाव बढ़ेगा। ताइवानी लोगों का हौसला तोड़ा जाएगा। शी के भाषण पर ताइपे ने भी कड़े शब्दों में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, 'ताइवान का रुख दृढ़ है कि राष्ट्रीय संप्रभुता पर पीछे नहीं हटा जाएगा, लोकतंत्र और स्वतंत्रता से कोई समझौता नहीं होगा और युद्ध तो दोनों ही पक्षों के लिए कोई विकल्प नहीं।' इसे 'ताइवानी जनता की सर्वसम्मति' बताया गया है। ताइवान के प्रधानमंत्री सेंग-चैंग ने कहा कि शी जिनपिंग को हमेशा ताइवान के साथ सख्ती से निपटने के बजाय अपने देश में हो रहे विरोध-प्रदर्शनों पर ध्यान देना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि बीते दिनों बीजिंग में दो बड़े बैनरों के साथ प्रदर्शन किया गया, जिसमें 'शून्य कोविड नीति' को समाप्त करने और शी जिनपिंग को सत्ता से हटाने की मांग की गई थी। असल में ताइवान के साथ चीन के रिश्ते सबसे तल्ख दौर में हैं, क्योंकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को महसूस हो रहा है कि 'शांतिपूर्ण एकीकरण' के लिए समय हाथ से निकला जा रहा है। वहीं ताइवान के रवैए में पीढ़ीगत बदलाव आ रहा है और बीजिंग की तल्ख प्रतिक्रिया से चीन-ताइवान में दूरियां और बढ़ रही हैं। शी ने भले ही 'एक देश-दो शासन' का दांव चलते हुए कहा हो कि यह हांगकांग और मकाऊ के लिए सबसे बेहतरीन संस्थागत तंत्र सिद्ध हुआ है और इसकी आड़ में ताइवान को 'देशभक्तों द्वारा प्रशासित व्यापक स्वायत्तता वाले क्षेत्र' का सब्जबाग दिखाया हो, लेकिन ताइवान में कोई भी अपनी हांगकांग जैसी नियति नहीं चाहता।

● **कुमार विनोद**

शी जिनपिंग का साम्राज्यवादी मोह

चीनी राष्ट्रपति ने जाहिर तो यही किया है कि ताइवान उनकी वैश्विक सक्रियता का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बना रहेगा, लेकिन यह समय भारत सहित शेष विश्व के लिए आकार ले रहे घटनाक्रम के निहितार्थों का गंभीरता से आंकलन करने का है। भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता कि 'द ग्रेट हाल ऑफ द पीपल' में गलवन में हुए संघर्ष के वीडियो फुटेज दिखाए गए। वास्तव में, ताइवान के प्रति बीजिंग की नीति तो एक बड़ी समस्या का लक्षण मात्र है। यह बीमारी है शी जिनपिंग का साम्राज्यवादी मोह। यथास्थिति में एकतरफा परिवर्तन की उनकी यह इच्छा केवल ताइवान तक ही सीमित नहीं रहेगी। यह उनकी साम्राज्यवादी फंतासी की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है। भारत, दक्षिण चीन सागर और पूर्वी चीन सागर भी बहुत ज्यादा दूर नहीं। इसी कारण, ताइवान के साथ व्यापक एकजुटता जताना समय की आवश्यकता है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता: बड़े दिल वाला छोटा वोट बैंक

आंगनवाड़ी और प्रशिक्षित सामुदायिक महिला स्वास्थ्यकर्मी यानी आशा कार्यकर्ता देश की स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ हैं। कोविड महामारी के दौरान भी इस बात को इन्होंने दिखाया। इन महिलाओं ने अदम्य साहस दिखाते हुए बिना किसी लालच या सम्मान पाने की चाहत के टीकाकरण जारी रखकर लाखों बच्चों और मांओं की जिंदगियां बचाईं। मानदेय कम होने के बावजूद उनमें जज्बे की कमी तब भी नहीं दिखी थी और आज भी नहीं दिखती। लेकिन, सरकारों का इनको लेकर रवैया उत्साहजनक नहीं दिखता। चुनावी मौसम में जरूर थोड़ा बहुत इनकी सुध ले ली जाती है। गुजरात में भी ऐसा ही हुआ दिखता है।

आज भी गुजरात, बिहार, छत्तीसगढ़, मप्र, असम आदि राज्यों में ये स्वास्थ्यकर्मी गांवों में अनवरत काम कर रही हैं। हाल में गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों के दौरे में इन कर्मचारियों को लगन से काम करते देखकर लगा कि इनके जज्बे में कोई कमी नहीं आई है। नर्मदा जिला पूर्ण रूप से आदिवासी जिला है जहां के नर्मदा घाटी में सरदार पटेल की आकर्षक मूर्ति बनाई गई है। गुजरात में 14 आदिवासी जिले हैं जहां इन आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को आप लगन से काम करते देख सकते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को राज्य सरकारें मानदेय देती है जो हर राज्य में अलग-अलग होता है। दिल्ली में जहां यह 12,720 रुपए प्रतिमाह है और सहायिकाओं का 6810 रुपए है वहीं मप्र में यह 15 से 18 हजार रुपए तक है जबकि सहायिकाओं को 10,000 रुपए से थोड़ा ज्यादा मिलता है। कुछ राज्यों में तो इन्हें पांच-छह हजार रुपए ही मानदेय के रूप में मिलते हैं। इतने कम पैसों में भी वे एक सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण काम करती हैं। कई बार वे आवाज भी उठाती हैं लेकिन वे सरकारी कर्मचारी नहीं मानी जाती हैं और इसलिए राज्य सरकारें इन पर उतना ध्यान नहीं देती हैं। इनके काम को देखने के बाद लगता है कि इन्हें अपने काम से ज्यादा सम्मान की चाहत है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अपने गांव से दूर जाकर स्वास्थ्य संबंधी कार्य करती हैं। उन्हें अपने परिवार का भी ध्यान रखना पड़ता है। अगर उनके छोटे बच्चे होते हैं तो वह उन्हें किसी के सुपुर्द करके आती हैं। ट्रांसपोर्ट की समस्या हर समय रहती है लेकिन बरसात में यह विकट हो जाती है। साइकिल या पैदल या फिर बैलगाड़ी पर ये आंगनवाड़ी केंद्रों या फिर गांवों में जाती हैं। फिर भी वे शिकायत नहीं करतीं क्योंकि उनमें काम के प्रति एक जज्बा है।

गुजरात के आदिवासी जिले नर्मदा के गाजरगोटा गांव में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता टीना बेन और सहायिका हेमलता बेन कहती हैं कि वे पैसे की परवाह नहीं करतीं। सुदूर कनबुड़ी गांव में हेमू बेन बसावा ने मानदेय के बारे में बातें करने से इनकार कर दिया। उनका फोकस नवजात शिशु और उनकी माएं हैं। उनके लिए वह दिल से काम करती हैं। इसी तरह से अन्य आंगनवाड़ी केंद्रों में भी कार्यकर्ताएं बच्चों को दूध बांटती या पोषणयुक्त आहार देती दिखेंगी। वे शिशुओं की माताओं को प्रशिक्षण देती भी दिखेंगी, लेकिन कोई भी मानदेय की बातें नहीं करतीं। यह उनका निजी मामला है। लेकिन यह बात भी है कि गुजरात में मानदेय को बढ़ाने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को इसी साल सितंबर में धरने पर भी बैठना पड़ा था। इसके बाद ही सरकार ने 51229 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय को 7800 रुपए प्रतिमाह से बढ़ाकर 10,000 रुपए कर दिया है। सहायिकाओं का मानदेय बढ़ाकर 5500 रुपए कर दिया गया है। अभी उनकी कुछ अन्य मांगों पर सरकार विचार कर रही है। चुनावी साल में इनके मानदेय में हुई बढ़ोतरी 15 सालों में सर्वाधकि है। इससे पहले 200, 300, 500 या 700 रुपए की वृद्धि हुआ करती थी।

गुजरात में 53,029 आंगनवाड़ी केंद्र हैं। इनमें से 1800 मिनी सेंटर्स हैं। सरकार ने इन्हें भी आंगनवाड़ी केंद्र में अपग्रेड करने की बात कही है। इनमें से ज्यादातर आदिवासी बहुल इलाकों में हैं। राज्य में 51,229 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और इतनी ही सहायिकाएं हैं। वोट बैंक के लिहाज से यह संख्या बड़ी ही छोटी है, लेकिन आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की इस छोटी-सी बिरादरी का दिल काफी बड़ा है, जो सिर्फ एक ही मोटिव से काम करती हैं कि देश के बच्चे उनके ही बच्चे हैं। भारत में भी कामकाजी लोगों में अवसाद के आंकड़े तेजी से बढ़ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में अवसादग्रस्त लोगों की संख्या 36 फीसदी है। आज के दौर में बदलती जीवनशैली, रोजगार के मोर्चे पर असुरक्षा और सामाजिक-पारिवारिक जीवन में बढ़ रही दिखावापरक सोच न केवल मन का सुकून छीन रही है, बल्कि घुटन और अकेलेपन की ओर भी धकेल रही है। नतीजतन, दुनिया के सबसे युवा देश कहे जाने वाले हमारे देश में युवाओं की आत्महत्या के आंकड़े डराने वाले हैं।

देश में आत्महत्या करने वाले लोगों में अधिकतर 15 से 35 आयु वर्ग के लोग हैं। इनमें एक बड़ा प्रतिशत ऐसे युवाओं का है, जो शिक्षित, जागरूक और कामयाब हैं। आजाद, सफल और स्वस्थ जिंदगी जी रहे हैं। मगर कामकाजी दबाव इस उम्र के लोगों में सबसे ज्यादा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक बेंगलुरु में आत्महत्या करने वालों की संख्या देश में सबसे अधिक है। अकेलापन और अवसाद इसके बड़े कारण हैं।

● ज्योत्सना अनूप यादव

कामकाजी तनाव में असंतुलित जिंदगी

इस सूची में काम का अत्यधिक बोझ, नकारात्मक व्यवहार, भेदभाव और कार्यस्थल पर तनाव को कर्मचारियों की मनोस्थिति के लिए तकलीफदेह बताया गया है। अनुमान है कि मानसिक अवसाद और बेचैनी के कारण हर वर्ष विश्व अर्थव्यवस्था को करीब एक हजार अरब डॉलर का नुकसान पहुंचता है। साथ ही इससे कामकाजी लोगों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में असंतुष्टि, व्यग्रता और अलगाव पैदा होता है। खराब मानसिक स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के प्रदर्शन और उत्पादकता पर नकारात्मक असर डालता है। कोविडकाल के बाद कामकाजी दबाव और रोजगार से जुड़ी चिताएं दुनिया के हर कोने में बढ़ी हैं। इस आपदा के बाद बेचैनी और मानसिक अवसाद के मामलों में 25 फीसदी की वृद्धि हुई है। हालात ऐसे हो चले हैं कि पहली बार यूएन स्वास्थ्य एजेंसी ने प्रबंधकों के प्रशिक्षण की सिफारिश कर कामगारों के लिए तनावपूर्ण माहौल पर लगाम लगाने की बात कही है। दुनिया के हर हिस्से में अवसाद और तनाव का घेरा हर आयुवर्ग के कामकाजी लोगों के जीवन की सहजता में बाधा बन रहा है। जून 2022 में प्रकाशित वर्ल्ड मेंटल हेल्थ रिपोर्ट के अनुसार कामकाजी लोगों में 15 फीसदी वयस्कों को मानसिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। हमारे देश के परिप्रेक्ष्य में एसोचैम की एक रिपोर्ट बताती है कि निजी और सरकारी क्षेत्र में काम करने वाले करीब 42.5 फीसदी कर्मचारी अवसाद का शिकार हैं। समझना मुश्किल नहीं है कि कार्यस्थल पर दबाव झेल रही उनकी मनोस्थिति सामाजिक और पारिवारिक मोर्चे पर भी सहज जीवन में बाधा बन रही है।

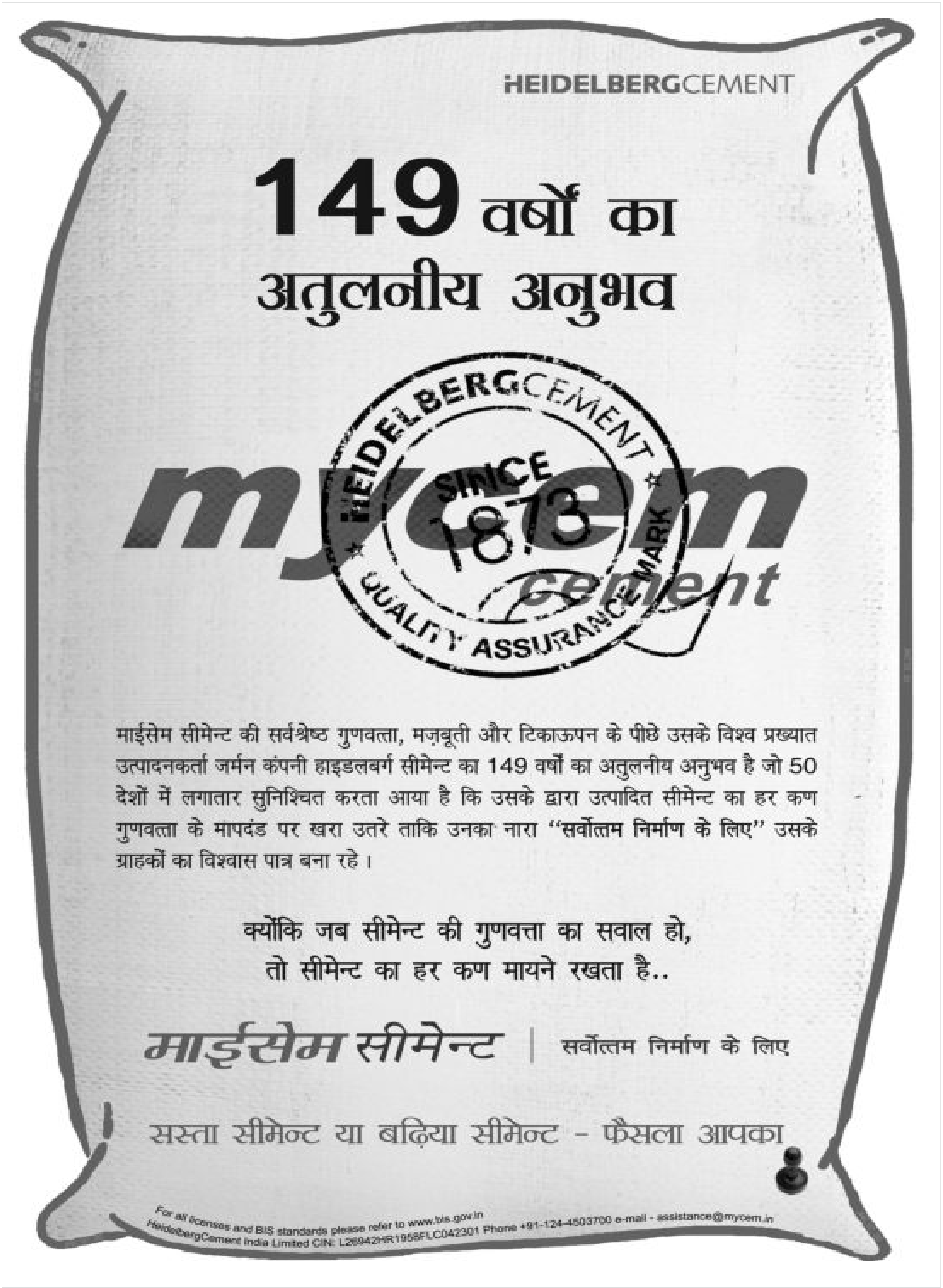

HEIDELBERGCEMENT
149 वर्षों का
अतुलनीय अनुभव
HEIDELBERGCEMENT
SINCE
1873
QUALITY ASSURANCE MARK
mycem
cement
माईसेम सीमेन्ट की सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता, मज़बूती और टिकाऊपन के पीछे उसके विश्व प्रख्यात उत्पादनकर्ता जर्मन कंपनी हाइडलबर्ग सीमेन्ट का 149 वर्षों का अतुलनीय अनुभव है जो 50 देशों में लगातार सुनिश्चित करता आया है कि उसके द्वारा उत्पादित सीमेन्ट का हर कण गुणवत्ता के मापदंड पर खरा उतरे ताकि उनका नारा "सर्वोत्तम निर्माण के लिए" उसके ग्राहकों का विश्वास पात्र बना रहे।
क्योंकि जब सीमेन्ट की गुणवत्ता का सवाल हो,
तो सीमेन्ट का हर कण मायने रखता है..
माईसेम सीमेन्ट | सर्वोत्तम निर्माण के लिए
सस्ता सीमेन्ट या बढ़िया सीमेन्ट - फैसला आपका
For all licenses and BIS standards please refer to www.bis.gov.in
HeidelbergCement India Limited CIN: L26942HR1958FLC042301 Phone +91-124-4503700 e-mail - assistance@mycem.in

उपाय

एक गांधीवादी अपने घर पर पत्नी के साथ अकेला था और सोने की तैयारी कर रहा था। तभी एक आतंकवादी उसके घर में घुस आया और उसकी पत्नी के साथ छेड़छाड़ करने लगा। उसकी पत्नी डरकर पति की ओर देखने लगी कि मुझे बचाने के लिए यह कुछ करेगा।

गांधीवादी उस आतंकवादी के पास आया और हाथ जोड़कर बोला– कृपया मेरी पत्नी को छोड़ दो।

यह सुनते ही आतंकवादी ने उसके एक गाल पर जोर का तमाचा मार दिया। इस पर गांधीवादी ने अपना दूसरा गाल भी उसकी ओर कर दिया और पत्नी को छोड़ने का फिर निवेदन किया। इस पर आतंकवादी ने उसके दूसरे हाल पर और जोर का तमाचा जड़ दिया और उसकी पत्नी से बलात्कार करने के लिए तैयार होने लगा।

अपने दोनों गालों पर तमाचे खाकर गांधीवादी का गांधीवाद हवा में उड़ गया। उसने अपने आस-पास देखा, तो उसे लोहे का एक मूसल दिखाई दिया। उसने चुपचाप मूसल उठाया और पूरी ताकत से बलात्कारी के सिर पर पीछे से दे मारा। इस प्रहार से बलात्कारी का सिर फट गया और वह चीख मारते हुए बेहोश हो गया।

गांधीवादी समझ चुका था कि आतंकवादियों और बलात्कारियों को रोकने का यही सही उपाय है, क्योंकि जो मूसल से ही मानते हैं वे बातों से कभी नहीं मान सकते।

– डॉ. विजय कुमार सिंघल

दीप जलते रहे

स्वप्न पलते रहे, रूप छलते रहे।
रोशनी के बिना, दीप जलते रहे।।

अश्रु सूखे हुए, मीत रूठे हुए,
वायदे प्यार के, रोज झूठे हुए,
आज झनकार के तार टूटे हुए,
राख में अधजले दिल सुलगते रहे।
रोशनी के बिना, दीप जलते रहे।।

नभ में निखरी हुई चांदनी खल गई,
हारकर वर्तिका, नेह बिन जल गई,
कारवां लुट गया, रात भी ढल गई,
काल के चक्र जीवन निगलते रहे।
रोशनी के बिना, दीप जलते रहे।।

उर के कोटर में अब प्रीत पलती नहीं,
सुख की धारा, धरा से निकलती नहीं,
सीप अब मोतियों को उगलती नहीं,
स्वप्न सारे सवालों में ढलते रहे।
रोशनी के बिना, दीप जलते रहे।।

क्या करूं ये सितारों से पूरित गगन,
क्या करूं ये सुहाना-सुहाना पवन,
क्या करूं चांदनी का अनूठा बदन,
रूप अरमान के हाथ मलते रहे।
रोशनी के बिना, दीप जलते रहे।।

– डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

भूख

कुछ दिन पहले की बात है, जिग्या जो मेरे घर खाना बनाने आती थी, उससे मैं सहज स्वभाव बाते कर रही थी। उसने वैसे ही बोल दिया, दीदी खाना खाने का कोई समय ही नहीं रहता है। जब खाने बैठो तो भूख गायब हो जाती है।

मैंने समझाया, जब भूख लगे तभी खा लिया करो। मेरे घर काम में मदद करने वाली सुमन हमारी बातें सुन रही होगी उसका नहीं अंदाज था हमें और नहीं ऐसे उत्तर की अपेक्षा।

वह हाथ में झाड़ू लिए खड़ी थी और बड़े ही सामान्य भाव से बोली, दीदी हमें तो जब भी खाना मिले भूख लग ही जाती है, कोई समय तय नहीं होता है। मैं और जिग्ना दोनों उसकी और भौचक्के से देखते रह गए और वह बुहारी मार कचरा इकट्ठा करने में व्यस्त हो गई थी।

– जयश्री बिरमी

टीम चयन और योजनाओं का अभाव

इंग्लैंड क्रिकेट इतिहास का पहला डबल वर्ल्ड चैंपियन बन गया है। इंग्लैंड टीम ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में 13 नवंबर को खेले गए फाइनल में पाकिस्तान को 5 विकेट से हराकर दूसरी बार टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब जीत लिया है। इंग्लैंड के नाम इस समय वनडे वर्ल्ड कप खिताब भी है। पहली बार किसी टीम के पास एक साथ वनडे और टी-20 दोनों का वर्ल्ड टाइटल है। फाइनल में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान की टीम 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 137 रन ही बना सकी। जवाब में इंग्लैंड ने 19 ओवर में 5 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। इंग्लैंड के लिए सबसे ज्यादा 52 रन नाबाद बेन स्टोक्स ने बनाए। पाकिस्तान के लिए हारिस रउफ ने 2 विकेट लिए। भारत के स्टार बैटर विराट कोहली ने इस टी-20 वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा रन बनाए। उन्होंने 6 मैच में 296 रन बनाए। गेंदबाजी की बात करें तो श्रीलंका के वानेंदु हसरंगा ने टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट लिए। उन्होंने कुल 8 मैच में 15 विकेट झटके। इंग्लैंड के युवा ऑलराउंडर सैम करन प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुने गए। उन्होंने वर्ल्ड कप में 6 मैच खेले और 13 विकेट लिए। फाइनल में उन्होंने 3 विकेट लिए और प्लेयर ऑफ द मैच भी चुने गए।

लेकिन सबसे अधिक चर्चा सेमीफाइनल में भारत की हार की हो रही है। ये हार पहले से तय दिख रही थी। पाकिस्तान से हम पहला मैच हारते-हारते जीते थे। उसके बाद के मैच कमजोर टीमों के खिलाफ थे, जिन्हें आप जीत गए। लेकिन, उन मैचों का भी सूक्ष्म विश्लेषण करेंगे। तो, पाएंगे कि वहां भी हमारा प्रदर्शन क्षमता के अनुरूप नहीं था। एक सौ तीस करोड़ के ऊपर की जनसंख्या वाले देश में ऐसा नहीं है कि खिलाड़ी नहीं हैं। टीम इंडिया के पास पर्याप्त और बेहतर खिलाड़ी हैं। लेकिन, टीम इंडिया के पास योजना का अभाव साफ झलकता है। कार्तिक को किस आधार पर चयनित करते हैं? उसमें क्रिकेट का कितना भविष्य है? क्या निधास ट्रॉफी की सिर्फ एक पारी के दम पर आप उन्हें खिलाते चले जाएंगे? उम्रदराज शिखर धवन को वनडे में आप किस योजना के तहत चयनित करते चले जा रहे हैं? केएल राहुल में नियमितता के अभाव को देखते हुए भी हम निवेश करते चले जा रहे हैं। बार-बार कहा जा रहा है कि केएल राहुल सिर्फ जिम्बाब्वे, नामीबिया जैसी टीमों और चिन्नास्वामी जैसी विकेटों के खिलाड़ी हैं। बड़े मैचों में वे फेल ही दिखते हैं। भुवनेश्वर विश्वकप से पहले ही खराब फार्म से जूझ रहे थे। पेस की कमी के कारण जहां स्विंग नहीं होती, वहां वे बेरंग दिखते हैं। साथ ही अब उनमें पहले जैसी स्विंग भी नहीं रही। अश्विन काफी समय से टी20 टीम का हिस्सा नहीं थे। उन्हें विश्वकप से ठीक पहले खिलाना शुरू किया गया। यह योजनाओं की शून्यता को साफ दर्शाता है।

कभी हमारी टीम योजनाओं का हिस्सा रहे पृथ्वी शॉ गायब हैं। श्रेयस अय्यर सिर्फ टीम के साथ टूर पर जाते हैं। जिस ऋषभ पंत को अबतक टीम में जम जाना था। उसे हम टुकड़ों में मौका देकर उसके आत्मविश्वास को डिगा रहे हैं। लगातार बेहतर खेल रहे संजू सैमसन तभी टीम का हिस्सा होते हैं, जब दूसरी टीम कमजोर होती है और हमें अपने खिलाड़ियों को आराम देने के लिए दूसरे दर्जे की टीम चुननी होती है। ईशान किशन के साथ भी यही हाल है। चाइनामैन कुलदीप यादव आज टीम योजनाओं में नहीं हैं। चहल भी सिर्फ टूर पर ही जाते हैं।

पिछले कई मैचों से हम देख रहे हैं कि शुरुआत के ओवरों में हम 6 से 7 की रन रेट से रन बनाते हैं और विकेट बचाते हैं। आप लाख तकनीक के धनी हों। लेकिन अगर आपके बल्ले से रन ही नहीं निकलते। तो, उस तकनीक के क्या मायने हैं? टी20 मैचों में आखिरकार आपकी तकनीक नहीं बल्कि स्कोरबोर्ड पर टंगे रन और स्ट्राइक रेट ही मायने रखती हैं। भारत को अपने खेलने के तरीके में परिवर्तन करना होगा। ओपनिंग किसी भी पारी का आधार होता है। भारत को इसके लिए सहवाग के दौर से प्रेरणा लेनी चाहिए कि कैसे सहवाग शुरुआत के आठ-दस ओवरों में विस्फोटक शुरुआत दे जाते थे। इससे बाद के बल्लेबाजों को कुछ गेंदे जाया करते हुए जमने का अवसर मिल जाता था। आज इसका उल्टा होता है। शुरुआत से ही रन रेट नीचे रहता है और बाद के बल्लेबाजों पर एकदम से रनरेट बढ़ाने का प्रेशर रहता है। भारत को इस कमी को दूर करने के लिए अपनी योजनाएं बनानी होंगी। न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच जीतने के बाद पाकिस्तानी खिलाड़ियों का जश्न और रिजवान द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस में खुदा का नाम लेते हुए पाकिस्तान का जिक्र करना कुछ लोगों को भले खराब लगा हो। लेकिन, यह उनका अपने मुल्क के प्रति समर्पण को दिखाता है। सोशल साइट्स पर पीसीबी द्वारा डाले गए कई शॉर्ट वीडियोज देखे जा रहे हैं। इन सभी में पाकिस्तान के प्रति उनके समर्पण को महसूस किया जा सकता है। पाकिस्तान की जीत के बाद उनके खिलाड़ियों का स्टेडियम के चक्कर लगाना साफ दर्शा रहा था कि वह जीत और मुल्क उनके लिए कितना जरूरी है।

आईपीएल में अथाह पैसा और शोहरत भारतीय खिलाड़ियों की इस भावना में कमी लाई है। कई खिलाड़ियों का आराम के नाम पर भारत के लिए कभी-कभी खेलने से इंकार करना इसकी सबसे बड़ी बानगी है। जबकि, वही खिलाड़ी आईपीएल का एक मैच भी मिस करने से कतराते हैं। आगे के टूर्नामेंट में हम बेहतर खेलें। इसके लिए हमें दीर्घकालिक योजनाएं बनानी होंगी। हमें दिलीप वेंगसरकर जैसे चयनकर्ताओं से सीख लेनी चाहिए। हमें खिलाड़ियों के नाम से नहीं बल्कि उनके प्रदर्शन से टीम में चयनित करना होगा। अगर हम ऐसा नहीं कर पाते तो हमें सेमीफाइनल को ही फाइनल मानकर खुश हो जाना चाहिए और आईपीएल नामक शो का जश्न मनाते रहना चाहिए।

● **आशीष नेमा**

कृष्णा बाबू ने 2 हीरोइनों के साथ की 95 फिल्में...

सबसे तेज 200 फिल्में करने का रिकॉर्ड भी इन्हीं के नाम

तेलुगु सिनेमा के पहले सुपरस्टार कृष्णा बाबू का 15 नवंबर को हार्ट अटैक से निधन हो गया है। कृष्णा बाबू, तेलुगु सुपरस्टार महेश बाबू के पिता थे। कृष्णा बाबू ने करीब 5 दशक के फिल्मी कैरियर में 350 से ज्यादा फिल्मों में काम कर कई बड़े रिकॉर्ड अपने नाम किए। कई अवार्ड भी उनके नाम हैं। 2009 में उन्हें पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया था।

कृष्णा बाबू के पास सबसे तेज 200 फिल्में करने का रिकॉर्ड है, साथ ही एक ही एक्ट्रेस के साथ 48 फिल्मों में काम करने का रिकॉर्ड भी इन्हीं के नाम है। ये रिकॉर्ड कृष्णा ने अपनी दूसरी पत्नी विजया के साथ बनाया है। वहीं, जया प्रदा के साथ भी उन्होंने 47 फिल्मों में काम किया। इस तरह 95 फिल्मों में उनकी सिर्फ दो ही हीरोइंस रहीं। कृष्णा ने अपने कैरियर की शुरुआत 1961 में मामूली रोल निभाकर की थी, लेकिन महज 4 सालों में ही ये तेलुगु स्टार बनकर उभरे। कैरियर में एक समय ऐसा भी रहा जब 1975 में इनकी बैक-टु-बैक 15 फिल्में फ्लॉप हुईं। इन्होंने हार नहीं मानी और अगले ही साल कई हिट फिल्में देकर वापसी की। ये साल 1998 में सांसद भी रह चुके हैं।

1965 की फिल्म थेने मनासुलु में मिला लीड रोल... *कृष्णा बाबू का असली नाम घटामनेनी शिवा रामा कृष्णा मूर्ति है। इनका जन्म 31 मई 1943 में आंध्रप्रदेश के बुरीपालेम, गुंटूर जिले में हुआ था। इनके पिता घटामनेनी राघवा चौधरी एक किसान थे। अभिनय में रुचि होने के कारण कृष्णा ने 18 साल की उम्र में मामूली रोल से तेलुगु सिनेमा में कदम रखा। इनकी पहली फिल्म साल 1961 की कुला गोथरालू रही। चंद और फिल्मों में छोटे-मोटे रोल करने के बाद कृष्णा को साल 1965 की फिल्म थेने मनासुलु में लीड रोल मिला। लगातार हिट फिल्में देते हुए ये स्टार बनकर उभरे। इन्होंने एनटी रामा राव और अक्किनैनी नागेश्वर राव जैसे कई बड़े सितारों के साथ भी काम किया। 1970 तक कृष्णा बाबू एक स्टार बन चुके थे।*

मैंने प्यार किया के स्क्रीन टेस्ट में रिजेक्ट कर दिए गए थे सलमान

सूरज बड़जात्या ने हाल ही में खुलासा किया है कि सलमान खान को शुरुआती समय में मैंने प्यार किया के स्क्रीन टेस्ट में रिजेक्ट कर दिया गया था। हालांकि छह महीने के अंदर उन्हें दोबारा फिल्म के लिए कास्ट कर लिया गया था। सूरज बड़जात्या का ये भी कहना है कि शुरुआती दौर में कोई भी एक्टर उनकी प्रोडक्शन कंपनी राजश्री के साथ काम नहीं करना चाहता था क्योंकि राजश्री प्रोडक्शन उस वक्त काफी घाटे में चल रही थी।

सूरज बड़जात्या ने हाल ही में अपने पुराने दिनों को याद करते हुए कहा- मैंने 21 साल की उम्र में मैंने प्यार किया की स्क्रीप्ट लिखनी शुरू की लेकिन उस स्क्रीप्ट को बाद में रिजेक्ट कर दिया गया। नई स्क्रीप्ट लिखने में मुझे दो साल का समय लग गया। हम आर्थिक रूप से थोड़े तंगहाली में थे क्योंकि राजश्री की पिछली कुछ फिल्में फ्लॉप हो गई थीं। कोई भी एक्टर उस समय पर हमारे साथ काम नहीं करना चाहता था, फिर हमारी नजर उस एक्टर पर पड़ी जिसको हमने उसके पहले स्क्रीन्स टेस्ट में रिजेक्ट कर दिया था। वैसे उस यंग एक्टर के अंदर कुछ अलग बात थी। पांच महीने बाद, हमने उसे बोर्ड पर ले लिया। वह शख्स कोई और नहीं बल्कि सलमान खान थे।

स्ट्रगल के दिनों में स्किन कलर को लेकर हुई थी मिथुन की डिसरिस्पेक्ट

सुपरस्टार मिथुन चक्रवर्ती ने हाल ही में अपने स्ट्रगल के दिनों को याद किया। मिथुन ने बताया कि उनके स्किन कलर के लिए कई बार उनका अपमान किया गया। साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि वो नहीं चाहते हैं कि कभी भी उनकी बायोपिक बनाई जाए क्योंकि जो कुछ भी उन्होंने मानसिक रूप से सहा है वो नहीं चाहते कि कोई और उससे गुजरे।

मिथुन ने कहा, हर किसी ने मुश्किल के दिनों में स्ट्रगल देखा है, लेकिन मुझे हमेशा अपने स्किन कलर के लिए बुलाया जाता था। मेरी स्किन के कलर के कारण कई सालों से मेरी डिसरिस्पेक्ट की गई। मैंने ऐसे भी दिन देखे हैं, जब मुझे खाली पेट सोना पड़ता था, और मैं खुद सोने के लिए रोता था। वास्तव में वो ऐसे दिन थे जब मुझे सोचना पड़ता था कि मैं अगले टाइम पर क्या खाऊंगा और मैं कहां सोने जाऊंगा। मिथुन ने आगे कहा, यहां तक कि मैं बहुत दिनों तक फुटपाथ पर सोया हूं। मैं कभी नहीं चाहता कि लाइफ में मैंने जो कुछ सहा है, उससे कोई भी गुजरे। और यही एकमात्र कारण है कि मैं नहीं चाहता कि मेरी बायोपिक बनाई जाए। मेरी स्टोरी कभी किसी को इंस्पायर नहीं करेगी, ये उन्हें तोड़ देगी और लोगों को उनके सपनों को हासिल करने से डिस्करेज करेगी।

एक दिन का बादशाह

अजी उठिए, सात बज गए, और कितनी देर तक सोएंगे? शहद टपकती आवाज मेरे कानों में पड़ी तो मैं हड़बड़ा कर उठ गया। आखें मलते हुए मैंने मुआयना किया कि मैं अपने ही घर में तो हूं न।

जब यकीन हो गया तब मैंने उन्हें गौर से देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सामने खड़ी भारी-भरकम कन्या मेरी श्रीमती जी ही हैं या कोई और। नाक-नक्श और चौड़ाई से तो बिल्कुल वही लग रही थी, फिर इतनी मीठी आवाज किधर से आई!

अरे, घूर-घूर कर क्या देख रहे हो। मुझे कभी देखा नहीं है क्या।

हां हां, बोलो क्या करना है- मैंने लगभग हकलाते हुए कहा। वैसे मैंने तो सोचा था कि आज छुट्टी का दिन है तो थोड़ी देर तक सोने का मजा लूंगा। लेकिन पत्नी जी के आदेश को ठुकराने की हिम्मत जो नहीं थी। और वैसे भी घर की साफ-सफाई का काम मैं रोज सुबह-सुबह ही कर दिया करता था। मैं आदतन रोज की भांति झाड़ू-पोछा करने के लिए बढ़ा, तभी पत्नी जी ने प्यार से कहा- करना कुछ नहीं है, आप जल्दी से फ्रेश हो लो। तब तक मैं आपके लिए चाय बनाती हूं।

अप्रत्याशित रूप से पत्नी जी का इतना प्यार भरा व्यवहार देखकर मैं सकते में आ गया। समझ में नहीं आ रहा था कि उनके इस व्यवहार पर मैं क्या प्रतिक्रिया दूं। किसी अनहोनी की आशंका हो रही थी।

मैं अवाक होकर सूरज की दिशा देखने लगा। आज भी तो सूरज पूरब में ही उगा था... फिर ये उल्टी गंगा कैसे बह रही थी।

अज्ञात भय का स्मरण करते हुए मैंने मन ही मन ईश्वर का ध्यान किया और हे ईश्वर, मेरी रक्षा करना बुदबुदाते हुए मैं फ्रेश होने चला गया। वापस आया तो चाय तैयार मिली साथ में नमकीन वगैरह भी। और दिन जब तक मैं पूरे घर की साफ-सफाई नहीं कर लेता था तब तक चाय तो दूर, पानी भी नहीं मिलता था। इतने व्यापक परिवर्तन का राज क्या हो सकता है, इसी उधेड़बुन में मैं पड़ा था कि उन्होंने फिर उसी प्यार से कहा- आप अपनी रचनाएं लिखना चाहो तो लिखो या बाहर अपने दोस्तों से मिल लो।

मैंने सोचा कि दहशत के इस माहौल में रचनाओं का सृजन क्या खाक होगा। सो मैंने बाहर ही जाने का तय किया। मैं भी इस अप्रत्याशित आजादी का हर पल खुशी-खुशी जी लेना चाहता था। दोस्तों के बीच पहुंचा तो वे भी आश्चर्यचकित होकर मुझे घूरने लगे। एक ने कहा कि बहुत जल्दी घर के काम निपटा दिए भाई। दूसरे ने तो यहां तक कह दिया कि आज भाभीजी ने बहुत जल्दी छोड़ दिया होगा। और इसी तरह हंसी-मजाक की बातें होती रही।

दोस्तों के साथ जी भर कर गप्पबाजी करने के बाद दोपहर तक घर लौटकर आया तो खाना तैयार मिला। खाना खाकर बिस्तर पर लेटा तो आंख लग गई। शाम को उठा तो चाय पीकर फिर बाहर घूम आने की छूट मिल गई। साथ में जल्दी वापस आने की हिदायत भी दी गई।

घूमघाम कर जब मैं घर लौटा तो देखा कि श्रीमती जी सोलहो श्रृंगार से सजी बिल्कुल नई-नवेली दुल्हन सी लग रही थी। सुर्ख लाल जोड़ा, गले में हार, माथे पर टीका, हाथों में मेहंदी, पांव में महावर... मतलब ऊपर से नीचे तक भारतीय संस्कृति की प्रतिमूर्ति लग रही थी। ऐसे में भला कौन पति होगा जो अपनी पत्नी पर रीझ न जाए। पिछले दिनों की उनकी लेडी तानाशाह वाली छवि गायब हो चुकी थी। एकदम सभ्य, सुसंस्कृत और पतिव्रता हिन्दू नारी लग रही थी।

मुझे देखते ही बोली- जल्दी तैयार होकर छत पर आ जाओ।

मैं आज्ञाकारी बालक की तरह उनके पीछे-पीछे छत पर पहुंचा। जब उनकी गतिविधियां शुरू हुई तब मुझे समझ आया कि अरे, आज तो करवा चौथ का व्रत है और यह सारा प्यार करवा चौथ वाला था। खामख्वाह दिनभर मैं अज्ञात भय की आशंका से घबराता रहा।

आसमान में चमक रहे चांद को उन्होंने अर्घ्य दिया, पूजा-अर्चना की और फिर छलनी से मुझे और चांद को देखा। मेरी आरती उतारी, चरण स्पर्श किया। मैंने भी अपने हक में ही उन्हें अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद देकर पानी पिलाया और व्रत का समापन कराया। अब सारा मामला समझ में आ गया था। मैं खुश था कि करवा चौथ के कारण एक दिन के लिए ही सही, बादशाहियत का सुख तो मिला। अगले साल करवा चौथ तक पत्नी-व्रत का ईमानदारी पूर्वक पालन करने के लिए मैं पूरी तरह रिचार्ज हो चुका था।

● **विनोद प्रसाद**

SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

D-10™ Hemoglobin Testing System

For HbA$_{1c}$, HbA$_2$ and HbF

Flexible
to solve more testing needs

Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing

Easy
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA$_{1c}$ or HbA$_2$/F/A$_{1c}$ testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

Add:- C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

स्वच्छ सर्वेक्षण 2022

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

अब स्वच्छता में भी मध्यप्रदेश नम्बर 1

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का मार्गदर्शन

मध्यप्रदेश सरकार के प्रयास

और

आपका सहयोग

धन्यवाद मध्यप्रदेश

- देश में लगातार छठवीं बार नंबर वन स्वच्छ शहर इंदौर
- 85 प्रतिशत (323) नगरीय निकाय ओडीएफ++ से प्रमाणित
- स्वच्छता में प्रदेश के 99 शहरों को स्टार रेटिंग से किया गया प्रमाणित
- स्वच्छता में प्रदेश को मिले कुल 16 राष्ट्रीय अवॉर्ड
- 1 लाख से अधिक जनसंख्या के टॉप 100 शहरों में हमारे 30 शहर शामिल
- 1 लाख से कम जनसंख्या के टॉप 100 शहरों में हमारे 19 शहर शामिल

नगरीय विकास एवं आवास विभाग, मध्यप्रदेश

D-19516/22